जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्य-दक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के सन्दर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य-सन्तोष का अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

से

शिक्षाशास्त्र

में

पी-एच. डी

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

दिसम्बर 2005

शोध निर्देशक -
डॉ. अशोक कुमार तरसौलिया
रीडर-शिक्षक शिक्षा विभाग
गांधी महाविद्यालय, उरई

शोधार्थी
ममता स्वर्णकार
एम.एड.

घोषणा पत्र

मैं **ममता स्वर्णकार** यह घोषित करती हूँ कि मैंने अपना शोधकार्य **''जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्यदक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य संतोष का अध्ययन''** डॉ0 अशोक कुमार तरसौलिया के निर्देशन में पूर्ण किया है। यह शोध प्रबन्ध मेरा अपना ही कृत कार्य है। इसमें प्रयुक्त प्रदत्तों का संकलन, गणनायें एवं व्याख्या मेरे स्वयं के द्वारा की गई हैं।

शोधकर्त्री

स्थान : उरई

दिनांक : 29 दिसम्बर 2005

ममता स्वर्णकार

एम.ए., एम.एड.

निर्देशक-प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **ममता स्वर्णकार** ने मेरे निर्देशन में **''जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्यदक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य संतोष का अध्ययन''** विषय पर शोधकार्य सम्पन्न किया है। यह इनका मौलिक कृतकार्य है, जो कि मेरे निरीक्षण एवं निर्देशन में पूरा किया गया है।

निर्देशक

डा0 अशोक कुमार तरसौलिया
रीडर : शिक्षक–शिक्षा विभाग,
गांधी महाविद्यालय, उरई, जालौन

स्थान : उरई

दिनांक 29 दिसम्बर 2005

आभार प्रदर्शन

शोध प्रबन्ध की पूर्णता के लिए जिस किसी से भी मुझे प्रेरणा, सहयोग, पथ प्रदर्शन एवं प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है, उनके प्रति शब्द प्रसून अर्पित करना मैं अपना परम कर्त्तव्य समझती हूँ। यद्यपि कृतज्ञता ज्ञापन मात्र से मैं उनके ऋणों से मुक्त नही हो सकती क्योंकि जीवन में कुछ सार्थक कर सकने की योग्यता एवं क्षमता करने की उत्कण्ठा आकांक्षा ही मनुष्य को अन्य जीवों से पृथक करती है और इस उपलब्धि के लिए ईश कृपा ही एक मात्र जीवन का अवलम्ब है। यह ईश कृपा भी किसी गुरू के निर्देश एवं कृपा के बिना प्राप्त होना सम्भव नहीं है। सत्य ही कहा गया है कि "गुरू देवो भवः" शोध कार्य के लिए जिन्होंने मुझे निर्देशित, सहयोग एवं अपना अमूल्य समय दिया मैं उनका संक्षिप्त परिचय देना उचित समझती हूँ–

सर्वप्रथम मैं अपने उदार ह्रदय, वंदनीय, पूज्यनीय शोध पर्यवेक्षक गुरू डॉ0 अशोक कुमार तरसौलिया, रीडर, शिक्षक शिक्षा विभाग, गांधी महाविद्यालय, उरई की चिरंतन आभारी हूँ जिन्होंने मुझे वात्सल्य से अभिभूत कर मुझे अध्ययन की प्रेरणा दी, उन्हीं का आशीर्वाद व निर्देशन ही शोध कार्य का मूर्तरूप है। शोधकार्य के विषय में उन्होंने जो परामर्श दिये वे न केवल बहुमूल्य सिद्ध हुए बल्कि उन्होंने मेरी विचारशीलता व मननशीलता की गति को तीव्र बना दिया।

विशेष रूप से मैं कार्य के प्रति सजग, सहयोग की भावना प्रदान करने वाले, सम्मानीय सुविज्ञ गुरू डा0 तारेश भाटिया, रीडर मनोविज्ञान विभाग, डी.वी.सी. उरई की अत्यन्त ऋणी हूँ। जिनका मार्ग–दर्शन व सहयोग मेरे साथ रहा और अपना अमूल्य समय निकालकर मेरे लिखित शोध कार्य को मूर्त रूप प्रदान किया।

मैं अपने वंदनीय, परमआदरणीय प्रेरणा के स्रोत गुरू डा0 रामलखन विश्वकर्मा एंव उदार ह्रदया वन्दनीया गुरू डा0 शैलजा गुप्ता की विशेष आभारी हूँ।

जिनका स्नेहिल निर्देशन, आशीर्वाद मुझे सुपथ की प्रेरणा देता रहा, और समय–समय पर इस शोध कार्य को पूरा करने में मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने पूज्य गुरू श्री अशोक कुमार तिवारी 'गणित शिक्षक' की विशेष आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे हर प्रकार से उत्साहित कर कार्य सफलता की प्रेरणा प्रदान की है और मैं उनकी इस कृपा के लिए हार्दिक रूप से अनुग्रहीत हूँ।

विद्यालय से पूर्व विद्याध्ययन की सर्वप्रथम प्रेरणातो अपने परिवार से ही प्राप्त होती है और ईश्वर की कृपा से मुझकों इसका सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। मेरे पूज्य पिताजी श्री मिश्रीलाल स्वर्णकार (हास्यकवि) एवं माता जी श्रीमती शकुन्तला स्वर्णकार की मैं हमेशा ऋणी रहूंगी, जिनका आशीर्वाद, प्रेरणा व सहयोग पग–पग पर मेरे साथ रहा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं को प्राप्त करने में सफल हो संकू। मैं अपने भाई–योगेन्द्र स्वर्णकार और बहिन संगीता स्वर्णकार के प्रति हमेशा ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे पूर्ण सहयोग दिया और समय–समय पर कार्य करवाने में पूरी मदद की।

मैं विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एंव शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ कि जिन्होंने आंकड़े एकत्रित करने तथा अन्य उपयोगी कार्यों में अपना विशेष सहयोग प्रदान किया। जिससे इस शोधकार्य को पूर्ण किया।

इसके अतिरिक्त मैं अपनी सहपाठी डा0 कल्पना श्रीवास्तव व डा0 साधना अवस्थी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मेरे साथ आंकड़े एकत्रित करने में अथक प्रयास किया। समय–समय पर उत्साहित कर कार्य सफलता की प्रेरणा प्रदान की।

अन्ततः शोधकर्त्री शिक्षाविद् लेखकों जिनकी पुस्तकों के अध्ययन से मुझे अपना शोधकार्य पूर्ण करने में सफलता प्राप्त हुई उनकी भी मैं चिर ऋणी रहूंगी। इसके अतिरिक्त मैं अपने स्कूल व कालेजों के समस्त गुरूजनों की आभारी हूँ जिन्होंने सदैव हमारे जीवन की बगिया के पुष्पों को पल्लवित करने के लिए जल का कार्य किया तथा

इस ज्ञानरूपी क्यारी को हरी–भरी करने के लिए हर राह उचित मार्ग प्रदर्शित किया तथा हमारे जीवन में स्वच्छ कोमल तथा शुद्ध गंगा की धारा प्रवाहित की है। इन सभी के लिए में चिरंतन ऋणी रहूंगी।

दिनांक : 29/12/2006

शोधार्थी

ममता स्वर्णकार

एम.ए., ए.एड.

वन्दनीय पूज्यनीय परम श्रद्धेय

''गुरूजनों''

को

सादर-समर्पित

ओऽम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गुंरूर् ब्रह्मा गुरूर् विष्णु गुरूर् देवो महेश्वरः।
गुरूर् साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

विषय अनुक्रम

प्रथम अध्याय 1-75

प्रस्तावना

1 प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन

2 सम्बन्धित परिवर्तियों का विवरण

क) प्राथमिक शिक्षा

ख) शिक्षक दक्षता

ग) शिक्षक कार्य–सन्तोष

घ) विद्यालय वातावरण

3 प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य

4 प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना

5 प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व

द्वितीय अध्याय 76-130

सम्बन्धित अनुसन्धान अध्ययन

i) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित अध्ययन

ii) विद्यालयों के वातावरण से संबंधित अध्ययन

iii) विद्यालयों के वातावरण व शिक्षक दक्षता के मध्य संबन्धों से संबंधित अध्ययन।

iv) विद्यालयों के वातावरण व शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि के मध्य संबंधों से संबंधित अध्ययन।

v) शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि व दक्षता के मध्य सम्बन्धों से संबंधित अध्ययन।

तृतीय अध्याय 131-150

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

i) जनसंख्या

ii) प्रतिदर्श

iii) अनुसन्धान अभिकल्प

iv) प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षणों का विवरण

v) प्रशासन प्रक्रिया

vi) प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

चतुर्थ अध्याय 151-276

प्रदत्त—विश्लेषण तथा विवेचन

भाग—1 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग—2 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग—3 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग—4 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग—5 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य—सन्तोष के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग—6 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग—7 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–8 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–9 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–10 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामींण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–11 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–12 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव

पंचम अध्याय 277-299

संक्षिप्तीकरण

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट–

प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षण

प्राथमिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी

शिक्षक दक्षता परीक्षण

विद्यालय वातावरण मापनी

शिक्षक कार्य–सन्तोष परीक्षण

मूल प्राप्तांक

अध्याय–प्रथम

प्रस्तावना

१. प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन

मानव के द्वारा सभ्यता के विकास की प्रक्रिया पर विचार करने से सामाजिक परिवर्तन करने में शिक्षा सशक्त व महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का मानसिक विकास होता है तथा वह अपने सम्बन्ध में, अपने समाज के सम्बन्ध में, अपने राष्ट्र के सम्बन्ध में और सम्पूर्ण विश्व के सम्बन्ध में चिन्तन करने योग्य बनता है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति समाज की आवश्यकताओं, परिस्थितियों तथा समस्याओं को उचित प्रकार से समझने में असफल रहता है। भारत सरकार द्वारा 1985 में जारी 'शिक्षा की चुनौतीः नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य' में कहा गया है कि ''मानव के इतिहास में शिक्षा मानव समाज के विकास के लिये एक सतत् क्रिया और आधार रही है। मनोवृत्तियों, मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनों को ही क्षमताओं के विकास के माध्यम से शिक्षा लोगों की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिये उन्हें शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है, सामाजिक विकास के लिये प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।''

वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्या शैक्षिक मानकों में आ रही गिरावट है। शिक्षा शास्त्री तथा बुद्धिजीवी वर्ग तथा आम नागरिक शिक्षा के मानकों में आ रही गिरावट के प्रति चिन्तित है। शिक्षा के मानकों से तात्पर्य शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के ज्ञान, अभिव्यक्ति तथा सामाजिक वातावरण उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। विद्यालय के भवन, कक्षों, साज–सज्जा व विद्यालय में उपलब्ध उपकरण ही के द्वारा विद्यालय का वातावरण निर्धारित नहीं होता है, वरन् प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा छात्रों के

उचित व अपेक्षित व्यवहार से विद्यालय का वातावरण प्रभावित होता है। यदि शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग, मित्रता व सहृदयता की भावना होगी तब छात्रों पर भी इसका अनुकूलन प्रभाव पड़ेगा तथा उन छात्रों का व्यवहार भी उसी प्रकार का होगा।

शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि (Job-Satisfaction) विद्यालय व शिक्षा के विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। कार्य–सन्तुष्टि वह स्थिति है जो कि शिक्षक को अपने कार्य के सन्दर्भ में प्राप्त होने वाले आनन्द के मूल्यों का अनुमान देती है। कार्य–सन्तुष्टि व्यक्ति के कार्य के समान विभिन्न पहलुओं जैसे– वेतन, पदोन्नति के अवसर, अधिकारियों एवं सहयोगियों के प्रति दृष्टिकोण आदि के कारण उत्पन्न मानसिक संवेगात्मक स्थिति है। किसी व्यवसाय में सन्तुष्टि एक अति आवश्यक तत्व है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से जितना अधिक सन्तुष्ट होगा उतने ही प्रभावशाली रूप से अपने कार्य को पूरा करेगा। यही बात शिक्षक के व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सत्य है कि यदि एक शिक्षक का अपने शिक्षण व्यवसाय में सन्तुष्टि की भावना दृष्टिगत होगी तब वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह सही प्रकार से कर पायेगा।

इसके साथ ही शिक्षक का स्वयं प्राथमिक शिक्षा के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति है यह तथ्य भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। प्राथमिक–शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था का प्रथम सोपान है। प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना

तैयार की गई है। संविधान में 14 वर्ष तक की आयु के सभी बालकों के लिये निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई। सन् 1990 में सबके लिये शिक्षा विषय पर हुई विश्व सम्मेलन में सभी व्यक्तियों की मूलभूत अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करने पर विशेष ध्यान दिया गया। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिये चलाये जा रहे इन प्रयासों तथा योजनाओं के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति किस प्रकार की है, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकार शिक्षक दक्षता की प्राथमिक स्तर पर विशेष आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षक अपने ज्ञान को अनुभवों से जोड़कर छात्रों के जीवन में निरन्तरता व पूर्णता के दर्शन करने में दक्ष होते हैं ताकि छात्रों का ज्ञान परिपक्व हो सके। साथ में इन शिक्षकों में अपने छात्रों के प्रति कोमल हृदय, दया का भाव व संवेदनशीलता भरी होनी चाहिये ताकि वे विद्यालय के छात्रों से अपने बच्चों जैसा व्यवहार करें। विद्यालय को प्रगति हेतु शिक्षकों में दक्षता का होना परमावश्यक है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अनुसन्धानकर्ता द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण अनुसन्धान समस्या का चयन किया गया–

"जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्य दक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के सन्दर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य–सन्तोष का अध्ययन।"

२. सम्बन्धित परिवर्तियों का विवरण

क) प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है– प्रारम्भिक, मुख्य। इस

प्रकार प्राथमिक शिक्षा का अर्थ हुआ– प्रारम्भिक शिक्षा, मुख्य शिक्षा। प्रारम्भिक शिक्षा इसलिए कि यह बच्चों को प्रारम्भ में दी जाती है और मुख्य शिक्षा इसलिए है कि यह आगे की शिक्षा की नींव होती है। इस प्राथमिक शब्द के पींछे एक भाव और छिपा है और वह यह कि इसके द्वारा बच्चों को शिक्षा प्रक्रिया की प्रथम आवश्यकता सम्प्रेषण के माध्यम से भाषा की शिक्षा दी जाती है और उन्हें सामाजिक जीवन जीने की प्राथमिक क्रियाओं में प्रशिक्षित किया जाता है। परन्तु प्राथमिक शिक्षा बच्चों की किस आयु से किस आयु तक चले अथवा किस कक्षा से किस कक्षा तक चले और इसकी क्या पाठ्यचर्या हो, इस विषय में भिन्न–भिन्न देशों के भिन्न–भिन्न निर्णय हैं।

हमारे देश में वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था परिवारों में होती थी। साफ जाहिर है कि उस काल में इसका कोई सर्वमान्य स्वरूप निश्चित नहीं था। बौद्धकाल में बौद्धों ने अपने मठों एवं विहारों में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था शुरू की। बौद्ध मठों एवं विहारों का संचालन बौद्ध संघों द्वारा होता था, इसलिए इनके द्वारा संचालित प्राथमिक शिक्षा का अपना एक निश्चित स्वरूप था– निश्चित समयावधि थी और निश्चित पाठ्यचर्या थी। पर इस काल में ब्राह्मणों ने भी इनकी टक्कर में प्राथमिक शिक्षा पाठशालाओं की स्थापना की। ये पाठशालायें व्यक्तिगत नियन्त्रण में थी इसलिए इनका कोई निश्चित स्वरूप नहीं था, न निश्चित समयावधि थी और निश्चित पाठ्यचर्या थी। फिर बौद्ध मठों एवं विहारों की प्राथमिक शिक्षा और ब्राह्मणीय पाठशालाओं की प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप में भी बड़ा अन्तर था। तब कहना न होगा कि इस काल में भी प्राथमिक शिक्षा का कोई सर्वमान्य स्वरूप नहीं था। मुस्लिम काल में मुसलमानों ने अपने तरह की

शिक्षा की शुरूआत की, उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के मकतबों का निर्माण किया और इनमें अरबी–फारसी और इस्लाम धर्म की शिक्षा को अनिवार्य किया। इस समय बौद्ध शिक्षा संस्थाएं तो समाप्त प्रायः हो गई थीं परन्तु ब्राह्मणीय शिक्षा दबे पांव निरन्तर चलती रही, और इन दोनों शिक्षा प्रणालियों की प्राथमिक शिक्षा में बड़ा अन्तर था। तभी इस देश में यूरोपीय जातियों का प्रवेश हुआ और उनके साथ ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ। ईसाई मिशनरियों ने इस देश में एक तीसरे प्रकार की प्राथमिक शिक्षा की शुरूआत की। 1854 के घोषणा पत्र में शिक्षा की संरचना को एक नया रूप दिया गया। इसमें कक्षा 1 से 4 अथवा 5 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा गया और इसका एक निश्चित पाठ्यक्रम तैयार किया गया। भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) 1882 ने इस पर अपनी मोहर ठोक दी और एक लम्बे समय तक प्राथमिक शिक्षा का अर्थ प्रथम चार अथवा पांच वर्षीय शिक्षा से लिया जाता रहा।

1937 में प्रान्तों में स्वायत्त शासन स्थापित हुआ। उसी वर्ष गांधीजी ने 'राष्ट्रीय शिक्षा योजना' प्रस्तुत की जिसमें 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने का प्रस्ताव किया। गांधी जी एवं उनके साथियों ने इसके लिए मातृभाषा एवं हस्तकौशल प्रधान पाठ्यचर्या तैयार की और इसका सम्बन्ध जीवन से जोड़ा। बस तभी से हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा से अर्थ कक्षा 1 से 8 तक की आधारभूत शिक्षा से लिया जाने लगा।

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। 26 जनवरी

1950 को हमारे देश में हमारा संविधान लागू हुआ। हमारे संविधान की धारा 45 में यह घोषणा की गई कि संविधान लागू होने के समय से 10 वर्ष की अवधि के अन्दर 14 वर्ष तक के बच्चों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा। इसका आशय कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा से ही है। परन्तु देश के अधिकतर प्रान्तों में कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा प्राथमिक और माध्यमिक दोनों प्रकार के विद्यालयों से जुड़ी हुई है, और मजे की बात यह है कि प्राथमिक विद्यालयों से जुड़ी कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहते है और माध्यमिक विद्यालयों से जुड़ी कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा को निम्न माध्यमिक शिक्षा कहते हैं और माध्यमिक शिक्षा की समयावधि के विषय में भ्रम पैदा होता है। वैसे कोई भ्रम पैदा होना नहीं चाहिए क्योंकि संविधान के निर्देश (Directive) में कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है। फिर अब तो देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 लागू है, 10+2+3 शिक्षा संरचना लागू है और इसकी प्रथम 10 वर्षीय आधारभूत पाठ्यचर्या को तीन भागों में विभाजित किया गया है– कक्षा 1 से 5 तक प्राथमिक, कक्षा 6 से 8 तक उच्च प्राथमिक और कक्षा 9 तथा 10 माध्यमिक और +2 अर्थात् कक्षा 11 तथा 12 को उच्च माध्यमिक शिक्षा कहा गया है। तब स्पष्ट है कि इस समय हमारे देश में 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है। आज पूरे देश के लिए इस प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य निश्चित हैं और इसकी एक आधारभूत पाठ्यचर्या निश्चित है।

प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य–

प्राथमिक शिक्षा बालकों को अपने वातावरण से अनुकूलन करने योग्य बनाती है, उसमें परस्पर सद्भावना व सहयोग की भावना विकसित करती है, उनका शारीरिक व मानसिक विकास करती है, भाषा, कला व संगीत आदि के द्वारा आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करती है, उन्हें आत्मनिर्भर बनती है, उनमें नागरिकता के गुण विकसित करती है तथा उनमें नैतिकता की भावना उत्पन्न करती है। कोठारी आयोग (1964–66) ने अपने प्रतिवेदन में, प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों के सम्बन्ध में लिखा है कि आधुनिक प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को भावी जीवन की परिस्थितियों को सामना करने में समर्थ बनाने के लिए शारीरिक तथा मानसिक प्रशिक्षण देकर उसका इस प्रकार से विकास करना है कि वह वास्तव में एक उपयोगी नागरिक बन सके।

भारतवर्ष में वर्तमान प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य अस्पष्ट प्रतीत होते है। शैक्षिक उद्देश्यों के स्पष्ट निर्धारण के अभाव में शिक्षा प्रणाली को सुचारू ढंग से चलाना यदि असम्भव नहीं है तो अत्यधिक कठिन अवश्य है। सामान्यतः शिक्षा के उद्देश्यों को अति व्यापक रूप में देखा जाता है। व्यापक रूप में लिखे उद्देश्यों का कक्षा में वास्तविक शिक्षण कार्य में लगे अध्यापकों तथा प्रशासकों व पर्यवेक्षकों से प्रायः दूर का ही सम्बन्ध होता है। बालक का सर्वागींण विकास करना राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना, धर्म निरपेक्षता की रक्षा करना, ज्ञान व कौशल को विकसित करना, संस्कृति का संरक्षण करना, जीवकोपार्जन के लिए तैयार करना, सनातन मूल्यों का विकास

करना, जैसे व्यापक उद्देश्य शिक्षा सम्बन्धी सैद्धान्तिक विवेचन में तो उपयोगी होते हैं परन्तु शैक्षिक प्रशासकों, निरीक्षकों, योजनाकारों तथा अध्यापकों के लिए इन उद्देश्यों का तब तक कोई वास्तविक महत्व नहीं है जब तक इन्हें विषयगत व कक्षागत शिक्षण उद्देश्यों के रूप में सुस्पष्ट न किया जाये। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) के द्वारा सन् 1975 में तैयार किये गये दस्तावेज "The Curriculum for the ten year school में प्राथमिक शिक्षा के मुख्य उद्देश्य को निम्नवत् लिखा गया है–

1. अन्य व्यक्तियों से वार्तालाप के लिए प्रथम भाषा (मातृभाषा) का ज्ञान प्रदान करना।
2. व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए जोड़, घटाव, गुणा व भाग की योग्यता प्रदान करना।
3. वैज्ञानिक खोज विधि (Scientific Inquiry Method) को सिखाना तथा विज्ञान व तकनीकी के महत्व को समझना।
4. राष्ट्रीय प्रतीकों (जैसे राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान आदि) तथा प्रजातान्त्रिक विधियों व संस्थाओं के प्रति आदर भाव उत्पन्न करना।
5. भारत की मिली–जुली संस्कृति से परिचय कराना तथा अस्पृश्ता, जातिवाद व साम्प्रदायिकता का विरोध करना सिखाना।
6. मानव श्रम के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
7. सफाई तथा स्वस्थ जीवन की आदतें विकसित करना।

8. अच्छाई तथा सौन्दर्य की अभिरूचि बढ़ाना।

9. अन्य व्यक्तियों के साथ सहयोग करने की भावना विकसित करना।

10. चरित्र तथा व्यक्तित्व के वांछनीय गुण (जैसे पहल करना, नेतृत्व करना, दयालुता, ईमानदारी आदि) का विकास करना।

11. सृजनात्मक क्रियाओं के द्वारा स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करना।

12. स्व—अध्ययन की आदत डालना।

प्राथमिक शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है अतः किसी भी मानव समाज में इसका बड़ा महत्व है, इसकी बड़ी आवश्यकता है। आज प्रायः सभी समाजों में शिक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और विशिष्ट वर्गों में बांटा गया है और इनमें प्रत्येक वर्ग की शिक्षा का अपना महत्व है, प्राथमिक शिक्षा का भी है—

१. प्राथमिक शिक्षा शिक्षा की नींव का पत्थर है—

किसी भी देश में प्राथमिक शिक्षा में बच्चों को सम्प्रेक्षण के माध्यम भाषा का ज्ञान कराया जाता है, उन्हें सामान्य मानव व्यवहार में प्रशिक्षित किया जाता है, उनमें देखने—समझने की शक्ति विकसित की जाती है और उन्हें अध्ययन कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है। ये सब आगे की शिक्षा प्राप्त करने के साधन होते हैं, माध्यम होते हैं। इन्हीं पर आगे की शिक्षा निर्भर करती है, इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा आगे की शिक्षा की नींव होती है।

यदि यह नींव मजबूत होती है तो बच्चों की आगे की शिक्षा सुचारू रूप से चलती है। इसीलिए किसी भी समाज में प्राथमिक शिक्षा का बड़ा महत्व होता है, उसकी बड़ी आवश्यकता होती है

२. प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति निर्माण का आधार है

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण उसके शिशु काल में सर्वाधिक होता है, उसे जो कुछ बनना होता है उसका 3/4 वह शिशु काल में बन जाता है; इस समय जैसी नींव रखी जाती है, बच्चे भविष्य में वैसे ही बनते हैं। प्राथमिक विद्यालयों मे बच्चे अपने–अपने परिवारों के संस्कार लेकर आते हैं, अभी ये संस्कार इतने सुदृढ़ नहीं हो पाते कि उन्हें सही दिशा न दी जा सके। प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों का सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास किया जाता है और मानव व्यवहार में प्रशिक्षित किया जाता है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। इस दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा का बड़ा महत्व होता है, उसकी बड़ी आवश्यकता होती है।

३. प्राथमिक शिक्षा जन शिक्षा है–

आज किसी भी देश में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य एवं निःशुल्क हैं। अनिवार्य का अर्थ है कि कम से कम इतनी शिक्षा तो सभी को प्राप्त करनी है। जो शिक्षा सबके लिए अनिवार्य होती है, उसे ही सामान्य रूप से जन शिक्षा कहते है। तभी तो जो प्रौढ़ इस शिक्षा को अपने बचपन में प्राप्त नहीं कर पाते उन्हें यह प्रौढ़ शिक्षा के रूप में बाद में दी जाती है। यदि अनिवार्यता के नियम का कठोरता से पालन किया जाए तो प्रौढ़ शिक्षा का

रूप ही बदल जाएगा, यह साक्षरता अभियान के स्थान पर सतत् शिक्षा का रूप लेगी, इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा सबकी शिक्षा है। इस दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा का बड़ा महत्व है, उसकी बड़ी आवश्यकता है।

४. प्राथमिक शिक्षा सामान्य जीवन की शिक्षा है–

जब हम यह कहते है कि प्राथमिक शिक्षा जन शिक्षा है, सबके लिए शिक्षा है तो इसके पीछे यह भाव छिपा है कि इसके द्वारा सबको सामान्य जीवन की शिक्षा दी जाती है, उन्हें सामान्य जीवन जीने योग्य बनाया जाता है। आगे की शिक्षा तो हमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए तैयार करती है। इस दृष्टि से भी किसी समाज में प्राथमिक शिक्षा का बड़ा महत्व होता है, इसकी बड़ी आवश्यकता होती है।

५. प्राथमिक शिक्षा भारत के व्यक्तियों की पूर्ण शिक्षा है–

हमारे देश में अभी तक निम्न प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क नही बनाया जा सका है, और जो लक्ष्य सामने है वह भी कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने का है। यह भी देखा गया है कि कक्षा 8 के बाद बहुत कम बच्चे पढ़ते हैं। अधिकांश बच्चों के लिए तो यही प्राथमिक शिक्षा पूर्ण शिक्षा है। इस दृष्टि से भारत में तो प्राथमिक शिक्षा का और भी अधिक महत्व है, उसकी और भी अधिक आवश्यकता है।

भारत में प्राथमिक शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा के इतिहास का अध्ययन सामान्यतः तीन कालों के अन्तर्गत किया जाता है – प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल। प्राचीन काल को सामान्यतः दो उपकालों में विभाजित किया जाता है– वैदिक काल और बौद्धकाल। मध्यकाल को भी सामान्यतः दो उपकालों में विभाजित किया जाता है– पूर्व मध्यकाल और मुगल काल। और आधुनिक काल को सामान्यतः चार उपकालों में विभाजित किया जाता है– ईसाई मिशनरी काल, ईस्ट इण्डिया कम्पनी काल, ब्रिटिस शासन काल और स्वतन्त्र काल।

वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था परिवारों में होती थी। तब यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस काल में यह शिक्षा केवल शिक्षित परिवारों के बच्चों तक सीमित थी और इसका कोई सर्वमान्य स्वरूप निश्चित नहीं था परिणाम यह हुआ कि इस काल में प्राथमिक शिक्षा का समुचित विकास नहीं हो सका।

बौद्ध काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

बौद्ध काल में बौद्ध भिक्षुओं ने अपने मठों एवं विहारों में प्राथमिक एवं उच्च, दोनों स्तरों की शिक्षा की व्यवस्था शुरू की। यह शिक्षा बौद्ध संघो के नियन्त्रण में थी, इसलिए दोनों स्तरों की शिक्षा का स्वरूप निश्चित हुआ, उनके उद्देश्य निश्चित हुए और उनके पाठ्यक्रम निश्चित हुए। बौद्धों ने अपने मठो एंव विहारों में सभी जाति और वर्गों के बच्चों को

प्रवेश देना शुरू किया, परिणामस्वरूप सभी जाति और सभी वर्गों के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के अवसर सुलभ हुए। परन्तु ये बौद्ध मठ एवं विहार देश कें सभी स्थानों पर स्थित नहीं थे, इसलिए इस काल में भी प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ नहीं बनाया जा सका। हां, एक ओर बौद्ध मठों एवं विहारों में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था होने और दूसरी ओर बौद्धों की टक्कर से ब्राह्मणों द्वारा पाठशालाओं की स्थापना होने से प्राथमिक शिक्षा का विकास अवश्य प्रारम्भ हुआ।

पूर्व मुगल काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

1192 में मौहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को परास्त कर भारत में मुस्लिम राज्य की नींव डाली। इस विजय के बाद वह तो स्वदेश लौट गया, परन्तु अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को दिल्ली का शासक बना गया। 1206 में मौहम्मद गौरी की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का बादशाह बन गया और उसने बख्तियार खिलजी को अपना सेनापति बनाया। शिक्षा के क्षेत्र में उसका पहला कदम था बख्तियार खिलजी द्वारा उस समय के विश्वविख्यात बौद्ध विश्वविद्यालय नालन्दा और विक्रमशिला के भवनों को धराशायी करवाना, उनके पुस्तकालयों को जलवाना और उनके शिक्षकों को मरवा डालना। परिणामतः बौद्ध शिक्षा के अन्य क्षेत्र भयवश स्वयं बन्द हो गए। पर ब्राह्मणीय शिक्षा केन्द्र दबे पांव अवश्य चलते रहे। कुतुबद्दीन ऐबक का शिक्षा के क्षेत्र में दूसरा बड़ा कार्य था– स्थान–स्थान पर मस्जिदें बनवाना और उनके साथ प्राथमिक शिक्षा केन्द्र मकतबों का निर्माण एवं संचालन। इन मकतबों में अरबी और फारसी

भाषाओं का अध्ययन और कुरान शरीफ की आयतों को कण्ठस्थ करना अनिवार्य था, परिणामतः हिन्दू जाति के बच्चे इनमें प्रवेश नहीं लेते थे। कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद दिल्ली की गद्दी पर जो भी मुसलमान बादशाह बैठे उन्होंने जगह–जगक मकतब (प्राथमिक शिक्षा केन्द्र) और मदरसे (उच्च शिक्षा केन्द्र) स्थापित करने का कार्य जारी रखा। 1451 में भारत में लोदी वंश का शासन स्थापित हुआ। लोदी वंश के द्वितीय बादशाह सिकन्दर लोदी ने आगरा को अपनी राजधानी बनाया और आगरा, मथुरा तथा कुछ अन्य स्थानों पर अनेक मकतब और मदरसों का निर्माण कराया। सिकन्दर लोदी उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था, उसके शासन काल में हिन्दुओं के साथ अच्छा व्यवहार किया गया, परिणाम मकतबों के साथ–साथ ब्राह्मणीय पाठशालाओं की संख्या भी बढ़ी और हिन्दू बच्चों ने मकतबों और पाठशालाओं में प्रवेश लेना शुरू किया और प्राथमिक शिक्षा के विकास में कुछ गति आई।

मुगलकाल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

1556 में लोदी वंश के अन्तिम बादशाह इब्राहिम लोदी को बाबर ने पराजित कर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली। बाबर अरबी, फारसी और तुर्की भाषाओं का विद्वान था। उसने अपने शासन काल में यहाँ अनेक मकतबों और मदरसों का निर्माण कराया। बाबर के उत्तराधिकारी हुमायुँ ने भी शिक्षा के प्रसार में रूचि ली। हुमायूँ के बाद उसका बेटा अकबर गद्छी पर बैठा। अकबर स्वयं पढ़ा–लिखा नहीं था, परन्तु वह कला और विद्या का बड़ा प्रेमी था, साथ ही वह बहुत उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसने अपने शासन काल में आगरा, फतेहपुर सीकरी और अन्य स्थानों पर

अनेक मकतब और मदरसों का निर्माण कराया और इनमें भारतीय भाषाओं की शिक्षा की भी व्यवस्था की और इनमें हिन्दू–मुसलमान दोनों के बच्चों को समान स्थान दिया। साथ ही उसने हिन्दू शिक्षण संस्थाओं को भी आर्थिक सहायता देना शुरू किया। परिणामतः उसके शासन काल में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक विकास हुआ, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी। अकबर के बाद उसका बेटा जहाँगीर गद्दीर पर बैठा। उसने पुराने मकतब और मदरसों की मरम्मत कराई और उनकी आर्थिक सहायता जारी रखी। जहाँगीर के उत्तराधि िकारी शाहजहाँ ने भी इस कार्य को जारी रखा। पर कुछ वर्ष बाद ही शाहजहाँ को गद्दी से हटाकर उसका बेटा औरंगजेब बादशाह बन बैठा। औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था, हिन्दुओं के प्रति उसका व्यवहार बहुत द्वेषपूर्ण था। उसने गद्दी पर बैठते ही हिन्दू शिक्षण संस्थाओं को नष्ट करवा डाला और उनके स्थान पर मुस्लिम शिक्षण संस्थाएं–मकतब और मदरसे स्थापित किए। यद्यपि उसने अपने शासन काल में किसी भी मुसलमान बादशाह से अधिक मकतब और मदरसों का निर्माण कराया, परन्तु हिन्दू शिक्षण संस्थाओं पर कहर ढाने और हिन्दुओं के साथ दुर्व्यवहार करने के कारण उसके शासन काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास अवरूद्ध हो गया। औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।

ईसाई मिशनरी काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

भारत में आधुनिक प्राथमिक शिक्षा का श्रीगणेश करने का श्रेय ईसाई मिशनरियों को हैं। वैसे तो यह कार्य 16 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों द्वारा शुरू कर दिया गया था और उसके बाद

डच, फ्रांसीसी और डेन ईसाई मिशनरियों ने इसके विकास में अपना बड़ा योगदान दिया, परन्तु इस कार्य को सबसे अधिक गति 17 वी. शताब्दी के प्रारम्भ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाजों के साथ आने वाली, ईसाई मिशनरियों ने दी। उन्होंने 1613 से 1757 के 144 वर्ष के इस लम्बे काल में भारत में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में बड़ा योगदान किया। उन्होंने स्थान–स्थान पर ईसाई मिशनरी प्राथमिक स्कूल खोले और इनमें क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था शुरू की। इन विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा और ईसाई धर्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी। 1698 में ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को एक आदेश जारी किया जिसमें उसे भारत में शिक्षा के प्रचार एंव प्रसार की आज्ञा प्रदान की और साथ ही इस पर व्यय करने का अधिकार दिया। परिणामतः कम्पनी ने एक ओर ईसाई मिशनरियों को शिक्षा व्यवस्था करने के लिए आर्थिक सहायता देनी शुरू की और दूसरी ओर स्वयं अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोलने प्रारम्भ किए। इनकी टक्कर में भारतीयों ने भी जगह–जगह पाठशालाएं और मकतब स्थापित किये। परन्तु ये ईसाइयों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोक नहीं पाए ओर भारत में अंग्रेजी प्रणाली की शिक्षा फूलने–फलने लगी।

कम्पनी शासन काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

1757 के प्लासी युद्ध और 1764 के बक्सर युद्ध की विजय के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी बंगाल, बिहार और मगध प्रान्त की शासक बन गई, इसके हौंसले बुलन्द हो गए। 1773 में इंगलैण्ड की सरकार ने रेग्युलेटिंग एक्ट पास किया और उसके तहत वारेन हेस्टिंग को भारत का

गवर्नर जनरल नियुक्त किया और इस प्रकार यहाँ एक नए युग की शुरूआत हुई। 1793 में ब्रिटेन की पार्लियामैन्ट ने कम्पनी को नया आज्ञापत्र (Charter) प्रसारित किया। यूँ इस आज्ञा पत्र में कम्पनी को अपने अधीन भारतीयों की शिक्षा व्यवस्था करने का कोई आदेश नहीं दिया गया था, परन्तु फिर भी उसने यहाँ अंग्रेजी प्रणाली के विद्यालय और महाविद्यालयों की स्थापना की। 1807 में लार्ड मिन्टो भारत के नए गवर्नर जनरल नियुक्त हुए। उन्होंने भारतीय पद्धति के विद्यालयों की वकालत की, परन्तु ब्रिटेन संसद में विरोध होने के कारण वे ऐसा नहीं कर सके। 1813 में ब्रिटेन की पार्लियामैन्ट ने कम्पनी को नया आज्ञापत्र प्रसारित किया। इस आज्ञा पत्र में कम्पनी को पहली बार शिक्षा के सम्बन्ध में तीन ओदश दिये गए। पहला यह कि किसी भी देश की ईसाई मिशनरियों को भारत आने और धर्म एवं शिक्षा के प्रचार करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाए। दूसरा यह कि कम्पनी शासित क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करना कम्पनी का उत्तरदायित्व है। और तीसरा यह कि कम्पनी इस पर प्रतिवर्ष एक लाख रूपया व्यय करे। परन्तु प्राच्य–पाश्चात्य के घेरे में कम्पनी कोई ठोस कार्य नहीं कर सकी। हाँ, वह एक ईसाई मिशनयिों की सहायता अवश्य देती रही जिससे इस बीच ईसाई मिशनरियों ने प्राथमिक शिक्षा का प्रसार किया। उस समय राजा राममोहन राय भारत कें अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे। उन्होंने 1819 में 'कलकत्ता विद्यालय समाज' की स्थापना की जिसने कलकत्ता क्षेत्र में अनेक प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की।

1833 में कम्पनी को ब्रिटेन सरकार का नया आज्ञा पत्र प्राप्त

हुआ। इस आज्ञा पत्र में एक लाख रूपया प्रतिवर्ष की धनराशि को बढ़ाकर 10 लाख रूपया प्रतिवर्ष कर दिया गया। पर अब भी प्राच्य–पाश्चात्य विवाद आड़े आ रहा था। इसका हल 1835 में लॉर्ड मैकॉले ने किया। उसके तर्क से तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक सहमत हुए और भारत में अंग्रेजी माध्यम की अंग्रेजी प्रणाली की शिक्षा का विकास प्रारम्भ हुआ। 1853 में ब्रिटेनी सरकार को कम्पनी को नया आज्ञा पत्र जारी करना था। यह उसने 1854 में जारी किया जिसकी घोषणा कम्पनी के तत्कालीन चैयरमैन चार्ल्स बुड ने की। इस घोषणा पत्र में पहली बार सर्वसाधारण की शिक्षा की व्यवस्था करना कम्पनी का उत्तरदायित्व स्वीकार किया गया। इस आज्ञा पत्र के अनुसार, भारत में क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेजी के माध्यम से चलने वाले सभी स्कूलों को सामान्य शर्तें पूरी करने का आर्थिक अनुदान देना शुरू किया गया। इससे प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में कुछ तेजी आई।

ब्रिटिश शासन काल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

1857 में भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति का दमन करने के बाद 1858 में यहाँ सीधे ब्रिटेन की सरकार का शासन स्थापित हो गया। लार्ड कैनिंग यहाँ के प्रथम गवर्नर जनरल एवं वायसराय नियुक्त हुए। 1859 में सरकर ने प्राथमिक शिक्षा कर लगाया और इससे प्राप्त धनराशि से प्राथमिक शिक्षा के विकास का प्रयत्न शुरू किया, परन्तु इसमें उसे कोई विशेष सफलता नहीं मिली। 1882 में उसने भारतीय शिक्षा के सम्बन्ध में सुझाव देने के लिए भारतीय शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) की नियुक्ति की। इसकी सिफारिशों के आधार पर प्राथमिक शिक्षा का भार स्थानीय निकायों को सौंप दिया गया। इन स्थानीय निकायों ने प्राथमिक

शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयत्न शुरू किए। परिणाम स्वरूप प्राथमिक शिक्षा में विकास शुरू हुआ। 1881–82 में भारत में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 82,916 थी और इनमें पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या 20,61,541 थी जो 1901–02 में बढ़कर क्रमशः 93604 और 30,76,671 हो गई। पर इन स्थानीय निकायों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसलिए ये भी प्राथमिक शिक्षा को जन शिक्षा का रूप नहीं दे सके।

इस बीच देश में राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर व्याप्त हो गई। राष्ट्रीय नेताओं ने अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की मांग की। इस सन्दर्भ में तत्कालीन बड़ौदा नरेश सियाजीराव गायकवाड़ का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने 1892 में 9 ग्रामों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा योजना लागू की। इस कार्य में उन्हें पूरी सफलता मिली, परिणामतः 1906 में उन्होंने एक अधिनियम द्वारा अपने पूरे राज्य में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया। 1910 में गोपालकृष्ण गोखले ने केन्द्रीय धारा सभा में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में एक प्रस्ताव रखा। सरकार ने प्रस्ताव तो स्वीकार नहीं किया, परन्तु उसके लिए प्रयत्न करने का आश्वासन अवश्य दिया। जब सरकार ने इस ओर कोई कदम नहीं उठाया तो मार्च 1911 में गोखले ने इसे केन्द्रीय धारा सभा में विधेयक के रूप में प्रस्तुत किया। यह विधेयक भी पास नहीं हुआ, परन्तु इससे देश में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य करने हेतु एक अभियान शुरू अवश्य हो गई। सरकार ने 1913 में शिक्षा सम्बन्धी नए प्रस्ताव नीति की घोषणा की । इसके तहत 1920 तक 11 में से 7 प्रान्तों (बम्बई, पंजाब, संयुक्त प्रान्त, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और मद्रास) में अनिवार्य

प्राथमिक शिक्षा अधिनियम पास किए गए और प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में बृद्धि की गई। परिणामस्वरूप 1921–22 में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या बढ़कर 1,05,017 हो गई और इनमें पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़कर 61,09,752 हो गई। पर इतनी वृद्धि होने के बाद भी उस समय 6–11 आयु वर्ग के केवल 25 प्रतिशत बच्चे ही प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उसी बीच 1921 में प्रान्तीय सरकारों में भारतीयों का प्रतिनिधित्व हुआ, उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए कुछ ठोस कदम उठाए। परिणामस्वरूप 1936–37 में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या बढ़कर 1,12,244 हो गई और इनमें पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़कर 1,02,24,288 हो गई।

1937 में हमारे देश में प्रान्तों में स्वसरकारों का गठन हुआ और 11 से 7 प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्री मण्डल बने। उसी वर्ष महात्मा गांधी ने वर्धा शिक्षा सम्मेलन में राष्ट्रीय शिक्षा योजना (बेसिक शिक्षा) प्रस्तुत की। कई प्रान्तीय सरकारों ने इस योजना को उसी समय लागू कर दिया। पर तभी 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया और इससे सभी विकास कार्यों में बाधा आई, प्राथमिक शिक्षा के विकास में भी। युद्ध समाप्ति के बाद सरकार ने सर सार्जेन्ट को युद्धोत्तर भारत के लिए शिक्षा योजना तैयार करने का भार सौंपा। उन्होंने यह योजना 1944 में प्रस्तुत की। यह एक दीर्घकालीन (40 वर्षीय) योजना थी। सरकार ने इसे कम समय में पूरा करने का निर्णय लिया और कार्य शुरू किया। परिणामस्वरूप हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा का भी विकास शुरू हुआ। 1946–47 में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या बढ़कर 1,34,866 हो गई और उनमें पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या बढ़कर

1,05,25,943 हो गई। आंकड़े यह भी बताते हैं कि जब (1613 में) अंग्रेज भारत में आए थे, यहाँ केवल 6 प्रतिशत लोग साक्षर थे और जब (1947 में) वे यहाँ से गए यहाँ 14 प्रतिशत लोग साक्षर थे।

स्वतन्त्र भारत में प्राथमिक शिक्षा का विकास

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। तब से अब तक के समय को स्वतन्त्र काल कहते है। 26 जनवरी 1950 से हमारे देश में हमारा अपना संविधान लागू हुआ। प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में इसकी 45वीं धारा में स्पष्ट निर्देश (Directive) हैं कि– ''राज्य इस संविधान के लागू होने के समय से दस वर्ष के अन्दर 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करेगा।'' और बस तभी से हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने की ओर ठोस कदम उठाए गए, यह बात दूसरी है कि उस लक्ष्य को हम 10 वर्षों के अन्दर तो क्या आज 55 वर्ष बाद भी प्राप्त नहीं कर सके हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति में अनेक बाधाएं रही है जिनमें मुख्य हैं– सामाजिक पिछड़ापन, धनाभाव, बढ़ती हुई जनसंख्या और ईमानदारी एवं कर्त्तव्यनिष्ठा की कमी।

1951 से हमारे देश में सभी विकास कार्य योजनाबद्ध तरीके से शुरू किए गए। 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–56) शुरू हुई। इस योजना में शिक्षा पर 153 करोड़ रूपये व्यय किए गए जिनमें से 85 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा के विकास एवं उसके उन्नयन पर व्यय किए गए। दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956–61) में शिक्षा पर 273 करोड़ रूपये व्यय किए गए जिनमें 95 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा पर व्यय किए गए।

इस योजना के दौरान 1957 में केन्द्र में 'अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षा परिषद' (AICEE) का गठन किया गया और इसे प्राथमिक शिक्षा के प्रसार एवं उन्नयन सम्बन्ध में सुझाव देने का कार्य सौंपा गया। इस परिषद ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए, परिणामस्वरूप उसके प्रसार में तेजी आई। तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961–66) में शिक्षा पर 589 करोड़ रूपये व्यय किए गए, जिनमें से 201 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा पर व्यय किए गए। परिणामतः इन योजनाओं के दौरान प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक, दोनों प्रकार के विद्यालयों और उनमें पढ़ने वाले बच्चों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई।

इसी बीच 1966 में कोठारी कमीशन की रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। इस कमीशन ने शैक्षिक अवसरों की समानता पर विशेष बल दिया और सरकार का ध्यान पिछड़े वर्ग, अनुसूचित वर्ग, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों और कबीलों के बच्चों की शिक्षा की ओर आकर्षित किया। साथ ही प्राथमिक स्तर पर होने वाले अपव्यय एव अवरोधन को रोकने के लिए सुझाव दिए। इसके आधार पर शिक्षा नीति 1968 की घोषणा की गई। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना (1969–74) में शिक्षा पर कुल 786 करोड़ रूपये व्यय किए गए जिनमे से 239 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा के विकास पर व्यय किए गए। इसके बाद पांचवी पंचवर्षीय योजना (1974–79) में शिक्षा पर कुल 912 करोड़ व्यय किए गए जिनमें 317 करोड़ रूपए प्राथमिक शिक्षा के विकास पर व्यय किए गए। परिणामतः इन दोनों योजनाओं के दौरान प्राथमिक शिक्षा की सुविधाओं में सन्तोषजनक विस्तार हुआ। पांचवी योजना के अन्तिम वर्ष 1979 में निरौपचारिक शिक्षा शुरू की गई। छठी पंचवर्षीय

योजना (1980–85) में शिक्षा पर कुल 2530 करोड़ रूपये व्यय किए गए जिनमें से 836 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा पर व्यय किए गए। इस योजना के अन्तिम काल में उन बच्चों के लिए जो किसी कारण औपचारिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, निरौपचारिक शिक्षा (Informal Education) का विस्तार किया गया। आज देश में लगभग 3 लाख बच्चे इस योजना का लाभ उठा रहे हैं। सातवी पंचवर्षीय योजना (1985–90) में शिक्षा पर कुल 7633 करोड़ रूपये व्यय किए गए और इनमें से 2849 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा के विकास पर व्यय किए गए। इससे प्राथमिक शिक्षा का सन्तोषजनक प्रसार हुआ परन्तु देश की बढ़ती हुई जनसंख्या की मांग की पूर्ति की दृष्टि से यह सन्तोषजनक नहीं था। इसी बीच 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP, 1986) की घोषणा हुई। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार और उन्नयन, दोनों पर बल दिया गया। साथ ही इस स्तर पर अपव्यय एवं अवरोधन रोकने के उपाय करने पर भी बल दिया गया। इस दौरान प्राथमिक विद्यालयों की दशा सुधारने के लिए 1987–88 में 'ब्लैक बोर्ड योजना' शुरू की गई। इसके अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों के भवन बनवाने शुरू किए गए, उनमें अध्यापक नियुक्त करने शुरू किए गए और उनमें आवश्यक सामग्री भेजनी शुरू की गई।

आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992–97) में शिक्षा पर कुल 19600 करोड़ रूपये व्यय किए गए जिनमें से 9201 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा पर व्यय किए गए। इस योजना के दौरान 1994 में जिला प्राथमिक शिक्षा प्रोग्राम शुरू किया गया। इसने जिले स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के प्रसार एवं उन्नयन में बड़ा सहयोग दिया। इस योजना के दौरान 23 हजार नए प्राथमिक और

29 हजार नए उच्च प्राथमिक स्कूल खोले गए। साथ ही ब्लैक बोर्ड योजना में 5.23 लाख प्राथमिक स्कूलों को शिक्षण अध्ययन सामग्री दी गई, 1.47 लाख स्कूलों में दूसरे शिक्षक की नियुक्ति की गई और स्कूलों में 1.74 लाख कमरे बनवाये गए। साथ ही 47000 उच्च प्राथमिक स्कूलों को शिक्षण अधिगम सामग्री क्रय करने के लिए 40–40 हजार रूपये दिए गए और इस स्तर पर 33600 उच्च प्राथमिक शिक्षण नियुक्त किए गए।

मानव संसाधन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 1997–98 के अनुसार 1997–98 में देश में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 6,10,763 और उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 1,85,506 और कुल मिलाकर 7,96,269 थी जिनमें 14,82,69000 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत थे।

इस समय नवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) चल रही है। इस योजना में शिक्षा के लिए 20381.6 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है, जिनमें से 1184.4 करोड़ रूपये प्राथमिक शिक्षा के लिए रखे गए हैं। इस योजना में ब्लैक बोर्ड योजना चालू है, आशा है 2002 तक 75 प्रतिशत प्राथमिक स्कूलों को इस योजना का लाभ पहुँचाया जा सकेगा और साथ ही सर्वशिक्षा अभियान चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य 2003 तक प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना है। आशा है 2001 में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्कूलों की संख्या बढ़कर लगभग 8 लाख हो जाएगी और इनमें पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या 16 करोड़ हो जाएगी। आंकड़े यह बताते हैं कि जब 1947 में देश स्वतन्त्र हुआ उस समय देश में केवल 14 प्रतिशत लोग साक्षर थे, 2000 में यह प्रतिशत बढ़कर 64 प्रतिशत हो गया जो 2001 में 65 प्रतिशत होने की सम्भावना है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में तेजी आई और लगभग 3 करोड़ बच्चे प्रति दशक बढ़ते गए। इस तालिका से सहज में ही अनुमान लगाया जा सकता है कि 2000–2001 में हमारे देश में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्कूलों की संख्या 8 लाख से अधिक हो जाएगी और छात्र संख्या 16 करोड़ से अधिक हो जाएगी।

तथ्य यह है कि आज भी 6 से 14 आयु वर्ग के लगभग 2 करोड़ बच्चे प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं। इस सन्दर्भ में दूसरी चिन्ता का विषय यह है कि ब्लैक बोर्ड योजना के बावजूद प्राथमिक विद्यालयों की दशा बड़ी दयनीय है। आज भी लगभग 25 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालयों के भवन बहुत जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हैं, लगभग 10 प्रतिशत स्कूल बिना भवन चल रहे हैं, लगभग 50 प्रतिशत स्कूलों में शौचालय नहीं है, लगभग 2 हजार विद्यालयों में कोई अध्यापक नहीं है, लगभग 25 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय एक अध्यापकीय हैं, लगभग 30 प्रतिशत विद्यालयों में टाट–पट्टी तक नहीं है और लगभग 30 प्रतिशत विद्यालयों में ब्लैक बोर्ड नहीं है। और मजे की बात यह है कि ऐसे भी विद्यालय हैं जिनमें एक भी छात्र नहीं है। तब प्रथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अभी बहुत विकास करना शेष है। साथ ही इसे जनसंख्या वृद्धि के अनुसार गति देना आवश्यक है।

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा स्तर कहा जाता है। बालक की आयु 6 से 7 वर्ष होने पर प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ होती है तथा साधाणतः 14 वर्ष की आयु होने तक चलती है। प्राथमिक शिक्षा स्तर पर बालक किसी शिक्षण संस्था में नियमित ढंग से

विद्याध्ययन प्रारम्भ कर देता है। अतः कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा ाकहा जा सकता है। शिक्षाआयाग (1964–65) ने कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा को निम्न प्राथमिक शिक्षा तथा कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा का उच्च प्राथमिक शिक्षा कहा हैं। निम्न प्राथमिक शिक्षा 6 से 11 वर्ष की आयुवर्ग के बालकों के लिए होती है तथा उच्च प्राथमिक शिक्षा 11 से 14 आयुवर्ग के बच्चों के लिए होती है। यहां यह बात स्मरणीय है कि औपचारिक व विधिवत शैक्षिक ढांचे का प्रथम स्तर प्राथमिक शिक्षा है, पूर्व प्राथमिक शिक्षा नहीं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के कारण अनेक व्यक्ति सोचते हैं, कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा औपचारिकता शिक्षा का प्रथम स्तर है ऐसा सोचना भ्रमपूर्ण है। वास्तव में पूर्व माध्यमिक शिक्षा कोई औपचारिक शिक्षा नहीं है वरन् प्राथमिक शिक्षा के लिए बालक की तैयारी है। पूर्व प्राथमिक स्तर पर बालक केवल सामाजिक व आत्म–अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त करता है। इस स्तर पर औपचारिक शिक्षा के तीन आधारभूत विषयों–लिखना, पढ़ना व गणित ज्ञान का कोई स्थान नहीं है। इसके साथ ही अधिकांश भारतीय बालक पूर्व प्राथमिक शिक्षा से वंचित है। अतः प्राथमिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा व्यवस्था का प्रथम स्तर स्वीकार करना तर्कसगत ही प्रतीत होता है।

अनिवार्य तथा निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा

अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का विचार प्रजातान्त्रिक शासन–व्यवस्था की देन हैं। प्रजातन्त्र को सफलतापूर्वक व प्रभावशाली ढंग से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि सभी नागरिक कुछ न कुछ शिक्षा अवश्य प्राप्त

करें। जिससे वे राजनैतिक क्षेत्रों में प्रबुद्ध नागरिकों के रूप में विचार कर सकें। अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का नारा सबसे पहले 19वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी देशों में दिया गया। स्वीडन ने सबसे पहले सन् 1842 में अपने यहाँ अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की। इसके उपरान्त सन् 1852 में अमेरिका, सन् 1860 में नार्वे, सन् 1870 में इंग्लैण्ड तथा सन् 1905 में हंगरी, पुर्तगाल, स्विटजरलैण्ड आदि ने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया। जहां तक भारत का प्रश्न है, विदेशी शासन के कारण यह कार्य भारत में काफी समय तक नहीं हो पाया। यद्यपि कुछ भारतीय व विदेशी शिक्षाविदों ने इस दिशा में प्रयास किये परन्तु उन्हें सफलता नही मिल सकी। सन् 1882 में दादाभाई नौरोजी ने भारतीय शिक्षा आयोग (हंटर आयोग) के सामने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निःशुल्क बनाने की मांग रखी थी। यद्यपि उनकी इस मांग को स्वीकार नहीं किया गया परन्तु इस मांग ने भारतीयों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता की तरफ सभी का ध्यान आकर्षित किया। प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने की दिशा में प्रथम आंशिक रूप से सफल प्रयास कर इब्राहिम रहीमतुल्ला व सर चिमन लाल सीतलबाड़ का रहा। इन दोनों के प्रयासों के फलस्वरूप बम्बई सरकार ने सन् 1906 में बम्बई में प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता की सम्भावना पर विचार करने के लिए समिति का गठन किया परन्तु दुर्भाग्यवश इस समिति का निर्णय अनिवार्यता के पक्ष में नहीं था।

बड़ौदा के महाराज सियाजीराव गायकबाड़ ने सन् 1893 में प्रयोगात्मक रूप में अमरेली ताल्लुके में तथा बाद में सन् 1906 में अपनी

सम्पूर्ण रियासत में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की। यद्यपि गोपालकृष्ण गोखले द्वारा सन् 1910 में इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में प्रस्तुत अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रस्ताव पारित नहीं हो सका परन्तु इस प्रस्ताव ने जनता का ध्यान शिक्षा की ओर आकर्षित किया। इस श्रृंखला में प्रथम सफल प्रयास श्री बिट्ठल भाई पटेल का रहा। उनके प्रयासों से सन् 1918 में पटेल कानून के नाम से प्रसिद्ध प्रस्ताव पास हुआ जिसमें बम्बई म्यूनिसिपिल क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया था। कुछ समय बाद इसका अनुसरण अन्य राज्यों ने भी किया। सन् 1919 में बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश व उड़ीसा में, सन् 1920 में मध्य प्रदेश व मद्रास में, सन् 1926 में आसाम में, सन् 1930 में बंगाल में, कश्मीर में तथा सन् 1931 में मैसूर में प्राथमिक शिक्षा के अनिवार्य बनाने के अधिनियम बनाये गये। परन्तु इस दिशा में कोई भी विशेष व्यावहारिक कार्य ठोस ढंग से नहीं किया गया। सन् 1937 में जब प्रान्तीय स्वायत्त शासन की स्थापना हुई तब देश में लोकप्रिय मंत्रिमण्डलों ने प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता के लिए विशेष प्रयास किये। परन्तु प्रान्तीय स्वायत्ता की स्थिति मुश्किल से दो वर्ष भी नहीं रह पाई थी कि द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया तथा सभी योजनायें स्थगित हो गईं। इसके कुछ समय बाद ही इन सरकारों ने त्यागपत्र दे दिये। परिणामतः प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता की दिशा में कोई विशेष प्रगति सम्भव न हो सकी।

सन् 1947 में भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। तब स्वतन्त्र भारतके संविधान की धारा 45 में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निःशुल्क

बनाने का संकल्प किया। इसमें कहा गया है कि ''संविधान लागू होने के 10 वर्ष के अन्दर राज्य अपने क्षेत्र के सभी बालकों को 14 वर्ष आयु होने तक निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा।'' इस संवैधानिक उंत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए अनेक राज्यों में प्राथमिक शिक्षा अधि ानियम बनाये गये जिसमें प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निःशुल्क बनाने के कार्यक्रम व नीति निर्धारित की गई है। परन्तु संवैधानिक निर्देश तथा राज्यों द्वारा पारित अधिनियमों के बावजूद भी प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निःशुल्क बनाने का प्रयास पूरा नहीं हो सका है। एक अनुमान के अनुसार 6 से 11 वर्ष आयु वर्ग में लगभग 82 प्रतिशत बालक (लड़को में 98 प्रतिशत व लड़कियों में 65 प्रतिशत) तथा 11 सें 14 वर्ष आयु वर्ग में लगभग 47 प्रतिशत बालक (लड़कों में 62 प्रतिशत व लड़कियों में 32 प्रतिशत) शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। स्पष्ट है कि 14 वर्ष तक के बालकों को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का संवैधानिक निर्देश अभी काफी दूर है। कोठारी आयोग ने इस कार्य को पूरा हो पाने के लिए आवश्यक साधनों की अनुपलब्धता, अभिभावक की निरक्षरता व शिक्षा के प्रति उदासीन दृष्टिकोण का होना, लड़कियों की शिक्षा का विरोध, निर्धनता तथा जनसंख्या में विशाल वृद्धि को जिम्मेदार ठहराया है।

प्राथमिक शिक्षा के संख्यात्मक विकास से सम्बन्धित कुछ आंकड़े तालिका में प्रस्तुत किये गये है। यद्यपि ये आंकड़े पूर्णतः यर्थाथ नहीं हैं परन्तु फिर भी आंकड़ें स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतवर्ष में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार की प्रवृत्ति को स्पष्ट करने में समर्थ होगें। कक्षा 1 से 5 तक के आंकड़ों के अवलोकन से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं

1. विगत 40 वर्षों में प्राथमिक स्कूलों की संख्या 2 लाख से बढ़कर 6 लाख के लगभग हो गई है। कहने का अभिप्राय है कि स्कूलों की संख्या तीन गुनी वृद्धि हुई है। प्रतिवर्ष 10 हजार स्कूल नये खुलने का औसत आता है।

तालिका– स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत में निम्न प्राथमिक शिक्षा (कक्षा १ से ५ तक) का संख्यात्मक विकास (अनुमानतः)

शैक्षिक सत्र		1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91
स्कूलों की संख्या		2 लाख	3 लाख	4 लाख	5 लाख	6 लाख
छात्र संख्या	लड़के	138 लाख	236 लाख	357 लाख	453 लाख	581 लाख
	लड़कियां	54 लाख	114 लाख	213 लाख	285 लाख	410 लाख
	कुल	192 लाख	350 लाख	571 लाख	738 लाख	991 लाख
6–11 आयु वर्ग की जनसंख्या में नामांकन का प्रतिशत	लड़के	61%	83%	96%	97%	98%
	लड़कियां	25%	41%	60%	62%	65%
	कुल	43%	62%	78%	80%	82%

तालिका– स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत में निम्न प्राथमिक शिक्षा (कक्षा ६ से ८ तक) का संख्यात्मक विकास (अनुमानतः)

शैक्षिक सत्र		1950-51	1960-61	1970-71	1980-81	1990-91
स्कूलों की संख्या		14 हजार	50 हजार	84 हजार	1 लाख	1 लाख
छात्र संख्या	लड़के	26 लाख	51 लाख	94 लाख	139 लाख	208 लाख
	लड़कियां	5 लाख	16 लाख	39 लाख	68 लाख	124 लाख
	कुल	31 लाख	67 लाख	133 लाख	207 लाख	333 लाख
6–11 आयु वर्ग की जनसंख्या में नामांकन का प्रतिशत	लड़के	21%	32%	41%	49%	62%
	लड़कियां	4%	11%	19%	25%	32%
	कुल	13%	22%	30%	37%	47%

2. वर्ष 1950–51 में छात्रों की संख्या 192 लाख से बढ़कर वर्ष 1990–91 में 99 लाख हो गई है। छात्र संख्या में यह वृद्धि 5 गुनी है। छात्र संख्या में प्रतिवर्ष औसत वृद्धि लगभग 20 लाख रही है।

3. वर्ष 1950–51 में 6 से 11 आयु वर्ग की कुल जनसंख्या के केवल 43 प्रतिशत का स्कूल में नामांकन था जबकि वर्ष 1990–91 में कुल जनसंख्या का 82 प्रतिशत स्कूल में नाम लिखाता है।

4. स्कूल में जाने वाले लड़के, लड़कियों का अनुपात वर्ष 1950–51 में 100:41 था जो वर्ष 1990–91 में सुधर कर 100:66 हो गया है।

कक्षा 6 से 8 तक के आंकड़ों के अवलोकन से उच्च प्राथमिक शिक्षा की प्रगति के सम्बन्ध में निम्नांकित प्रवृत्तियां तथा तथ्य प्रकाश में आते हैं:

1. पिछले 40 वर्षों में जूनियर हाईस्कूल/मिडिल स्कूलों की संख्या 14 हजार से बढ़कर 145 हजार हो गई है। यह वृद्धि लगभग 10 गुनी है। प्रत्येक वर्ष लगभग तीन हजार नये जूनियर हाईस्कूल खुलते हैं।

2. इसी अवधि में छात्रों की संख्या 31 लाख से 333 लाख हो गई है जो लगभग 11 गुनी है। छात्र संख्या में औसत वृद्धि 7.5 लाख प्रति वर्ष रही।

3. वर्ष 1950–51 में 11 से 14 आयु वर्ग की कुल जनसंख्या के 13 प्रतिशत का नामांकन था जो वर्ष 1990–91 में बढ़कर 47 प्रतिशत हो गया है।

4. स्कूल में नामांकन वाले लड़के, लड़कियों का अनुपात सन् 1950–51 में 100:19 था जो बढ़कर वर्ष 1990–91 में 100:53 हो गया है।

परन्तु इस स्थान पर यह स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि उपरोक्त आंकड़े स्कूल में नाम लिखाने वाले छात्रों के हैं। वास्तव में नियमित रूप से स्कूल में जाकर शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या काफी कम रहती है। कभी–कभी मुख्याध्यापक भी भिन्न–भिन्न कारणों से नामांकन को फर्ज़ी ढ़ग से बढ़ाकर दिखाते हैं।

ख) शिक्षक दक्षता

शिक्षक शब्द से एक ऐसे व्यक्तित्व का बोध होता है जो अपनी अध्यापन शैली, व्यक्तिगत स्वभाव, सदाचार एवं गतिमयी जीवन के प्रभाव से बालकों को योग्य सामाजिक जीव के रूप में परिवर्तित करता है। जो बच्चों को शिक्षित करके राष्ट्र के भावी सदस्य के रूप में परिवर्तित करता है। अतः शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा, उसका आदान प्रदान तथा उसके विशाल रूप को स्थाई रखना इन सबमें शिक्षकों का सहयोग अपरिहार्य है। राष्ट्र के निर्माता के रूप में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यदि बुनियाद ही मजबूत नहीं हो तो भला भवन कैसे खड़ा रह सकेगा। अतः प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र बहुत छोटे होते हैं अतः शिक्षकों के अन्दर उस महान दक्षता का समावेश होता है जिसके द्वारा छात्र उनसे शीघ्र ही सहज हो जाते हैं। इस स्तर पर

शिक्षक अपने में उस प्रवृत्ति को ज्यादा विकसित कर लेते हैं जिसके द्वारा बालक के जीवन की शुरूआत व उनका विकास मनोवैज्ञानिक तरीके से करते हैं। वे व्यवहार द्वारा छात्रों को ज्यादा पढ़ाने का प्रयास करते हैं न कि उपदेश द्वारा। वे छात्रों का भौतिक विकास करने के साथ–साथ संवेगात्मक, चारित्रिक, बौद्धिक एवं समग्र व संतुलित व्यक्तित्व का भी विकास करते हैं। वे छात्रों के वैयक्तिक विभेदों को जानकर उसके द्वारा अधिगम कराते हैं जो कि एक कठिन कार्य है।

प्राथमिक स्तर के शिक्षक अपने ज्ञान को अनुभवों से जोड़कर छात्रों के जीवन में निरंतरता व पूर्णता का दर्शन कराने में दक्ष होते हैं ताकि छात्रों का ज्ञान परिपक्व हो सके। साथ में इन शिक्षकों में इन छात्रों के प्रति कोमल हृदय, दया का भाव व संवेदनशीलता कूट–कूट कर भरी होती है जिस कारण वे विद्यालय के छात्रों से अपने बच्चों जैसा व्यवहार करते हैं। वे छात्रों में सामूहिक विकास, अंतःक्रिया विश्लेषण योग्यता, अनुशासन एवं स्वावलम्बन का गुण भी भर देते हैं। वे एक प्रकार से छात्र के विकास में मौन सहायता प्रदान करते हैं। इन शिक्षकों को प्रशिक्षण द्वारा अच्छे व्यक्तित्व मस्तिष्क व अनुभवों की पूर्णता, तात्कालिक, स्वीकृति, सृजनात्मकता व आत्म अनुभव की दक्षताएं सिखाई जाती है उन्हें विभिन्न पदों व प्रविधियों का ज्ञान कराया जाता है जिसके द्वारा वे अपने छात्रों को अधिगम कराते हैं जिनमें मूल्य, सृजनात्मकता

व अन्य क्षमताओं के साथ–साथ छात्रों को व्यक्गित बोध, अधिगम प्रक्रिया व व्यावहारिकता भी आ जाती है।

बालक से लेकर वयस्क तक बनने तथा सृजन करने का श्रेय इन्हीं प्राथमिक शिक्षकों को जाता है क्योंकि जब राजगीर सही नींव बनाता है तभी उस पर एक सुन्दर इमारत खड़ी की जा सकती है और यहाँ बालक के विकास की नींव यही शिक्षक ही रखते हैं। यही बालक समाज का उत्तरदायी व पूर्ण सदस्य बनकर देश के उत्थान की प्रक्रिया में योगदान करता है। शिक्षक एक ऐसा यंत्र है जो संस्कृति व नागरिकता की मशाल को हमेंशा प्रज्ज्वलित रखता है। उद्भव (1962) नामक पुस्तक में डा0 राधाकृष्णन जी के अनुसार–

"The teachers place in society is of vital importance. He acts as the pivot for the transmission of the intellectual traditions and technical skill from generation to generation and helps to keep the lamp of civilization burning."

ऐसे गुरुत्तर दायित्व को वहन करने वाले शिक्षकों की विभिन्न शिक्षक दक्षताओं से परिपूरित होना चाहिए। दक्ष शिक्षकों का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जो प्रधानाध्यापक, साथी, शिक्षक, छात्र, अभिभावक एवं समुदाय के साथ सामंजस्य उत्पन्न कर सके। उन सभी को अपने व्यक्तित्व के द्वारा आकर्षित कर सकें।

'Teacher Competency Record' (1979) नामक पुस्तक के अनुसार कुशल शिक्षकों की संज्ञा में वे शिक्षक आते हैं जिनमें

अपरिमित ज्ञान का असीम भण्डार तो होता ही है साथ में उनमें खुद ऐसे गुण होते है जिसे छात्र बार–बार शिक्षक के पास और अधिक ज्ञांन प्राप्त करने की लालसा में जाता है इनके पास किताबी ज्ञान न होकर व्यक्तित्व, चारित्रिक एवं व्यावहारिक ज्ञान भी होता है। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार कुशलता आत्म संयम, आत्मसंतुष्टि एवं आत्मविश्वास से जन्म लेती है जिसमें असंतुष्टियों का ह्रास रहता है जिसे एक सूत्र द्वारा जाना जा सकता है।

कुशलता = आत्मसंयम + आत्मसंतुष्टि + आत्मविश्वास – असंतुष्टि

इस सूत्र को यदि शिक्षक अपने अंदर समाहित कर लें तो शिक्षा जगत की तमाम कठिनाइयाँ अपने आप ही समाप्त हो जायेंगी।

'सेवा पूर्वागम मंजूषा' (1993) नामक पुस्तक में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अनुसार शिक्षा में गुणवत्ता तभी आयेगी जब शिक्षकों में दक्षता होगी किसी भी प्रकार की दक्षता को दो तत्वों में समझा जा सकता है। प्रथम, पारंगतता एवं द्वितीय, निपुणता। इसके लिये गांधी जी ने एक सूत्र का निर्माण किया।

दक्षता = पारंगतता + निपुणता (गुणवत्ता)

उन्होंने बताया कि शिक्षा का विकास मानव शक्ति का सम्वर्धन है। मानव शक्ति का अंश दक्षता है। दक्षता जब पारंगतता के स्तर पर प्राप्त होती है तो कार्य में निपुणता आती है।

शिक्षकों को शिक्षण दक्षताओं पर सर्वाधिक महत्व देना

चाहिए जिससे उनका शिक्षण प्रभावशाली बन सके। जिसके लिए विद्यालय में विभिन्न साधन जैसे– उपयुक्त विद्यालय भवन, पुस्तकालय, शिक्षण सहायक सामग्री, विभिन्न उपकरण व अन्य व्यवस्थायें होती हैं। जिनका उचित रूप से प्रयोग करके शिक्षक अपना शिक्षण प्रभावी बनाते हैं व उनकी सहायता से नई तकनीक द्वारा शिक्षण करने का प्रयास करते हैं व शिक्षण दक्षताओं हेतु अपने को विशेष तौर से तैयार करते हैं। जिससे छात्र सर्वाधिक लाभान्वित होते हैं जिसे Rayon (1950) ने समझाते हुए कहा है–

"Teaching is efficient to the extent that the teacher acts in ways that are favourable to the development of basic skills understanding, work habits, desirable attitudes, value judgement and adequate personal adjustment of the pupils." *(Rayon, 1950, 0.37)*

गुप्ता व कपूर (1962) के अनुसार एक दक्ष शिक्षक में निम्न गुण पाये जाते हैं।

''शिक्षकों में अनुदेशन क्रिया, कक्षा प्रबन्ध, मूल्यांकन व पृष्ठपोषण, नई शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षण करने आदि का कौशल पाया जाता है। साथ में वे व्यवसाय के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण रखने वाले आत्मसंयमी खुश रहने वाले होते हैं।''
(Gupta & Kapoor, 1962, p. 59)

वर्तमान काल में शिक्षा की मात्रात्मक उन्नति तो हो ही

रही है परन्तु गुणात्मक उन्नति नहीं, इसका प्रमुख कारण शिक्षा स्तर में गिरावट है। शिक्षण तथा सीखने के उद्देश्य, शिक्षण विधियां, शिक्षण तकनीकें, पाठ्यक्रम तथा सहायक सामग्री इन सबकी सफलता एवं असफलता शिक्षक की दक्षता पर निर्भर करती है। यदि एक दक्ष शिक्षक इन सभी चीजों का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करता है तो शिक्षा में गुणात्मक प्रगति संभव है। 'न्यूनतम अधिगम स्तर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (1992)' के अनुसार प्रभावशाली शिक्षकों में निम्नलिखित दक्षताएं पायी जाती हैं—

1. शिक्षक जो विषय पढ़ाते हैं उस विषय का उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान होता है।
2. शिक्षकों का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है।
3. शिक्षक अपने संवेगों को नियंन्त्रण में रखते हैं।
4. शिक्षक व्यक्तिगत विभिन्नता करके छात्रों को अधिगम कराते हैं।
5. शिक्षक छात्रों को पाठ व्यावहारिक बनाकर पढ़ाते हैं। साथ ही शिक्षक सहायक सामग्रियों का उपयोग बड़े ही प्रभावशाली ढंग से करते हैं।
6. शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण निष्ठा होती है व उसे लगातार और भी विकसित व सुदृढ़ करने की इच्छा रखते हैं।

7. शिक्षक सभी धर्मो व संस्कृतियां का आदर करते हैं।

8. शिक्षक अधिगम के नियमों की किसी भी परिस्थितियों में लागू कर लेने की क्षमता रखाते हैं।

9. शिक्षक छात्रों की समस्याओं को समझकर उसका निदान आसानी से ढूंढ लेने में समर्थ होते हैं।

Osborn (1980) ने अपनी पुस्तक 'Better Training for Teachers' में शिक्षकों की शिक्षण से सम्बन्धित 8 दक्षताओं को बताया—

1. शिक्षक को शिक्षण करते समय प्रत्येक विद्यार्थी को सम्मिलित करना चाहिए। शिक्षकों को सभी छात्रों को सहयोग लेने के साथ—साथ सभी में बराबर प्रश्न वितरित करने चाहिए।

2. शिक्षक को शिक्षण करते समय छात्रों से नाटक, स्वांग आदि विभिन्न क्रियाकलाप करवाना चाहिए।

3. शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शैक्षिक क्रियाओं में छात्रों को आनन्द मिले।

4. शिक्षक कक्षा में छात्रों से स्वअधिगम के साथ—साथ स्वमूल्यांकन भी करवायें

5. समूह अधिगम करायें।

6. शिक्षकों को केवल शिक्षण कार्य प्रारम्भ करना चाहिए बाद में सामूहिक कार्यो द्वारा छात्रों को स्वतः अधिगम हेतु प्रेरित

करना चाहिए।

7. पढ़ाने के साथ सतत् मूल्यांकन को शैक्षिणिक प्रवृद्धि के साथ–साथ एकीकरण भी शिक्षकों को करना चाहिए।

8. शिक्षकों को सावधि/सामयिक (निदानात्मक) मूल्यांकन करना चाहिए।

Allen (1977) ने अपनी पुस्तक "Classroom Techniques" में शिक्षकों की कुछ दक्षताओं की तरफ विशेष ध्यान दिलाया है जो निम्न है–

1. शिक्षक ''बाल केन्द्रित'' शिक्षण करें, बालकों को स्वयं तर्क करने, चिन्तन करने, अन्वेषण करने एवं निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करें।

2. प्रतिदिन पाठ योजना बनाकर ही शिक्षण करें।

3. प्रभावशाली, सस्ती व स्वयं के द्वारा रचित शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग शिक्षक शिक्षण के समय करें।

4. सहायक सामग्री बालकों को भी छूने दें।

5. श्यामपट का नियमित प्रयोग करें।

6. विद्यालय में छात्रों की संख्या बढ़ाने के प्रयास के साथ ही साथ उपस्थिति को भी बढ़ाने का प्रयास करें।

7. विद्यालय में प्रयोगात्मक शिक्षण करने का भी प्रयास करें जिससे छात्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी व रूचिकर होगा।

Richard (1968) ने अपनी पुस्तक 'Methodology in Teaching' में स्पष्ट किया है कि खेलना बालक का जन्मजात गुण है। यह एक ऐसी रचनात्मक प्रवृत्ति है जिसकी प्रमुख विशेषताएं स्वाभाविकता, स्वतन्त्रता एवं आनन्द है। अतः खेल द्वारा शिक्षण करने से बालक विषय जल्दी आत्मसात करता है। साथ में यदि बालकों को मौखिक कौशलों के साथ–साथ शारीरिक रूप से भी कुछ करने को दिया जाये तो अधिगम आसानी से हो जाता है। कुशल शिक्षकों को क्रियात्मक पक्ष पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त बालक प्रकृति से बहुत ही आसानी से सीखने में समर्थ होते हैं। अतः एक कुशल शिक्षक बालकों को कक्षाओं से बाहर निकालकर प्रकृति के सानिध्य में ले जाकर अध्ययन कराते हैं। जिससे बालक को अधिगम आसानी से होता है। बालक प्रकृति के प्रति व अपने परिवेश के प्रति जागरूक होता है व चारों ओर के वातावरण से तथ्यों की जानकारी स्वयं निरीक्षण करके प्राप्त करता है।

Schaffer (1995) ने अपनी पुस्तक 'The Roles of Teachers' में बताया है कि शिक्षकों को अभिप्रेरणा द्वारा शिक्षण करना चाहिए। इसके बिना शिक्षकों को कुशलता में कुछ अभाव सा प्रतीत होता है।

Rebro (1979) की पुस्तक 'Educational Atainment' के अनुसार शिक्षकों को छात्रों पर नियंत्रण दण्ड द्वारा नहीं करना चाहिए क्योंकि भयमुक्त वातावरण में जब शिक्षक शिक्षण करते हैं तो

छात्र नियंत्रित रहते ही हैं साथ में पाठ भी जल्दी ही आत्मसात कर पाने में सक्षम होते हैं। छात्र भयभीत नही रहते हैं। अपने शिक्षकों के पास जाकर अपनी शिक्षण सम्बंधी समस्याओं का हल प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। ऐसे में विद्यालय में छात्र उपस्थिति दर ठीक रहती है। छात्रों के अच्छे कार्यों हेतु शिक्षकों को अपने छात्रों को पृष्ठपोषण देने व प्रशंसा करने में चूकना नहीं चाहिए इससे छात्र अत्यधिक उत्साह के साथ कार्य और भी अच्छा करने का प्रयास करते हैं।

Kurton (1987) ने अपनी पुस्तक 'Teacher-Student Relationship' में बताया है कि अक्सर कुछ छात्र विद्यालय में दण्ड के भय से, पारिवारिक दायित्वों से एवं आर्थिक कठिनाइयों के कारण विद्यालय के बीच सत्र में ही अपनी पढ़ाई छोड़कर चले जाते है ऐसे में शिक्षकों को इन छात्रों के आर्थिक व सामाजिक परिवेश का पता लगाना चाहिए व उनके अभिभावकों को विद्यालय में दी जानेवाली शिक्षा की महत्ता को बताकर विद्यालय लाने का प्रसास करना चाहिए। इतना ही नहीं छात्रों के समक्ष उनकी शिक्षा–दीक्षा में उत्पन्न हुई बाधाओं को भी पता लगाकर उनका निदान करने का प्रयास करना चाहिए। ताकि छात्र निर्बाधित होकर विद्यालय में ज्ञानार्जन करने आयें। अतः दूसरे शब्दों में यह कहना उचित होगा कि एक कुशल शिक्षक को अपने हर सम्भव सतत् प्रयासों द्वारा इस विपरीत परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

'सेवा पूर्वागम मंजूषा' (1993) में लिखे लेख में शिक्षकों से

अनुरोध किया गया है कि छात्रों को ज्ञान व्यावहारिक व प्रायोगिक रूप से देने का प्रयास करें। वे छात्रों को स्वयं तर्क करने, चिन्तन करने, अन्वेषण करने एवं निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करें।

'शैक्षिक प्रबंधन पुस्तिका, अभिनव (1997) में लिखे लेख के अंनुसार आज का युग वैज्ञानिक युग के नाम से पहचाना जाता है विज्ञान के कारण ही आज सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन हो रहे हैं। विज्ञान मनुष्य में तर्कयुक्त मस्तिष्क का निर्माण करता है जिससे सही निर्णय तथा संगठन की शक्ति पैदा होती है। विज्ञान शिक्षा का आवश्यक अंग है इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को विभिन्न अनुभव देकर उनमें वैज्ञानिक अभिरूचियों को जन्म देना होता है इससे छात्रों में अपने पर्यावरण के प्रति जिज्ञासा, क्रमबद्ध विचार करना, तंर्कबुद्धि का विकास करना, जिज्ञासाओं के प्रति तृप्ति, निष्पक्षता, न्यायप्रियता, सत्यता एवं धैर्य धारण करने के गुणों का विकास होता है। इसके अतिरिक्त छात्रों में सामान्य ज्ञान की वृद्धि करने हेतु उन्हें तथ्यों की जानकारी सीधे या प्रत्यक्ष रूप से न देकर उनकी संग्रहशीलता का शिक्षक लाभ उठाएं। विभिन्न प्रकार की वस्तुएं जैसे' डाक–टिकट, चित्र, खिलौने एवं पुस्तकों आदि का संग्रह कराएं तथा उनके विषय में प्रश्नोत्तर करके उनकी जानकारी में वृद्धि करें। यह सम्पूर्ण कार्य कां कुशल शिक्षक आसानी से कर सकता है।

'न्यूनतम अधिगम प्रशिक्षण मंजूषा' (1998) में शिक्षकों की मूल्यांकन सम्बन्धी दक्षताओं को बताया है जो कि निम्नवत् हैं–

शिक्षक सतत् व व्यापक मूल्यांकन करें, उपचारात्मक व निदानात्मक शिक्षण करें। छात्रों को स्वमूल्यांकन करने का अवसर दें। कापी पर नम्बर देने के अतिरिक्त शिक्षक मौखिक मूल्यांकन करें। अप्रत्यक्ष मूल्यांकन भी करें जिसे छात्र समझ न सकें।

'समाहार' (1993) नामक पुस्तक में लिखे लेख के अनुसार शिक्षकों का सबसे बड़ा गुण उनकी वाणी में मधुरता व विनम्रता अवश्य होनी चाहिए। उनमें उन सभी नैतिक व चारित्रिक गुणों का समावेश होना चाहिए जिसके कारण समुदाय के सदस्य, अभिभावक, छात्र एवं विद्यालय के सभी कर्मचारी आदि उसके गुणों की तरफ आकर्षित हो न कि उसकी आलोचना करें। अर्थात् शिक्षक का व्यक्तित्व मानवतायुक्त होना चाहिए।

N.C.E.R.T. द्वारा प्रकाशित 'शैक्षिक मासिक सत्र' (1996) नामक पत्रिका के अनुसार गांधी जी ने 1937 में गुजरात में 'Wardha Educational Conference' में सर्वप्रथम प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कुछ दक्षताओं को बढ़ाने पर बल दिया जिसमें गांधी जी ने कहा कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को शिक्षक प्रशिक्षण के समय छात्रों को आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी बनाने हेतु व्यावसायिक शिक्षा का भी प्रशिक्षण देना चाहिए। अतः प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों में छात्रों को आत्मनिर्भर व स्वाबलम्बी बनाने हेतु कुशलता अति आवश्यक है।

Clarke (1982) ने अपनी पुस्तक 'A system Approaches

to aspect of primary education' में बताया है कि विद्यालयों में शिक्षकों को समय–समय पर अभिभावकों से मिलते रहना चाहिए जिससे वे दोनों ही छात्रों से सम्बन्धित कमियों का निदान करने में सक्षम होते हैं। एक कुशल शिक्षक अभिभावकों को विद्यालय के प्रति आकर्षित करने हेतु भांति–भांति के प्रयास करता है ताकि उसके विद्यालय व छात्रों की प्रगति हो सके।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और क्रियान्वयन कार्यक्रम (1992 संशोधित)' में लिंगों के बीच समानता पर बल देते हुए कहा है कि एक दक्ष शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि–

1. कक्षा में बालिकाओं को भी किसी विचार से सहमत व असहमत होने का अधिकार देंगे।
2. उन्हें अपनी बात को बिना किसी व्यवधान के कहने देंगे।
3. बालिकाओं को भी परस्पर सार्थक वार्तालाप करने हेतु प्रेरित करेंगे।
4. बालक व बालिकाओं दोनों के प्रति स्पष्ट व समान रहेंगे। दोनो में परस्पर वाद–विवाद व वार्तालाप को उत्साहित करेंगे।
5. बालिका शिक्षा की ओर जनाकर्षण हेतु शिक्षक ग्राम पंचायत, ग्राम शिक्षा समिति, महिला–मण्डल, गैर सरकारी संस्थाओं, बुर्जुग पुरूषों आदि की सहायता से बालिका शिक्षा हेतु अभियान चलाना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना

जिसमें बालिकाओं को शिक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डालना आदि है। विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की हुई पुरानी छात्राओं की उपलब्धियों पर प्रकाश डालना।

'शिक्षा संदर्शिका' (1973) नामक पुस्तक में लिखे लेख के अनुसार शिक्षकों को अपने छात्रों के स्वास्थ्य के प्रति सर्वाधिक जागरूक होना चाहिए। समय–समय पर छात्रों को डाक्टरों द्वारा स्वास्थ्य निरीक्षण करवाया जाना चाहिए। विभिन्न रोगों से रोकथाम हेतु छात्रों को समय–समय पर टीके लगवाने का प्रयास करना चाहिए। इतना ही नहीं विभिन्न शारीरिक विकलांगताओं से ग्रसित छात्रों के बैठने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

Edger (1994) ने अपनी पुस्तक 'Job Performance by Teachers' में स्पष्ट किया है कि किन्हीं विद्यालयों में अनुशासन की कमी होने से छात्रों में विद्यालय के प्रति अलगाव उत्पन्न हो जाता है। शिक्षक अनुशासित रूप से व्यवहार नहीं करते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। प्रतिदिन विद्यालय में औपचारिक शिक्षण नहीं होने व शिक्षकों में सदैव तनाव बने रहने से विद्यालय का अनुशासन प्रभावित होता है। फलतः छात्रों की विद्यालय से धीरे–धीरे रूचि समाप्त होने लगती है। किन्तु जिन विद्यालयों में अनुशासन की समस्या नहीं रहती है सभी शिक्षक मिलकर एक साथ काम करते हैं, विद्यालय के कार्यों को निपटाने में सभी शिक्षक रूचि लेते हैं, सभी शिक्षक एक दूसरें के कार्यां में सहयोग देते हैं व एक–दूसरे का

आदर करते हैं। उन विद्यालयों में सभी कार्य समय से पूर्ण हो जाते हैं। विद्यालय में एक सामाजिक वातावरण का निर्माण होता है। शिक्षकों में आपस में टकराव व मनमुटाव की स्थिति नहीं आने पाती है। विद्यालयों के शिक्षक अनुशासन व साथी शिक्षकों सम्बन्धी दक्षताओं में प्रवीण होते हैं। इसके अतिरिक्त वे विद्यालय तीव्रतर प्रगति करते हैं जिसमें शिक्षक अध्ययन में रूचि रखते हैं, विद्यालय सम्बन्धी कार्यों में सहभाग करते हैं, प्रतिदिन विद्यालय में समय से उपस्थित रहते हैं, विद्यालय के प्रशासनिक मामलों में कुशलतापूर्वक निर्णय देते हैं। इतना ही नहीं शिक्षक अपने प्रधानाध्यापक से आत्मीयता का व्यवहार करते हैं, उनका आदर करते हैं, उनको सहयोग देते हैं, उनके द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करते हैं।

अतः स्पष्ट होता हे कि विद्यालय की प्रगति हेतु शिक्षकों में विभिन्न दक्षताओं का होना आवश्यक है जैसे– व्यक्तित्व सम्बन्धी, शिक्षकों के ज्ञान सम्बन्धी, शिक्षक छात्र सम्बन्धी, कक्षा शिक्षण से सम्बन्धी, शिक्षक–शिक्षक सम्बन्धी, मूल्यांकन सम्बन्धी, अभिभावक सम्बन्धी, अनुशासन सम्बन्धी एवं शिक्षकों के अभिवृत्ति सम्बन्धी दक्षताएं आदि। शिक्षकों द्वारा इन दक्षताओं का निर्वाह करने से वे अत्यधिक प्रभावशाली शिक्षक कहलाये जाते हैं व विद्यालय में नहीं अपितु समाज में भी अपेक्षित स्थान व सम्मान पाने में सफल होते हैं एवं अपने कार्य के प्रति सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं।

ग) कार्य–सन्तुष्टि

कार्य–सन्तुष्टि मनोवैज्ञानिक और औद्योगीकरण में श्रमिकों की व्यक्तिगत प्रसन्नता और उनको मिलने वाली सुविधाओं के द्वारा उत्पन्न होती है।

प्रत्येक व्यक्ति को कोई न कोई कार्य अवश्य करना पड़ता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति का कार्य या व्यवसाय उसके मूल्यों तथा अभिवृत्तियों के अनुकूल होता है तो व्यक्ति उस कार्य को भली–भांति करता है तथा उसमें कार्य–सन्तुष्टि की अधिक सम्भावना होती है। इसके विपरीत यदि व्यक्ति का कार्य उसके मूल्यों तथा अभिवृत्ति के प्रतिकूल होता है तो व्यक्ति में कार्य–सन्तुष्टि का अभाव होता है।

कार्य–सन्तुष्टि वह स्थिति है जोकि एक व्यक्ति को अपने कार्य के सन्दर्भ में प्राप्त होने वाले आनन्द के मूल्यों का अनुमान देती है। कार्य–सन्तुष्टि व्यक्ति के कार्य के समान पहलुओं जैसे– वेतन, पदोन्नति के अवसर, अधिकारियों से सम्बन्धित, निरीक्षकों एवं सहयोगियों के प्रति दृष्टिकोण आदि के कारण उत्पन्न मानसिक संवेगात्मक स्थिति है।

किसी व्यवसाय में सन्तुष्टि एक अति आवश्यक तत्व है क्योंकि एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से जितना अधिक सन्तुष्ट होगा उतने ही प्रभावशाली ढंग से अपने कार्य को पूरा करेगा। इसके विपरीत जिस व्यवसाय या कार्य से व्यक्ति को सन्तुष्टि नहीं मिलती है तो उस व्यवसाय या कार्य के साथ वह पूरा न्याय नहीं कर पायेगा। यही बात

शिक्षक के व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सत्य है कि यदि एक शिक्षक को अपने शिक्षण व्यवसाय में सन्तुष्टि की भावना दिखायी देगी तो वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह ठीक प्रकार से कर पायेगा अन्यथा वह शिक्षा के क्षेत्र में मात्र औपचारिकता ही निभायेगा।

किसी भी व्यवसाय में कर्मचारी की कार्य–सन्तुष्टि होना अत्यधिक आवश्यक, महत्वपूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक तथ्य है। कार्य–सन्तुष्टि शब्द व्यक्ति की अभिवृत्ति को उसके कार्य की ओर निर्दशित करता है। इस तथ्य की खोज का श्रेय Hoppock (1935) को जाता है क्योंकि सर्वप्रथम Hoppock ने इस तथ्य की खोज की थी तथा उस समय कार्य–सन्तुष्टि पर कुछ अध्ययन भी हुए। Hoppock ने समकालीन अध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि श्रमिकों की व्य़वसाय के लिए उनकी उपयोगिता एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं आशंकाओं के बीच जब समन्वय स्थापित हो जाता है तब कार्य–सन्तुष्टि का जन्म होता है। इसी सन्दर्भ में Robert Hoppock ने परिभाषित करते हुए यह कहा है कि कार्य–सन्तुष्टि मनोवैज्ञानिक, शारीरिक तथा वातावरण सम्बन्धी परिस्थितियों के संयोग पर भी आधारित होती है। अर्थात् जब व्यक्ति के व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक, शारीरिक व वातावरण इन तीनों का मेल होता है तब उसको अपने कार्य में पूर्णरूपेण सन्तुष्टि का अनुभव होता है।

"From a technical point of view, of course, in the research here reported job satisfaction is whatever our

criterian measured, but as a more useful tentative definition we would suggest that the thing in which we are interested in any combination of psychological, physiological and environmental circumstances that causes a person truthfully to say" I am satisfied with my job.". (Hoppock, 1935, p.21)

कार्य–सन्तुष्टि से तात्पर्य श्रमिक कर्मचारियों के सभी तत्वों की दृष्टि से कार्य में की जाने वाली रूचि से है। रूचि के होने पर ही वह अपने कार्य में निरन्तर प्रगति करता है और बिना किसी अरूचि के अपने कार्य को भलीभांति पूर्ण करता है। इस प्रकार कार्य–सन्तुष्टि विभिन्न अभिरूचि तथा दृष्टिकोणों का परिणाम है। कभी–कभी कार्य–सन्तुष्टि रूचि के कारण भी ग्रसित होती है। Barbor (1980) ने कार्य–सन्तुष्टि को इसी सन्दर्भ में परिभाषित करते हैं।

"Job satisfaction may be defined as the quality stated or level of satisfaction which is the result of various interest and attitude of person toward his job" (Barbor, 1980, p.41)

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि कार्य–सन्तुष्टि तभी सम्भव है जब कर्मचारी को अपने कार्य में अभिरूचि हो तथा व्यवसाय के प्रति उचित दृष्टिकोण हों।

Bullock (1962) के मतानुसार

"Job satisfaction is an attitude which result from balancing and summation of many specific likes and dislikes experienced in connectin of Job" (Bullock, 1962, p.7)

कार्य–सन्तुष्टि को इस प्रकार भी परिभाषित किया जा सकता है कि यह कर्मचारी की प्रभावात्मक प्रतिक्रिया का योग है जो कि उसके कुल कार्य–कर्त्तव्य और उसको मिलने वाली प्रेरणात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति को परिभाषित करता है। यदि एक श्रमिक की अपने व्यवसाय से उन सब इच्छाओं या आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, जिसकी वह आशा करता है तो उसको अपने व्यवसाय से सन्तुष्टि होगी।

अनेक शोधकर्ताओं का मत है कि जब एक कर्मचारी अपने कार्य के माध्यम से अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होता है तब वह उतना ही सन्तुष्ट होता है। Schaffer (1953) ने यह परिकल्पना की कि–

"Over all satisfaction will very directly with the extent to which these needs of an individual which can be satisfied in a job are actually satisfied, the stronger the need the more closely will job satisfaction depend on its fullfilment" (Schaffer, 1953, p.67)

इसी प्रकार किसी कार्य में व्यक्ति की सन्तुष्टि उसकी आवश्यकता की सन्तुष्टि पर निर्भर करती है। Guion (1958) के

अनुसार

"Job satisfaction as the extent to which the individual needs are satisfied and the extent to which the individual perceived that satisfaction as stemming from his total job satisfaction" (Guion, 1958, p. 59).

कार्य–सन्तुष्टि एक व्यवसाय के लिए अति आवश्यक तत्व है। कार्य–सन्तुष्टि व्यक्ति की इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति अपने व्यवसाय के प्रति धनात्मक मनोवृत्ति रखता है या ऋणात्मक मनोवृत्ति। जब व्यक्ति की अपने व्यवसाय के प्रति धनात्मक मनोवृत्ति होती है तो उसको कार्य–सन्तुष्टि का अनुभव होता है।

धनात्मक मनोवृत्ति में व्यक्ति की व्यवसाय से सब आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तथा उसका अपने व्यवसाय के प्रति रूझान भी होता है।

ऋणात्मक मनोवृत्ति में व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति होती है पर व्यक्ति की रूचि के अनुसार कार्य नहीं होता है और वे व्यक्ति सन्तुष्ट नहीं रहते हैं। Vroom (1978) के अनुसार

"The term job satisfaction and job attitude are typically used interchangeable and both refer to the affective orientation of the individual toward the work roles he is occupying at the time positive towards the job are conceptually equivalent to job satisfaction and the negative attitude towards job are equivalents to job

dissatisfaction." (Vroom, 1978, p.73)

प्रत्येक व्यवसाय की व्यावसायिक प्रतिष्ठा या व्यावसायिक महत्व अलग–अलग होता है। इन पर भी व्यकित की व्यावसायिक सन्तुष्टि निर्भर करती है अर्थात् किसी व्यवसाय में कार्यरत व्यक्ति अपने व्यवसाय को कितना महत्व देता है यह बात उसकी कार्य–सन्तुष्टि को प्रभावित करती है। यदि वो अपने व्यवसाय को महत्व देता है तो यह निश्चित है कि वहाँ कार्य–सन्तुष्ट होगा।

Sinha and Agarwal ने कार्य–सन्तुष्टि को लगातार रहने वाली भावात्मक स्थिति बताया तथा कहा कि–

"Job satisfaction is a....." persistent affective state which has arisen in the individual as a function of the perceived characteristics of his job in relatino to his frame of reference.

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सुखद या सुखी भावात्मक मनः स्थिति के रूप में भी कार्य–सन्तुष्टि की व्याख्या की गयी है। व्याख्या में सुखद भावात्मक मनः स्थिति का सम्बन्ध कार्य–सन्तुष्टि से जुड़ता है वैसे भी यदि कोई भी व्यक्ति किसी भी वस्तु के प्रति सुखद भावात्मक मनः स्थिति को रखता है तो आवश्यक रूप से उससे उस वस्तु के प्रति सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी और व्यक्ति की कार्य में सुखद भावात्मक स्थिति तभी दिखायी पड़ती है। जब उसे कार्य से पूर्णतः लाभ प्राप्त हो या वो उसकी रूचि के अनुकूल हो। इन्ही बातों को Locke (1969) ने कार्य–सन्तुष्टि की परिभाषा

का आधार बताया है उनके विचारों में–

"कार्य–सन्तुष्टि कार्य के विभिन्न पहलुओं के अवलोकन तथा मूल्यांकन के पश्चात उत्पन्न सुखद भावात्मक मनः स्थिति है।" (Locke, 1969, p.304)

उपरोक्त परिभाषा के द्वारा यह निश्चित रूप से स्पष्ट होता है कि कार्य–सन्तुष्टि व्यक्ति के व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं जैसे–लाभांश, पदोन्नति के अवसर, मानवीय प्रबन्ध, सहयोगियों, निरीक्षकों एवं अधिकारियों से सम्बन्ध व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। कार्य के प्रति उत्पन्न सुखद भावात्मक अनुभूति कार्य में संन्तुष्टि की परिचालक है। यदि व्यवसाय में दुःखद अनुभूति है तो वह असन्तुष्टि की प्रतीक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि कार्य–सन्तुष्टि को उसके कार्य में प्राप्त होने वाले आनन्द का पूर्ण अनुमान देती है। व्यक्ति का कार्य या व्यवसाय उसकी अभिवृत्ति तथा रूचि के अनुकूल होता है, तो व्यक्ति उस कार्य को भलीभांति करता है तथा उसमें कार्य–सन्तुष्टि की भी अधिक सम्भावना रहती है। इसके विपरीत यदि व्यक्ति का कार्य उसकी रूचि के प्रतिकूल होता है तो व्यक्ति को उस कार्य में सन्तुष्टि नहीं प्रतीत होती है। इसी प्रकार जब एक शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय से सन्तुष्ट रहता है तो शिक्षा प्रणाली सुचारू रूप से चलती है। इसके विपरीत एक असन्तुष्ट शिक्षक पूरी शिक्षा व्यवस्था की नींव को हिला सकता है। जिससे भावी नागरिक

का भविष्य भी बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकता। शिक्षक अपने कार्यों को सफलतापूर्वक तभी कर सकते हैं जब वे अपने कार्य से सन्तुष्ट हों। क्योंकि कार्य–सन्तुष्टि शिक्षक की मानसिकता को प्रभावित करती है। फलतः उसका शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। शिक्षण एक ऐसी कला है जिसमें शिक्षक की भावनायें संवेग तथा मानसिकता छात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट नही हैं तब वे अपने शिक्षण कार्य से पूरा न्याय नहीं कर पायेंगे। जो उसके द्वारा शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों के व्यक्तित्व को प्रतिकूल रूप में प्रभावित करेगा।

शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का विस्तार उसके कार्य, उसकी व्यक्तिगत विशेषताएं, सामाजिक वातावरण जिसमें वह रहता है, इन तीनों पर आधारित होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के स्तर में गिरावट आ गयी है। जिसके लिए बहुत हद तक शिक्षक जिम्मेदार हैं। यहाँ पर यह विचार आता है कि शिक्षक अपना कार्य सुचारू रूप से क्यों नहीं करते हैं अर्थात् वे छात्रों को मन लगाकर क्यों नहीं पढ़ाते हैं। कहीं ऐसा तो नही कि शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं है और अगर वे सन्तुष्ट नहीं है तो किस वजह से।

हमारे शिक्षक मुख्य रूप से आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, राजनीतिक एंव व्यक्तिगत कठिनाइयों से घिरे हैं। इतना ही नहीं जहाँ सब कुछ तीव्रगति से चल रहे हैं। कहीं भी कुछ ठहराव दृष्टिगत नहीं हो रहा हैं, वहीं इन शिक्षकों के प्रति अपेक्षित सम्मान

में द्रुतगति से कमी नजर आ रही है। वे समाज में इतना सुकार्य करते हुए भी अपना सम्पर्क नहीं जोड़ पा रहें हैं न ही अपने ज्ञान का सृजन और उसके हस्तान्तरण की प्रतिक्रिया का क्रियान्वयन स्वतन्त्र रूप से कर पा रहे हैं। क्योंकि इन प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी है। जनता के द्वारा असहयोग व असम्मान कभी–कभी इन्हें सन्निपात की स्थिति में ला देता है।

हमारे शिक्षक प्रबोधन दाता होते हैं वे अपेक्षित भूमिका व दायित्व के अनुसार मात्र ज्ञान ही नहीं प्रदान करते हैं बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हैं। उन्हें उपयोगी व उत्पादक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करते हैं। इतना महान कार्य करने वाले शिक्षक आज सन्तुष्ट नहीं दिखते। जिससे यह ज्ञात होता है कि भविष्य में हमारे राष्ट्र, समाज व इस महान प्रजातन्त्र को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, हमारे शिक्षक रूपी शिल्पकार जो देश का भविष्य निर्माण करते हैं, उन्हें अपने व्यवसाय में रूचि नहीं रह गयी है, तो भविष्य में राष्ट्र का विकास एवं पोषण सम्भव हो पाना कठिन सा दिखता है।

घ). विद्यालय वातावरण

संगठन द्वारा किसी संस्था के कार्य को विभाजित किया जाता है, उसे परस्पर आवंटित व्यक्तियों में समायोजित किया जाता है तथा उसे इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि वह संस्था एक कार्यकारी इकाई के रूप में परिणित हो जाए। इस प्रकार संगठन

कार्य करने की एक मशीनरी या ढांचा या संरचना है। जिसे प्रशासन द्वारा गतिशील एवं क्रियांवित किया जाता है। इस तत्व को विभिन्न शिक्षाविदों ने कर्मचारियों का निर्धारण (Staffing), बजट बनाना (Budgetting), साधनों का आवंटन (Allocating or Assembling Resources) तथा कार्यक्रम निर्धारण (Programming) आदि प्रक्रियाओं के नामों से भी पुकारा है जो कि संगठन के अंतर्गत आते हैं। Siers (1984) के अनुसार

''संगठन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम विभिन्न स्वतंत्र तत्वों का चयन एवं उनकी व्यवस्था इस प्रकार की ज़ाती है कि वे एंकरूप होकर तर्कपूर्ण रीति से कार्यशील हो सकें। इसका सम्बन्ध प्रमुखतः ऐसी व्यवस्था करने से है जिससे सम्पूर्ण कार्यक्रम सफलतापूर्वक व्यवहारतः सम्पन्न हो सकें।'' (Siers, 1984, p.63)

किसी संगठन का निर्माण स्वयं मनुष्यों के द्वारा अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। संगठन का मूल उद्देश्य सामाजिक भलाई के कार्य करना, साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को प्रेम, भाईचारा, नैतिकता एवं सदाचार का पाठ भी पढ़ाना है। इन उद्देश्यों को प्राप्त कराने में संगठनात्मक वातावरण, जोकि संगठन का निर्माण करने वाले सभी सहभागियों, उपलब्ध परिस्थितियों के आपसी संयोजन से बनता है। अपनी अभूतपूर्व भूमिका निर्वाह करता है। जैसे– अस्पतालों का संगठनात्मक वातावरण, क्रीड़ागणों का संगठनात्मक वातावरण, विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण

आदि। Campbell (1970) ने संगठनात्मक वातावरण को इस प्रकार परिभाषित किया है–

"Organisational climate as set of attributes specific to a particular organisation that may be induced from the way that organization deals with its members and its environment." (Campbell, 1970, p.390)

अर्थात किसी भी संस्था का वातावरण का निर्माण संस्था में सदा उपस्थित रहने वाले सभी सदस्यों से होता है व संस्था को जीवित रखने हेतु उसके सदस्य व वहाँ का वातावरण अभूतपूर्व उत्तरदायी होते हैं।

विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से तात्पर्य किसी भी विद्यालय के सुन्दर भवन, कक्षों, साज–सज्जा व विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों से नहीं होता अपितु इसका अर्थ विद्यालय के संगठनात्मक व्यक्तित्व (Organisational Personality) से लगाया जाता है। जिसको बनाने में विभिन्न घटक प्रधानाध्यापक, शिक्षक, छात्र व उपलब्धा परिस्थितियाँ अपना पूर्ण सहयोग देते है। जैसे–प्रधानाध्यापकों का शिक्षकों व छात्रों से, शिक्षकों का आपसी शिक्षकों से, प्रधानाध्यापक से व छात्रों से उचित एवं अपेक्षित व्यवहार। यदि शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के बीच में परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग, मित्रता व सहृदयता की भावना होती है तो छात्रों पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है और वे भी वैसा ही व्यवहार करते हैं। जिसमें विद्यालय शिक्षण हेतु उपलब्ध परिस्थितियों, सामग्रियों व वस्तुओं की कमी होने पर भी

शिक्षा के लक्ष्य के प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। इसे Mort and Ross (1984) ने समझाते हुए कहा है कि–

''विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण से तात्पर्य विद्यालय के सम्बद्ध कर्मचरियों के प्रयासों को समन्वित करने तथा उपयुक्त भौतिक साधनों का सदुपयोग करने की एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों में मानवीय गुणों के विकास में प्रभावी रूप से सहायक होती है।'' (Mort and Ross, 1984, p.23)

जैन (1994) ने अपनी पुस्तक 'Organisational Psychology' में विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया है कि शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक प्रभावशाली संगठनात्मक वातावरण की आवश्यकता होती है। वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसके अंतर्गत हम आवश्यक भौतिक व मानवीय साधन जुटाते हैं, उनके उचित प्रयोग के लिए नियम बनाते है, शैक्षिक प्रक्रिया से संबंधित व्यक्तियों अर्थात शिक्षकों, छात्रों एव प्रशासकों आदि के कार्यक्षेत्र तथा उनके अधिकारों को उनकी योग्यता एंव क्षमता के अनुसार निश्चित करते है तथा आवश्यक सामग्री की व्यवस्था भी करते है जिससे शिक्षा का कार्य अपेक्षित रूप से चलता रहे।

अनेकों शिक्षाशास्त्रियों ने विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को कुछ सिद्धान्तों पर आधारित माना है जिसमें मानव अपने मूल्यों का संरक्षण करने में सक्षम होते है।

क. विद्यालय के सम्बन्धित सभी सदस्यों के उद्देश्य एक ही होने चाहिए।

खं. सभी सदस्यों के कार्य एवं पदों का निर्धारण उचित होना चाहिए।

ग. विद्यालय के प्रधान द्वारा सभी सहयोगी शिक्षकों का जनतांत्रिक नेतृत्व करना चाहिए।

घ. विद्यालय का वातावरण मानवीय सम्बन्धों पर आधारित होना चाहिए।

ड. विद्यालय के उद्देश्य, साधनों व कार्य विधियों में सामंजस्य होना चाहिए।

च. विद्यालयी वातावरण में विनम्रता एवं प्रयोगशीलता का समावेश होना चाहिए।

छ. संगठनात्मक वातावरण की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन समय–समय पर किया जाना चाहिए

(Building a sustainable society, 1981, p.40)

Helpin (1963), Sharma (1978) के अनुसार विद्यालयी वातावरण दो प्रकार के होते हैं। प्रथम, खुला वातावरण (Open Climate) एवं द्वितीय, बंद वातावरण (Closed Climate)

खुले वातावरण की विशेषता यह है कि इसमें एक पारिवारिक वातावरण सा सृजन होता हुआ दिखाता है। इसमें शिक्षक व

प्रधानाध्यापक दोनों विद्यालयी नियमों का अनुसरण करते हैं। दोनों में विद्यालय का हित करने व उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने की भावना होती हैं। दोनों ही एक दूसरें के कार्यों मे सहयोगी होते हैं। प्रधानाध्यापक शिक्षकों के सम्पर्क में रहकर, उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को सुनकर निवारण करने का उपाय करते हैं। वे शिक्षकों पर अतिरिक्त मानसिक दबाव नहीं बनाते हैं, शिक्षक भी कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त अपने अन्य कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहते हैं। जैसे–छात्रों की शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में सहायता देना। छात्रों के बुद्धि स्तर के अनुरूप शिक्षकों द्वारा शिक्षण करना। सभी शिक्षकों का मनोबल सदैव समुन्नत रहता है तथा वे विद्यालय हित की सोचते हैं। साथी शिक्षकों से परिवार के सदस्यों की भांति व्यवहार करते हैं।

इसके विपरीत बन्द वातावरण वाले विद्यालयों में प्रधानाध्यापक, शिक्षक, छात्र एवं उपलब्ध परिस्थितियों के बीच सुखद वातावरण नहीं होता हैं। सभी में परस्पर तनाव की स्थिति रहती है। ऐसे वातारण में शिक्षा के स्तर में उन्नति होने के बजाय अवनति होने लगती है। प्रधानाध्यापक व शिक्षक दोनों ही छात्रों की समस्याएं सुनने में रूचि नहीं लेते हैं। शिक्षक भी समय–समय पर अपने प्रधानाध्यापक का उपहास करते हैं। वे विद्यालय प्रशासन के नीतिगत चलने में बाधा उत्पन्न करते हैं। विद्यालय में राजनीति करते हैं। परस्पर शिक्षकों में भी संघर्ष चलता रहता है। उनमें आपस में द्वेष

की भावना रहती है। ऐसे वातावरण से प्रेरित होकर छात्र भी अपने से बड़ों का सम्मान नहीं करते हैं। छात्रों में भी परस्पर हिंसा, द्वेष व घृणा की भावना जागृत रहती है। जिससे हमारा समाज भी बिना प्रभावित हुए नहीं रह पाता है।

'शिक्षक प्रशिक्षण मंजूषा' (1992) के अनुसार विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण दो प्रकार के अवयवों के समन्वय से मिलकर बनता है— प्रथम, भौतिक वातावरण एवं द्वितीय मनोवैज्ञानिक वातावरण। भौतिक वातावरण में विद्यालय की स्थिति, विद्यालय भवन, फर्नीचर, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, कार्यालय, खेल का मैदान एवं शिक्षण सहायक सामग्रियां आते हैं। मनोवैज्ञानिक वातावरण निर्माण करने में विद्यालय के मानवीय संसाधनों की बात कही जाती है। जिसमें प्रधानाध्यापक, शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभाावक आते हैं। अतः विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को एक सूत्र में इस प्रकार बताया जा सकता है—

विद्यालय का संगठनामक वातावरण = विद्यालय के (भौतिक संसाधन+मानवीय संसाधन)

शैक्षिक प्रशासन, नीतियों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की आधारभूत इकाई विद्यालय है। विद्यालय स्तर पर इनकी सफल एवं प्रभावी क्रियान्वयन विद्यालय के प्रधानाध्यापक की योग्यता एवं क्षमता पर निर्भर करता है। प्रधानाध्यापक ही संगठनात्मक वातावरण के तत्व नियोजन, निर्देशन, समन्वय, नियन्त्रण तथा मूल्यांकन का नियामक

व संचालक तथा दिशा निर्देशक होता है जिसे माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने भी मानते हुए कहा है कि–

''शिक्षा के पुनर्निमाण की योजना तब तक सफल नहीं हो सकती है जब तक उसे दूरदर्शिता एवं दक्षतापूर्ण प्रशासित न किया जाये। वास्तव में ऐसा व्यक्ति प्रधानाध्यापक ही होता है जो दूरदृष्टि से शैक्षिक कार्यक्रमों का नियोजन कर सकता है तथा उत्तरदायित्व के साथ क्रियान्वित कर सकता है।'' (माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952–53, पृ0 40)

Jeekhnaykam (1983) के शब्दों में–

"School rise or fall according as the headmaster is good or bad. Great headmaster make great schools. Levels of school depends upon principals so 'Like headmaster like school". (Jeekhankam, 1983, p. 213)

Levoy (1982) के अनुसार प्रधानाध्यापकों को उनके व्यक्तित्व के अनुसार तीन वर्गों में बांटा गया जाता हैं–

1. तानाशाही –

ऐसे प्रधानाध्यापक जो विद्यालय में केवल अपने ही नियम एवं कानून बनाकर सभी से जबरदस्ती पालन करवाते है।

2. मध्यवर्गी–

ऐसे प्रधानाध्यापक विद्यालय के नियमों के अनुसार कार्य करते हैं वह केवल वेतन लेने का दृष्टिकोण अपनाते हैं।

3. लोकतांत्रिक –

ऐसे प्रधानाध्यापकों का स्वभाव लचीला होता है। वे विद्यालय से संबंधित सभी लोगों को स्वीकारते हैं व सभी को विद्यालय में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर देते हैं।

'शिक्षक प्रशिक्षण मंजूषा' (1997) के अनुसार डी.पी.ई.पी. गोण्डा की एक कार्यशाला में जोर दिया गया है कि प्रधानाचार्य शिक्षकों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को समझें व उनका निदान करने का प्रयास करें। उन पर अत्यधिक सख्ती करना ठीक नहीं है। साथ में उन्हें समय–समय पर नई तकनीक युक्त शैक्षिक प्रशिक्षण भी दिलवाते रहना चाहिए।

'एक बेहतर स्कूल की ओर' (1997) नामक पुस्तक में बताया गया है कि अच्छे वातावरण वाले विद्यालयों में शिक्षकों में आपस में अत्यधिक घनिष्ठता रहती है, वे एक–दूसरे के प्रति ईष्या व द्वेष नहीं रखते है एवं एक–दूसरे की आवश्यकतानुसार मदद करते हैं। साथ में यही व्यवहार अपने प्रधानाध्यापकों से भी करते हैं व उनका आदर करते हैं।

Likert (1967) के अनुसार विद्यालयी वातावरण को और अधिक अच्छा बनाने के लिए शिक्षकों को अभिभावकों से समय–समय पर मिलते रहना चाहिए। इसके लिए शिक्षक अभिभावकों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाएं, शिक्षक उनके घर जायें, उन्हें छात्र विकास

विवरण भिजवाएं, विद्यालयी उत्सवों में उन्हें निमंत्रित करें, शिक्षक–अभिभावक सभाएं, अभिभावकों का भी शिक्षण करें। जिसके लिए भाषण, सिनेमा, शो एवं प्रदर्शनी का आयोजन करें। अभिभावकों से छात्रों की व उनकी स्वयं की समस्याओं सुनकर निदान देनें का प्रयास करें, अभिभावकों द्वारा शिक्षकों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोंण रखने पर शिक्षक अपने में नियंत्रण व सहनशीलता लायें बल्कि उन्हें उनके बौद्धिक स्तर में समझायें।

अतः यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को बनाने हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका सर्वाधिक अहम् स्थान रखती है। उसके प्रशासन की नीतियों एवं दूर–दर्शिता से विद्यालय उन्नति करने में सक्षम होता है। अतः उसके द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों से किये जाने वाला अच्छा व उचित व्यवहार विद्यालयी वातावरण को उत्तम बनाने में सहायक होता है। इसी प्रकार विद्यालय में शिक्षकें का साथी शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के साथ आदर पर सहृदयता का व्यवहार होने से विद्यालयी वातावरण स्वस्थ बनता है। जिसमें वे सभी विद्यालय के हित हेतु विद्यालयी कार्यों में संलग्न रहते हैं। उनमें एकजुटता एवं उत्साह रहता है व एक–दूसरे में अत्यधिक निकटता एवं अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता होने के कारण वे व्यक्तिगत व व्यावसायिक समस्याओं को मिलजुल कर सुलझाते हैं व विद्यालय व संगठनात्मक वातावरण सुखद होता है।

जब विद्यालय का वातावरण सुखद होता है तो वहां के

शिक्षक मन लगाकर छात्रों को पढ़ाते हैं, छात्र भी मन लगाकर पढ़ते हैं जिससे छात्रों में शिक्षा व शिक्षकों के प्रति विश्वास जागृत होता हैं और वे अपने शिक्षकों से अत्यधिक ज्ञान पाने के लिए अत्यधिक इच्छुक रहते हैं। अतः छात्रों में शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने हेतु दक्ष शिक्षकों का होना अनिवार्य है।

३. प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
2. शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
3. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
4. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
5. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य—सन्तोष के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
6. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल प्राप्तांको) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

   6.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व

महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.05 प्राथमिक शिक्षा को समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति

अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का

अध्ययन करना।

9.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय के वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

10. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

11. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

12. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

४. प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित उपकल्पनायें निर्मित की गई–

1. पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
6. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल प्राप्तांको) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

   6.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक

प्रभाव नहीं होगा।

6.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.05 प्राथमिक शिक्षा को समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के

कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्ताम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति

अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9: प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय के वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

10. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

11. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

12. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय

वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

५. प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व :

प्राथमिक शिक्षा के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति किस प्रकार की है यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार एक दक्ष शिक्षक की विशेषता उसका अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहना है, क्योंकि शिक्षक अपने सभी कार्यों को सफलता पूर्वक तभी कर सकता है जब वह अपने कार्य से सन्तुष्ट हो। कार्य सन्तुष्टि तथा विद्यालय का वातावरण शिक्षक की मानसिकता को प्रभावित करते हैं, फलतः उसका शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। शिक्षण एक ऐसी कला है, जिसमें शिक्षक की भावनायें, संवेग तथा मानसिकता छात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। अतः यदि शिक्षक अपने कार्य संतुष्ट नहीं है तो वह अपने शिक्षण कार्य के साथ पूरा न्याय नहीं कर पायेगा जो उसके द्वारा शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों के व्यक्तित्व को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा। शिक्षकों की सन्तुष्टि का विस्तार उनके कार्य, उनकी व्यक्तिगत विशेषता और सामाजिक वातावरण जिसमें वह रहता है व कार्य करता है सभी पर आधारित है। अतः प्रस्तुत अनुसन्धान अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

अध्याय–द्वितीय
सम्बन्धित अनुसन्धान
अध्ययन

सम्बन्धित अनुसन्धान अध्ययन

किसी भी राष्ट्र की प्रगति शिक्षा से ही सम्भव होती है। चूंकि प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की नींव होते हैं अतः प्राथमिक विद्यालयों का वातावरण अच्छा होना चाहिए। शिक्षकों में शिक्षक व शिक्षण संबंधी सभी दक्षताएं होनी चाहिए। किन्तु आज विद्यालयों का वातावरण बहुत अमनोवैज्ञानिक दिखाई दे रहा है, साथ में शिक्षकों में दक्षताओं की कमी भी दीख पड़ती है। फलतः शिक्षक कार्य में असंतुष्टि का अनुभव कर रहें हैं आज प्राथमिक शिक्षा जगत की यह महत्वपूर्ण समस्याएं हैं जिन्हें जानने व पहचानने हेतु लगातार शोध किये जा रहे हैं। प्रस्तुत शोध भी एक ऐसा ही प्रयास है जिसमें विद्यालयों के वातावरण, शिक्षकों की दक्षता व उनकी कार्य–सन्तुष्टि के स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया जायेगा। चूंकि शोध के स्वरूप को निर्धारित करने हेतु एवं शोध–क्रिया कलापों की दिशा निश्चित करने हेतु शोध समस्या सम्बन्धी साहित्य का सर्वेक्षण और संबंधित पूर्ण–निष्कर्ष, शोधकर्ता को एक निश्चित दिशा प्रदान करने में सहायक होते हैं। इस हेतु प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित अनेक सिद्धान्त एवं अन्य शोधकर्ताटों के निष्कर्षित तथ्य एवं दृष्टिकोण यहां प्रस्तुत है :–

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का संबंध शिक्षकों की दक्षता व उनकी कार्य–सन्तुष्टि द्वारा ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। फलतः इन्हीं सम्बन्धों के आधार पर संबंधि

ात अध्ययनों के पुनरावलोकन करने के प्रयास निम्नवत् वर्गीकरण करके किया गया है–

1. प्राथमिक शिक्षा के अभिवृत्ति से सम्बन्धित अध्ययन

2. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से संबंधित अध्ययन।

3. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण व शिक्षक दक्षता के मध्य संबन्धों से संबंधित अध्ययन।

4. विद्यालयों के सगठनात्मक वातावरण व शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि के मध्य सम्बंधो से संबंधित अध्ययन।

5. शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि व दक्षाता के मध्य संबन्धों से संबधित अध्ययन।

१. प्राथमिक शिक्षा के अभिवृत्ति से सम्बन्धित अध्ययन

वर्ष 1981 में **रामलखन विश्वकर्मा** द्वारा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु भारतीय संविधान में उल्लिखित प्राथमिक शिक्षा की उपलब्धियां एवं समस्याओं शीर्षक से एक शोध प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने उ0प्र0 के बुन्देलखण्ड सम्भाग में प्राथमिक शिक्षा के विकास की गति धीमी होने के कारण वहां भी सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को माना।

वर्ष 1981 में पटना वि.वि. में **एस.एन. सिंह** द्वारा प्रोग्रेस एण्ड प्रोब्लम्स आफ प्राइमरी एजूकेशन इन बनारस डिस्ट्रिक

पर अपना शोध प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राथमिक स्तर पर स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम बनाये जाने हेतु अपने सुझाव दिये। उन्होंने पाया कि लगभग 50 प्रतिशत छात्र आर्थिक रूप से तंग होने के कारण अनिवार्य शिक्षा का लाभ नहीं उठा पाते है। अतः उन्हें छात्रवृत्ति देने के साथ साथ परिवार की सुरक्षा एवं भरण पोषण हेतु समुचित धनराशि राज्य सरकार द्वारा प्रदान की जानी चाहिए।

वर्ष 1984 में इस्लामियां वि.वि. में **ए. आचार्य** द्वारा कम्पलसरी प्राइमरी एजूकेशन इन आंध्रप्रदेश शीर्षक से अपना शोध प्रस्तुत किया गया। इन्होंने पाया कि प्राथमिक शिक्षा के समुचित विकास हेतु गरीब या निर्धन छात्रों को दोपहर का भोजन दिया जाना चाहिए जिससे उनका मन पढ़ाई में लगेगा और वह संविधान में उल्लिखित अनिवार्य शिक्षा का लाभ उठा सकेगें।

वर्ष 1986 में मैसूर यूनीवर्सिटी **एम. वी. विश्वास** द्वारा ए स्टडी आफ कैरीकुलम आफ प्राइमरी एजूकेशन शीर्षक से पी.एच. डी. उपाधि हेतु शोध प्रस्तुत किया गया। जिसमें उन्होंने पाया कि छात्रों को परीक्षा में जो प्रश्न पत्र दिये जाते है वह केवल उनका पुस्तकीय ज्ञान ही दर्शाते हैं जबकि अन्य तार्किक एवं वैचारिक महत्व के कारणों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसके साथ–साथ उन्होंने पाया कि प्राथमिक स्तर पर जो पाठ्यक्रम निर्धारित है वह अत्यधिक बोझिल है जिसके कारण छात्रों में मानसिक थकान आ

जाती है और वह पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं।

एन.सी.आर.टी. के **रामचन्द्रन (1985)** द्वारा सबके लिये शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त किये गये । भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रमुख लक्ष्य प्राथमिक शिक्षा का प्रसार तथा प्रौढ़ शिक्षा प्रदान करना रहा है। परन्तु अभी भी जो लक्ष्य हमने प्राप्त किये हैं वह सन्तोषजनक नहीं हैं तथा सभी के लिये शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि तथा अर्थ की कमी के कारण यह लक्ष्य हम प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। प्रारम्भिक चरण में उंपयुक्त शिक्षा के अभाव में तथा उपयुक्त प्रशासनिक क्षमता के बिना व संसाधनों के अभाव में शिक्षा सभी को उपलब्ध नहीं हो सकी है। जन सहयोग से ही सबके लिये शिक्षा का उद्देश्य प्राप्त किया जा सकताा है।

बेलवाल (1985) द्वारा प्रशासनिक शैली के सन्दर्भ में स्कूल के वातावरण का अध्ययन 36 प्रधानाचार्य तथा 470 विद्यार्थियों पर किया गया। प्रजातान्त्रिक तथा निरंकुश प्रशासनिक शैली के मध्यं सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। निरंकुश प्रशासनिक शैली के अपेक्षा प्रजातान्त्रिक प्रशासन शैली अधिक सकारात्मक प्राप्त हुई। **भूषण तथा प्रसाद (1986)** द्वारा प्राथमिक शिक्षकों के स्कूल स्तर के साथ उनके आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन 400 स्कूल शिक्षकों पर किया गया। परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि सभी शिक्षकों का आकांक्षा स्तर अत्यधिक उच्च था, किन्तु प्राथमिक

शिक्षकों की अपेक्षा माध्यमिक स्तर के शिक्षको का आकांक्षा स्तर अधिक उच्च प्राप्त हुआ। इसी प्रकार माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यवासायिक आकांक्षा भी अधिक उच्च स्तर की प्राप्त हुइ। महिला तथा पुरूष शिक्षकों की आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ। प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तथा महिला शिक्षकों की अपेक्षा माध्यमिक स्तर के पुरूष शिक्षकों की आर्थिक आकांक्षा अधिक उच्च स्तर की प्राप्त हुई।

नागमणि तथा राजेश्वरी (1987) द्वारा उन कारकों को जानने के प्रयास किया गया जिनके कारण 7 से 12 वर्ष की छात्रायें स्कूल छोड़ जाती हैं। हैदराबाद 100 ऐसी लड़कियों पर किये गये अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश 33 प्रतिशत लड़कियां अपने अभिभावकों के कारण स्कूल छोड़ जाती हैं। 30 प्रतिशत स्वास्थ्य के कारण तथा 30 प्रतिशत परीक्षा के भय से स्कूल जाना बन्द कर देती हैं। 68 प्रतिशत लड़कियों के अभिभावकों ने लड़कियों से स्कूल जाना बन्द करने के लिये कहा जबकि 57 प्रतिशत अभिभावकों ने यह भी इच्छा व्यक्त की कि वे स्कूल जाना छोड़ कर घर के कामों में सहयोग करें। 93 प्रतिशत माताओं (जिनके घर के सदस्य 6 से 8 थे) ने यह चाहा कि स्कूल जाना बन्द करें।

शर्मा (1987) द्वारा 5 से 9 तथा 10 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं के स्कूल नामांकन गति तथा जनसंख्या वृद्धि गति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि स्कूल नामांकन गति निम्नस्तर की प्राप्त हुई। यह निम्नस्तर की गति

विशेष रूप से बालिकाओं की अधिक प्राप्त हुई जिन राज्यों में जनसंख्या वृद्धि गति नियन्त्रित प्राप्त हुई वहां स्कूल नामांकन गति भी अधिक प्राप्त हुई। निष्कर्ष रूप में अनुसन्धान द्वारा ज्ञात हुआ कि जनसंख्या वृद्धि गति विकास पर अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से बालक–बालिकाओं के आयु से प्रभावित होता है।

सिन्हा तथा मिश्रा (1988) द्वारा 240 ग्रामीण व 240 शहरी बालकों के स्कूल तथा धर्म का तुलनात्मक अध्ययन किया। बालकों के स्कूल (सामान्य तथा विशिष्ट), धर्म (ईसाई तथा गैर–ईसाई) तथा बालकों की आयु का प्रभाव सार्थक रूप से विभेद करता है। **शास्त्री तथा मोहित (1989)** प्राइमरी स्कूल के बालकों तथा उनकी माताओं का अध्ययन कर महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किये। बालकों के गृह सम्बन्धी परिवर्तियों तथा उनकी पढ़ाई के मध्य निश्चित सम्बन्ध प्राप्त हुआ। जो मातायें अपने बालकों के अध्ययन से सम्बन्धित थीं वे बालक के लाभप्रद कार्यक्रम में भाग लेने के लिये अधिक तत्पर थीं। अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि यदि माताओं को अधिक जागरूक किया जाये तब वे अपने बालकों की शिक्षा के प्रति अधिक गम्भीर होंगी।

मिनोचा (1992) द्वारा प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम सुधार के सम्बन्ध में अध्यापकों की प्रतिक्रियायें जानने के उद्देश्य से सर्वेक्षण किया गया। यह सर्वेक्षण 15 विद्यालयों के 90 अध्यापकों पर किया गया। अध्यापकों का विचार था कि गणित की पुस्तकों की पाठ्य सामग्री मे कटौती की जाये। विभिन्न विषयों की पाठ्य

पुस्तकों में बच्चों के आयु वर्ग को देखते हुए शब्द अत्यन्त क्लिष्ट तथा अत्यन्त कठिन व नीरस प्राप्त हुए। 14 प्रतिशत अध्यापकों के पाठ्यक्रम को भारस्वरूप माना। अध्ययन में पाया कि 21 प्रतिशत अध्यापकों को नये पाठ्यक्रम का कोई प्रशिक्षण नहीं दिया गया जबकि 37 प्रतिशत अध्यापक ऐसे थे जो दो–दो बार प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। अध्यापकों की मानसिकता बच्चों पर निर्णायक प्रभाव डालती है। अध्यापक की सामाजिक व शैक्षिक पृष्ठभूमि एक महत्वपूर्ण घंटक है। 51–60 वर्ष आयु वर्ग के अध्यापक पाठ्यक्रम हेतु कम उपयुक्त पाये गये। 31 प्रतिशत अध्यापक पाठ्यक्रम के पक्ष में नहीं थे। बी.एड. तक शिक्षा प्राप्त अध्यापकों में पाठ्यक्रम के प्रति स्वीकृति का भाव अधिक दृष्टिगत हुआ।

कुलश्रेष्ठ (1992) द्वारा बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने 14 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा उंपलब्ध करवाने का मूल संकल्प लिया था। प्रत्येक बच्चा एक निश्चित स्तर के अधिगम को अनिवार्य रूप से प्राप्त करें। प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं की संख्या काफी कम रही है। इसका प्रमुख कारण महिलाओं के विकास की ओर अपेक्षाकृत उपेक्षावृत्ति का होना रहा है। विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति अधिक शोचनीय है। प्राथमिक स्तर से ही छात्राओं के लिये उनकी आवश्यकताओं पर आधारित ऐसा पाठ्यक्रम अपनाया जाये जो उन्हें स्वतन्त्र और आत्म–विश्वासी व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने में सहायक हो।

ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिये जो कि विशेषतः ग्रामीण बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक हो सके। पाठ्य-क्रम, पाठ्य पुस्तकें और उपलब्ध करवाये जाने वाली साधन-सुविधाओं में बालक और बालिकाओं में किसी प्रकार का अन्तर या भेदभावपूर्ण व्यवहार परिलक्षित नहीं होना चाहिये। बालिकाओं के लिये विद्यालय दूर नहीं होना चाहिए।

रेड्डी (1993) द्वारा 'सब के लिये शिक्षा' की समस्या का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार सब के लिये शिक्षा कार्यक्रम की सफलता शिक्षा विकास में एक महत्वपूर्ण सफलता मानी जायेगी। यद्यपि प्राथमिक शिक्षा में स्कूल छोड़कर जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है तथा प्रौढ़ शिक्षा गति निम्न हुई है। लड़के व लड़कियों में अन्तर तथा शहर व ग्रामीणों में दूरी के कारण सबके लिये शिक्षा कार्यक्रम सफल नहीं हो सका है। अधिकारियों, अभिभावकों तथा अध्यापकों की उपयुक्त अभिवृत्ति के अभाव में तथा राजनैतिक इच्छा के बिना सबके लिये शिक्षा कार्यक्रम सफल नहीं हो पा रहा है।

जोसेफ (1993) द्वारा प्राइमरी शिक्षा सबके लिये की असफलता के कारणों का विवेचन किया। उनके अनुसार राजनैतिक इच्छाशक्ति तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यों के अभाव में एवं गरीबी व सुविधाओं के अभाव के कारण सभी को शिक्षा प्रदान करना सफल नहीं हो सका है। धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों के कारण भी सब के लिये शिक्षा प्रदान करने में बाधा उत्पन्न होती है। इसी

प्रकार के विचार नायक (1994) द्वारा भी प्रस्तुत किये गये हैं।

रेड्डी (1993) द्वारा सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया। उनके अनुसार एक ऐसा स्कूल होना चाहिये जिसमें मानव आदर्श रूप में विकसित हों तथा साक्षर संस्कृति को विकसित किया जाये। बालक को बाधक संस्कृति व परम्पराओं से दूर रखते हुए उसे पढ़ना व लिखना सिखाया जाये। **पंडा, साहू तथा साहू (1995)** द्वारा विद्यार्थियों पर अध्ययन कर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय का वातावरण सार्थक रूप से प्रभावित करताा है।

उमा देवी तथा वैंकट रमैया (1996) द्वारा प्राथमिक स्कूल के ग्रामीण शिक्षकों की अध्यापन के प्रति कुशलता व अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। आन्ध्र प्रदेश के मेढ़क जनपद के 75 पुरूष शिक्षकों की अध्यापन के प्रति कुशलता तथा अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि अध्यापक औसत स्तर की अभिवृत्ति रखते हैं तथा निम्न स्तर की निपुणता रखते हैं। **भट्ट (1997)** द्वारा प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत आशान्वित तथा वास्तविक स्थिति का अध्ययन किया गया। **आनन्द (1998)** द्वारा प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों की प्रभावशीलता में वृद्धि करने के उद्देश्य से 880 शिक्षकों पर अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अधिकांश रूप से व्यक्तिगत कारणों पर अधिक निर्भर करती है। स्कूल में कार्य करने की स्थिति तथा स्कूल में प्रकार का भी प्रभाव अध्यापकों की

कार्य संतुष्टि को प्रभावित करता है।

मिश्रा तथा पाधन (1998) द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति, अभिभावकों की शिक्षा, आर्थिक स्थिति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुआ कि शैक्षिक आकांक्षा तथा अभिभावकों की आर्थिक स्थिति के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ। छात्राओं की अपेक्षा छात्र पढ़ाई के लिये अधिक इच्छुक थे। इसी प्रकार अनुसूचित जन जाति की अपेक्षा अनुसूचित जाति के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखते है। **मंजू (1998)** द्वारा 514 हाईस्कूल के विद्यार्थियों की स्कूल वातावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्र तथा छात्राओं के स्कूल के वातावरण के प्रति प्रत्यक्षीकरण के मध्य सार्थक अन्तर है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का अपने स्कूल वातावरण के प्रति अधिक सकारात्मक विचार था।

किशोर (1998) द्वारा 30 प्राइमरी शिक्षकों पर अध्ययन कर पाया गया कि शिक्षकों द्वारा कार्य कर सीखना सर्वाधिक पसन्द किया गया। **ग्यानानी तथा अग्रवाल (1998)** द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कक्षा के वातावरण, अध्यापक के नेतृत्व व्यवहार तथा अपेक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन किया गया। परिणामों द्वारा स्पष्ट हुआ कि कक्षा के वातावरण, अध्यापक के नेतृत्व व्यवहार तथा अपेक्षायें सार्थक रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं।

शकुन्तला तथा सवापथी (1999) द्वारा 240 अध्यापकों के समायोजन तथा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जिन अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक प्राप्त हुई। उनका समायोजन भी अधिक उच्च स्तर का प्राप्त हुआ। निज अध्यापकों की अध्यापन के प्रति उच्च रूचि थी उनका समायोजन सार्थक रूप से अधिक प्राप्त हुआ। महिला अध्यापकों की अपेक्षा पुरूष अध्यापक सार्थक रूप से कम समायोजित पाये गये। प्राइवेट सहायता प्राप्त संरकारी स्कूल के अध्यापक अधिक समायोजित थे। अविवाहित की अपेक्षा विवाहित अध्यापक अधिक समायोजित प्राप्त हुए। पुराने अध्यापकों की अपेक्षाा युवा अध्यापक अधिक समायोजित थे।

उपाध्याय तथा सिंह (2001) द्वारा भोपाल के अध्यापकों के व्यावसायिक प्रतिबल का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा परिणाम ज्ञात हुए कि प्राइमरी शिक्षकों में अधिक कार्य होने के कारण व्यावसायिक प्रतिबल अधिक है। कालेज शिक्षकों की अपेक्षा प्रांइमरी शिक्षकों में अधिक व्यावसायिक प्रतिबल प्राप्त हुआ।

२. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से संबंधित अध्ययन—

किसी भी विद्यालय की अच्छी उपलब्धि हेतु विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण सर्वाधिक उत्तरदायी होता है। विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण से तात्पर्य विद्यालय के संगठनात्मक व्यक्तित्व

(Organisational Personality) से लगाया जाता है जिसे बनाने में विभिन्न घटक प्रधानाध्यापक एंव शिक्षक आदि विद्यालय में उपलब्ध परिस्थितियों में अपना पूर्ण सहयोग देते हैं। जैसे प्रधानाध्यापकों का शिक्षकों व छात्रों से, शिक्षकों का प्रधानाध्यापक, साथी शिक्षक व छात्रों से उचित व अपेक्षित व्यवहार। साथ ही इन सभी का वहां की उपलब्ध परिस्थितियों के साथ संबंध विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को अत्यधिक पुष्ट करते हैं, जिसको विभिन्न शिक्षाविदों ने अपने अध्ययनों के द्वारा इस प्रकार पुष्टि की है–

K.J. Brown (1984) ने एरीजोना के 1672 सेकेन्डरी विद्यालयों में अनुशासन की समस्याओं के कारणों को जानने का प्रयास किया जिस कारण विद्यालयों का वातावरण प्रभावित रहता है। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि श्वेत वर्ण वाले विद्यार्थी व शिक्षक श्याम वर्ण वाले विद्यार्थियों से उचित व्यवहार नहीं करता है फलतः अनुशासन की समस्या रहती है व विद्यालय बन्द रहते हैं शिक्षकों व छात्रों में गुट बने होते हैं जिनमे परस्पर संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। जिससे सदैव कार्यमुक्त विद्यालयी वातावरण बना रहता है।

C. Eugene (1984) ने अपने शोध में विद्यालयों के वातावरण को अच्छा बनाये रखने के लिए प्रधानाध्यापकों द्वारा शिक्षकों को पृष्ठपोषण देने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर कार्य कियां। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि उत्पादन के लिए झुकाव (Production Emphsis) नामक आयाम प्रधानाध्यापकों का अति आवश्यक गुण होता है।

जिससे विद्यालय की उपलब्धि उच्च होती है। अच्छी उपलब्धि हेतु प्रधानाध्यापक प्रशासनिक कार्यों के साथ–साथ शिक्षकों के शिक्षण कौशलों की जांच करते रहते हैं व उन्हें अपने कौशलों को बढ़ाने के विभिन्न अवसर भी देते हैं। शिक्षकों द्वारा हुई गलतियों को उन्हें समझाते हैं। सभी शिक्षकों को उनके दायित्वों के बारे में पहले से ही बता देते हैं व अपने दायित्वों का पालन न कर पाने वाले शिक्षकों को सावधान भी करते रहते हैं।

S.C. Melendrez, (1985) ने खुला वातावरण व बन्द वातावरण वाले विद्यालयों की कक्षाओं पर अध्ययन किया। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि खुला वातावरण वाले शिक्षकों की कक्षाओं में भी खुला वातावरण होता है। इन कक्षाओं में छात्रों को अपनी किसी भी समस्या से संबंधित प्रश्न पूछने का अधिकार रहता है। छात्रों की समस्याओं का तुरंत निदान किया जाता है। शिक्षक कक्षा में लगातार छात्रों की जिज्ञासाओं को शिक्षक तुरंत शान्त करते हैं शिक्षक सभी छात्रों से एक समान व्यवहार करते हैं। बन्द वातावरण वाले विद्यालयों की कक्षाओं में इसके विपरीत स्थिति रहती है।

N.H. Mistry (1985) ने सूरत शहर के 100 विद्यालयों के 848 शिक्षकों के शोध करके विद्यालयों के वातावरण का पता लगाया। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि 100 में से 38 विद्यालयों में सभी प्रकार की सुविधाएं छात्रों व शिक्षकों हेतु उपलब्ध रहती हैं फलतः ये विद्यालय धनी विद्यालयों की श्रेणी में आते हैं। 26

विद्यालयों की स्थिति अत्यधिक दयनीय है क्योंकि यहां दैनिक उपभोग की सामान्य सुविधाएं भी छात्रों व शिक्षकों को नहीं मिल पाती है अतः ये निर्धन विद्यालयों की श्रेणी में आते है, 36 विद्यालयों में स्थिति सामान्य है। इन सभी विद्यालयों का वातावरण ज्ञात किया गया जिसमें धनी विद्यालयों का वातावरण खुला है निर्धन विद्यालय बन्द वातावरण वाले है सामान्य विद्यालयों का वातावरण भी सामान्य है जिसके अन्तर्गत यह विद्यालय न ही खुले वातावरण वाले हैं इनमें दोनों वातावरणों के बीच की स्थिति विद्यमान रहती है।

V. Barraiyah (1985) ने गुजरात के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु न्यादर्श में 100 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 प्रधानाध्यापक व 500 शिक्षकों को स्थान दिया गया था। अध्ययन के परिणामों के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि 27 विद्यालयों में खुला वातावरण था, 11 विद्यालयों में नियंत्रित वातावरण था, 13 विद्यालयों में सामान्य वातावरण था और 35 विद्यालयों में बंद वातावरण था। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ कि 100 विद्यालयों में 45 विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अपने विद्यालयों को निरंतर प्रगति दिलाने हेतु प्रयासरत हैं। अतः वे प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता (Effective Leader) की श्रेणी में आते हैं। इसके विपरीत 30 विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अप्रभावशाली नेतृत्वकर्ता (Ineffective Leader) की श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे विद्यालयों की प्रगति की तरफ प्रयासरत नहीं रहते हैं। अध्ययन द्वारा

यह भी ज्ञात हुआ कि ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के वातावरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

L. Anthony (1987) ने ओमाहा शहर के कैथोलिक प्राथमिक विद्यालयों पर शोध किया। शोध द्वारा ज्ञात किया कि जब शिक्षक प्रधानाध्यापकों से अच्छा सम्बन्ध रखते हैं व विद्यालय व प्रधानाध्यापको के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा व वफादारी दिखाते हैं। तब विद्यालय का वातावरण अधिक अच्छा बनता है। ऐसे विद्यालयों में प्रधानाध्यापक शिक्षकों की अपने प्रति वफादारी प्राप्त करे में तभी सफल होते हैं जब वे शिक्षकों की परवाह करते हैं, आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों को छूट भी देते हैं एवं शिक्षकों को व्यक्तिगत व सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।

H. Ariene (1987) ने मेसाच्युसेट के ऐसे सेकेन्डरी विद्यालयों पर अध्ययन किया जिनका वातावरण बहुत ही अच्छा है और पाया कि इन विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों में नेतृत्व की पूर्णरूपेण कुशलता होने से सिर्फ छात्रों की उपलब्धि ही अच्छी नहीं होती साथ में वे विद्यालय शिक्षा से समाप्ति के बाद जल्दी ही नौकरी प्राप्त करने में सफल होते हैं

H. Elizabeth (1987) ने फिलीपीन्स के नेब्रास्का शहर के 532 विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों पर एक शोध किया। शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि विद्यालयी वातावरण को अच्छा बनाने हेतु प्रधानाध्यपकों का अत्यधिक अनुशासनात्मक व सख्ती का तरीका

आवश्यक होता है। शोधकर्ता ने यह ज्ञात किया है कि अच्छे विद्यालयी वातावरण में प्रधानाध्यापक विद्यालयों में सभी के साथ नियम व सख्ती के साथ व्यवहार करते हैं साथ में स्वयं भी नियमों से बंधकर विद्यालय का संचालन करते हैं ऐसे विद्यालयों में अनुशासन व नियम सभी पर एक समान लागू रहते हैं।

C. Patrick (1988) ने फेयरले शहर के प्राथमिक विद्यालयों पर एक शोध किया। यह शोध कार्य प्राथमिक विद्यालयों के वातावरण पर आधारित था। शोधकर्ता ने यह ज्ञात किया कि जिन विद्यालयों में शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के सभी कार्य विद्यालय की प्रगति के लिए होते हैं वे सभी मिलकर एक साथ विद्यालयी कार्य करते हैं, निरन्तर लेखन व अनुसंधान कार्य करते रहते है वहां विद्यालयों का वातावरण 'धनात्मक' होता हैं, इन विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति अच्छी होने के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों की उपलब्धि भी अच्छी होती है।

F. John (988) ने मिनेसोटा के सेकेन्डरी विद्यालयों पर शोध सम्पादित किया शोधकर्ता ने विद्यालयी वातावरण को उत्तम बनाने हेतु प्रधानाध्यापकों के कुछ मुख्य कौशलों की खोज की। वे कौशल निम्नलिखित हैं– प्रथम प्रधानाध्यापकों का छात्रों व शिक्षकों से आत्मीयता का व्यवहार, द्वितीय नियम व कानून के आधार पर चलना, तृतीय विद्यालय में सभी की जरूरतों व सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं का ध्यान रखना।

M.C. Bruster (1988) ने सैन फ्रांसिस्कों के प्राथमिक विद्यालयों पर शोध किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा प्रधानाध्यापकों की उन दक्षताओं का पता लगाया जिससे उनका विद्यालय अत्यधिक प्रभावी बनता है। प्रधानाध्यपकों की 2 प्रमुख दक्षताएं ज्ञात हुई, पहली विद्यालय में धनात्मक वातावरण को सदैव बनाये रखना और दूसरी प्रधानाध्यापकों का व्यवसाय के प्रति झुकाव व अभिवृत्तियां।

J. Michell (1988) ने विसकांन्सिन के 67 विद्यालयों के संगठनात्मक स्वास्थ्य (Organisational Health) का विद्यालय के संरचनात्मक ढांचे, विद्यालयों के आकार, शिक्षक प्रशिक्षण का तरीका, शिक्षकों का शैक्षणिक तरीका, शैक्षणिक अनुभव आदि के आधार पर अध्ययन किया परिणामतः यह ज्ञात हुआ कि :— विद्यालय में शिक्षक व प्रधानाध्यापक नियमों का पालन करते हुए एक दूसरे से मित्रवत् व्यवहार करते हैं व विद्यालय की उपलब्धि हेतु सदैव कार्य करते हैं। विद्यालय में सभी छात्रों के बैठने हेतु उचित व्यवस्था, हवादार, रोशनी से युक्त कक्ष, शिक्षकों के लिए आवश्यकतानुसार कक्षों की संख्या, प्रयोगशालाएं व क्रीड़ा स्थल की व्यवस्था होने से सभी शिक्षक मानसिक व शारीरिक तनाव से मुक्त रहते है। शिक्षकों द्वारा सदैव नई युक्तियों से शिक्षा करने के लिए विद्यालय में ही शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था रहती है। साथ में यह भी ज्ञात हुआ कि जो शिक्षक व प्रधानाध्यापक अधिक अनुभवी होते हैं वे अपने अनुभव द्वारा विद्यालयी वातावरण को सदैव अच्छा बनाये रखते हैं।

S.J. Erren (1988) ने दक्षिणी कैलिफोर्नियां के हवाई शहर के सेकेन्डी विद्यालय के शिक्षकों द्वारा प्रत्यक्षीकृत प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व के व्यवहार व विद्यालय के वातावरण के संबंध पर शोध किया। शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि सभी विद्यालयों का वातावरण अच्छा है। इनमें शिक्षकों का मनोबल समुन्नत रहता है। शिक्षक आपस में व प्रधानाध्यापकों से मित्रवत् व्यवहार (Friendly Behaviour) करते हैं। इन शिक्षकों ने अपने द्वारा प्रत्यक्षीकृत प्रधानाध्यपाकों के व्यवहार के विषय मे बताया कि उनके प्रधानाध्यपक प्रभावी रूप से विद्यालय को प्रगति के मार्ग पर ले जाने हेतु प्रयास करते हैं। प्रधानाध्यापक शिक्षकों से सदैव मानवता का व्यवहार करते हैं प्रधानाध्यपक शिक्षकों के कार्यो में व्यवधान नहीं डालते हैं। जिस कारण विद्यालय का वातावरण अच्छा रहता है।

J.P. Earlene (1989) ने ऑगबर्न शहर के 100 प्राथमिक विद्यालयों के 200 शिक्षकों पर अध्ययन किया। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि 65 प्रतिशत विद्यालयों के शिक्षकों में आपस में द्वन्द्व (Conflict) रहता है। 80 प्रतिशत विद्यालयों में शिक्षकों का प्रधानाध्यापक के साथ द्वन्द्व रहता है। द्वन्द्व होने के कारण विद्यालय में शिक्षकों के वेतन में विसंगतियां, सभी शिक्षकों को बराबर से सम्मान न मिलना व योग्यता के अनुसार पद न मिलना आदि है। द्वन्द्व होने के कारण विद्यालय का वातावरण सर्वाधिक प्रभावित होता है। साथ में छात्र उपलब्धि भी प्रभावित होती हैं।

J. David (1990) ने अलबामा राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों में आपस में द्वन्द्व रहने के परिणामों पर शोध करके ज्ञात किया कि शिक्षकों का प्रधानाध्यापकों से अच्छा व्यवहार नहीं रहता है। छात्रों की उपलब्धि प्रभावित होती है। विद्यालय का वातावरण शिक्षकों के आपसी संघर्ष के कारण खराब रहता है।

B. Gertude (1990) ने बेनेजुएला, फिलाडेल्फिया व पिट्सवर्ग के 200 विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, सुपरिन्टेन्डेन्ट्स व शिक्षकों के द्वारा प्रधानाध्यापकों के उन नेतृत्व के व्यवहारों (Leadership Behaviour) का पता लगाया जिससे विद्यालय का वातावरण पुष्ट होता है। वे व्यवहार निम्नवत् हैः— प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यालय में आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों व छात्रों हेतु नियमों में थोड़ी ढील भी दी जाती है। प्रधानाध्यापक सदैव विद्यालय की प्रगति हेतु विभिन्न निर्णय लेते रहते हैं। विद्यालय में सदैव नियमों व समय से कार्य करना ज्यादा पसंद करते हैं। जिससे विद्यालय में अनिश्चितता की स्थिति नहीं आने पाती है।

J.Putnum (1990) ने मिशिगन के मिडिल स्कूलों के विद्यालयी वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों पर अध्ययन किया और पाया कि अधिक शैक्षणिक अनुभव व अधिक आयु के शिक्षक विद्यालयी वातावरण को अत्यधिक पुष्ट बनाते हैं। महिला—शिक्षक पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा विद्यालयी वातावरण अच्छा बनाती हैं।

C.M. Laughlin (1990) ने अमेरिका के ओहाये राज्य के 570 विद्यालयों पर एक शोध किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि विद्यालयी वातावरण को स्वस्थ बनाने हेतु महिला शिक्षकों को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वे कठिनाइयां उनकी आयु, वर्ण, अत्यधिक पारिवारिक दायित्व, साथियों अथवा कर्मचारियों का कम सहयोग मिल पाने के कारण होती है।

A.S. Suliman (1991) ने साऊदी अरब के हेल जिले में 39 मिडिल विद्यालयों में (19 boys, 20 girls schools) प्रधानाध्यापकों के व्यवहार व विद्यालय के वातावरण के बीच संबंधों का पता लगाया। निष्कर्ष यह रहा कि जिन विद्यालयों में प्रधानाध्यापक शिक्षकों से बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं व उनसे मिलकर एक परिवार का वातावरण बनाते हैं। वहां 'खुला वातावरण' होता है। शोध द्वारा यह भी पता चला कि जहां कम खुला वातावरण था वहां परिस्थियितों खुला वातावरण के विपरीत थीं।

J. Arther (1991) ने मिसूरी राज्य के पब्लिक एलीमेन्टरी विद्यालयों के 100 प्रधानाध्यपक व 500 शिक्षकों पर शोध किया। शोधकर्ता ने अपने शोध में विद्यालयों के शिक्षकों व प्रधानाध्यापकों के द्वारा प्रत्यक्षीकृत उन आयामों को ज्ञात किया जो विद्यालय के वातावरण पर अपना अनुकूल प्रभाव डालते हैं। वे आयाम निम्नलिखित हैं:– जैसे प्रधानाध्यापकों व शिक्षकों का लिंग, विद्यालयों में शिक्षकों व प्रधानाध्यापकों का कार्यकाल एवं आयु, विद्यालयों में शिक्षकों व

छात्रों का उचित अनुपात। शोधकर्ता ने यह ज्ञात किया कि महिला प्रधानाध्यापक विद्यालय में अनुशासन बनाये रखने में ज्यादा सक्षम हैं व नियमों का पालन स्वयं भी करती हैं व शिक्षकों से करवाती हैं। महिला शिक्षक पुरूष शिक्षकों से ज्यादा अनुशासित हैं। विद्यालय में जो प्रधानाध्यापक ज्यादा लम्बे समय से कार्यरत हैं या अधिक आयु के हैं उन्हें अनुभव ज्यादा होने के कारण अपने कार्यों में ज्यादा दक्ष हैं। जिन विद्यालयों में छात्र संख्या ज्यादा व शिक्षक कम पाये गये वहां अनुशासन की सर्वाधिक समस्या व्याप्त है।

M.M. Nell (1993) ने विद्यालय के मनोवैज्ञानिक वातावरण व संस्थागत व्यवहार के संबंधों पर एक शोध किया। शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि जब कभी छात्र व शिक्षक आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं के कारण विद्यालय में अनुपस्थित रहते हैं। तब संस्था के तरफ से उनकी समस्याओं का निदान न करके छात्रों व शिक्षकों पर बहुत सख्त कार्यवाही की जाती है जैसेः— शिक्षकों का वेतन काटना, छात्रों को एक कक्षा नीचे उतार देना, छात्रों व शिक्षकों को विद्यालय से निकाल देने आदि से विद्यालय में सदैव भय की स्थिति रहती है। ऐसे विद्यालयों का वातावरण अस्वस्थ कहलाता है। दूसरी तरफ स्वस्थ विद्यालयी वातावरण में छात्रों व शिक्षकों की समस्याओं को जानकर उनके कारणों को खोज की जाती है। अनुशासन की समस्या आने पर सभी शिक्षक व प्रधानाध्यापक मिलकर सुलझाते हैं। छात्रों के कार्यों को पुरस्कारों से प्रोत्साहित किया जाता है व

शिक्षकों को प्रधानाध्यापक द्वारा पृष्ठपोषण भी दिया जाता है।

B. Boon (1995) ने अलबामा राज्य के 480 शिक्षकों पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्रधानाध्यापकों के वास्तविक निरीक्षित व्यवहार (Actual supervisory behaviours) तथा शिक्षकों के अनुसार प्रधानाध्यापकों के निरीक्षित व्यवहार (Teacher's preffered supervisory behaviour) का पता लगाना। शोध द्वारा उन्होंने यह ज्ञात किया कि सभी शिक्षक प्रधानाध्यापकों द्वारा अपना प्रत्यक्ष निरीक्षण चाहते हैं। अप्रत्यक्ष निरीक्षण को सभी शिक्षकों ने नकारा है। महिला शिक्षकों ने पुरूष प्रधानाध्यापकों द्वारा अपने ऊपर अत्यधिक निरीक्षण को प्रत्यक्षीकृत किया। सभी शिक्षकों ने प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा विद्यालय के वातावरण को अत्यधिक पुष्टि मिलने की बात कही है।

W. James (1996) ने ओरिगोन के 40 विद्यालयों के 750 शिक्षकों पर अध्ययन किया। अध्ययन द्वार यह तथ्य ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण को अच्छा प्रगतिशील व प्रभावशाली बनाने के लिए केवल प्रधानाध्यापक ही उत्तरदायी नहीं रहता बल्कि कुछ अन्य अवयव जैसे विद्यालयों में शिक्षकों का अनावश्यक रूप से स्थानान्तरण न होना, जिससे उनमें व्यवसाय के प्रति असुरक्षा की भावना नहीं आने पाती है।

N. Nandita (2000) ने जम्मू के 10 सरकारी व 10 प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण पर एक सर्वेक्षण

किया। निष्कर्ष द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में सभी शिक्षकों को सरकार की तरफ से निश्चित मात्रा में वेतन मिलते रहने से वे विद्यालय व छात्रों की शिक्षा–दीक्षा को ज्यादा महत्व नहीं देते व सदैव कार्यमुक्त रहना पसंद करते हैं व विद्यालय का वातावरण नीरस सा रहता है। इन विद्यालयों में छात्रों का शुल्क कम होने के कारण इनमें गरीब व सामान्य वर्ग के छात्र अधिक पढ़ने आते है एवं वे शिक्षकों की राजनीति का शिकार बनते हैं व इन विद्यालयों का वार्षिक परीक्षा परिणाम अधिक अच्छा नहीं रहता जबकि प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षकों के कार्य करने की दर के अनुसार वेतन मिलता है। वे विद्यालय में किसी भी प्रकार की अनियमितता की स्थिति को नहीं आने देते क्योंकि ऐसे में इन शिक्षकों को विद्यालय से नौकरी समाप्त हो जाने या वेतन कम हो जाने का भय रहता है। वे प्रशासन व प्रबंधन के सख्त नियमों का पालन करते हुए शिक्षण करते पाये गये। इन विद्यालयों में छात्र शुल्क अधिक होने में इनमें धनाढ्य वर्ग के छात्र अधिक पढ़ने आते हैं। जिस कारण से छात्र उपस्थिति भी अधिक रहती है साथ में सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा इनमें विद्यालय से सम्बन्धित भौतिक सुख–साधन अधिक रहते हैं। फलतः शिक्षक विद्यालयी क्रियाओं में व्यस्त रहते हैं व विद्यालय में अलगाव की स्थिति नहीं आने पाती हैं। इन विद्यालयों का वार्षिक परिणाम भी बहुत अच्छा रहता है।

- विभिन्न अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी वातावरण

को अच्छा बनाने में प्रधानाध्यापक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। जिन विद्यालयों के प्रधानाध्यापक का व्यवहार मानवतापूर्ण व लचीला होता है उन विद्यालयों के शिक्षकों में विद्यालयों के प्रति सदैव आस्था बनी रहती है। जिन विद्यालयों का वातावरण अच्छा होता है उन विद्यालयों को गति देने हेतु कुशल नेतृत्व भी करते हैं। वे शिक्षकों व छात्रों को आवश्यकतानुसार नियमों में थोड़ी ढील भी देते हैं, विद्यालय की प्रगति हेतु विभिन्न निर्णय स्वयं व शिक्षकों की सहायता से समय—समय पर लेते रहते हैं जिससे विद्यालय का वातावरण स्वस्थ रहता है।

शिक्षक भी प्रधानाध्यापकों को सहयोग देकर विद्यालयी वातावरा को अच्छा बनाये रखने हेतु अहम भूमिका को निभाते हैं। सभी शिक्षक विद्यालय को प्रगति दिलाने हेतु विद्यालय में कार्यमुक्त वातावरण को नहीं बनने देते हैं, जो शिक्षक अधिक शैक्षणिक अनुभव वाले अधिक आयु वाले, अनुसंधान में रूचि रखने वाले होते हैं, वे विद्यालयी वातावरण को अच्छा बनाने में योगदान देते हैं। प्रगतिशील वातावरण वाले विद्यालयों में शिक्षकों में आपस में व प्रधानाध्यापक के साथ घनिष्ठता रहती है, शिक्षक साथी शिक्षकों व प्रधानाध्यापक का सम्मान करते हैं। कक्षाओं में भी शिक्षक खुला वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं जैसेः— छात्रों को अपनी समस्या से संबंधित प्रश्न पूछने का अधिकार देते हैं, छात्रों को कक्षा में सहभाग करने हेतु प्रेरित करते रहते हैं, छात्रों की जिज्ञासाओं को तुरंत शान्त करते हैं

आदि। बन्द विद्यालयी वातावरण में विपरीत स्थिति विद्यमान रहती है। किन्हीं विद्यालयों में शिक्षकों में आपस में द्वन्द्व बना रहता है जिस कारण विद्यालय में शिक्षकों के वेतन में विसंगतियां बना रहना, सभी शिक्षकों को बराबर से सम्मान न मिला व योग्यतानुसार पद न मिलने से विद्यालय का वातावरण प्रभावित रहता है।

जिन विद्यालयों में छात्र व शिक्षक अनुपात ठीक है, दैनिक उपयोग की सभी वस्तुएं जैसे– प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय, सहायक सामग्रियां आदि उपलब्ध हैं, विद्यालय के कक्ष स्वच्छ, हवादार व शान्त स्थानों पर होते हैं वे विद्यालय तीव्रगति से प्रगति करते हैं व इन विद्यालयों की आर्थिक स्थिति भी संभवतः ठीक रहती है। इन विद्यालयों में शिक्षकों को अधिक वेतन मिलता है। फलतः उनमें विद्यालय के प्रति लगाव रहता है व मन लगाकर शिक्षण करते हैं जिस कारण विद्यालय का वातावरण अच्छा बना रहता है। ऐसे वातावरण के शिक्षक विद्यालय में अत्यधिक प्रभावी भूमिका का निर्वहन करते हैं। इन विद्यालयों में समय–समय पर सेवारत् प्रशिक्षा की सुविधा उपलब्ध रहती है। जिसके अन्तर्गत शिक्षकों में विभिन्न दक्षताएं उत्पन्न की जाती है।

३. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण व शिक्षक दक्षता के मध्य संबन्धों से संबंधित अध्ययन :

जिन विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण अच्छा होता है उन विद्यालयों में शिक्षकों को समय–समय पर प्रशिक्षण प्रदान किया

जाता है। जिससे शिक्षकों में विभिन्न दक्षताएं जैसे :– शिक्षण करते समय नई तकनीकों को अपनाना, विद्यालय में आवश्यकता पड़ने पर प्रशासनिक कार्य संभालने व निर्णय लेने, विद्यालय से संबंधित व्यक्तियों जैसे प्रधानाध्यापक, साथी शिक्षक, छात्र, अभिभावक व समुदाय के व्यक्तियों से व्यवहार करने की कला विकसित हो जाती है। जिस कारण विद्यालय प्रगति के पथ पर बढ़ता है। वातावरण भी स्वस्थ बनता है जिसे विभिन्न शोधकर्ताओं ने अपने शोधों से पुष्टि की है: जैसे:–

L. Kumari (1984) ने विद्यालयों के वातावरण व शिक्षकों की कुशलता पर एक शोध किया। शोध के परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि जिन विद्यालयों का वातावरण अच्छा होता है वहां की कक्षाओं का भी वातावरण अच्छा होता है। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि कक्षाओं का वातावरण इसलिए अच्छा है क्योंकि कक्षाओं में शिक्षकों का शिक्षण संबंधी व्यवहार उच्चकोटि का है। कक्षा में शिक्षक छात्रों को समय–समय पर अभिप्रेरित (motivate) करते रहते हैं, छात्रों को पुरस्कार स्वरूप पृष्ठपोषण (Feedback) देते हैं, नई–नई युक्तियों द्वारा शिक्षण करते हैं। फलतः शिक्षकों द्वारा किये गये इन अथक प्रयासों से विद्यालय प्रगति के पथ पर बढ़ता जाता है।

D. Prakashan (1986) ने रायपुर व बिलासपुर के 92 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व 800 शिक्षकों पर शोध किया। शोधकर्ता ने शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों का वातावरण

व शिक्षकों की दक्षताओं का अध्ययन किया। परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि शहरी क्षेत्र के विद्यालयों का वातावरण खुला है व शिक्षकों में कुशलता भी है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में इसके विपरीत स्थिति है। शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों का वातावरण प्राइवेट विद्यालयों की अपेक्षा अधिक 'खुला' है व इसमें शिक्षक भी अत्यधिक कुशल हैं।

G.S. Rawat (1987) ने अपने अध्ययनों द्वारा यह ज्ञात किया कि जिन विद्यालयों में शिक्षक अत्यधिक मेहनत के साथ दक्षतापूर्ण शिक्षण करते हैं उन विद्यालयों की कक्षाओं में छात्र अनुपस्थिति (Student Absentism) कम होती है व विद्यालय का वातावरण ानात्मक रहता है।

R. Lee (1988) ने पश्चिमी वरजीनियां के यादृच्छिक विधि से चुने हुए पब्लिक व प्राइवेट सेकेण्डरी विद्यालयों पर एक अध्ययन किया। यह शोध विद्यालयी वातावरण को अच्छा बनाने के लिए शिक्षकों–प्रधानाध्यापक संबंध के महत्व पर था। शोधकर्ता ने ज्ञात किया कि 76 प्रतिशत विद्यालय में शिक्षकों व प्रधानाध्यापकों के बीच आत्मीयता (Intimacy) का व्यवहार था। जिसमें शिक्षक अपने प्रधानाध्यापकों का आदर करते हैं, प्रधानाध्यापकों द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करने का प्रयास करते है व प्रधानाध्यापक शिक्षकों की समस्याओं को सुनकर उनका निदान करने का प्रयास करते है, शिक्षकों की आर्थिक व प्रशासनिक उन्नति के विषयों में प्रयास करते

हैं। शिक्षकों की आर्थिक उन्नति हेतु वेतन व फंड आदि के भुगतान की सुविधाएं दिलवाते हैं। प्रशासनिक उन्नति हेतु शिक्षकों को प्रोन्नति दिलवाने के प्रयास के साथ–साथ उन्हें विभिन्न सेमिनार, गोष्ठियों व विद्यालयी प्रशासनिक मामलों हेतु शिक्षकों को प्रधानाध्यापक आगे करते हैं।

E. Chyung (1988) ने ताईवान के 133 प्राथमिक विद्यालयों में शोध द्वारा शोधकर्ता ने उन विद्यालयों के शिक्षकों का पता लगाया कि जिनमें शिक्षकों के बीच आपस में अलगाव (Alienation) की स्थिति होती है। साथ में इन शिक्षकों के कार्य करने की अभिवृत्तियों (Work Attitude) का पता लगाया। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि 78 विद्यालयों में शिक्षकों में आपस में मनमुटाव है। दूसरे शिक्षकों के कार्यों में सहयोग नहीं देते है। एक–दूसरे की निन्दा करते हैं। फलतः विद्यालय में अलगाव की स्थिति बनी रहती है। इससे उनकी अभिवृत्तियां भी प्रभावित होती हैं, विद्यालयी कार्यों में शिक्षक मिलजुल कर सहयोग द्वारा कार्य नही निपटाते हैं। अकेले कार्य करने में रूचि लेते हैं। शिक्षण के समय भी आवश्यकता पड़ने पर भी दूसरे शिक्षकों का न तो सहयोग लेते हैं न ही उन्हें सहयोग देते हैं।

K. Alon (1989) ने एरीजोना के प्राथमिक विद्यालयों पर एक शोध कार्य किया। शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों में सामाजिक वातावरण है। इन विद्यालयों में आपस में

सभी शिक्षक मिलकर एक समूह में कार्य करते हैं। ये शिक्षक आसानी से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं व कोई भी निर्णय बड़ी ही आसानी से ले लेते हैं। इन विद्यालयामें में पढ़ने—लिखने छात्र उग्र न होकर शान्त स्वभाव के होते हैं।

W.P. Ann (1990) ने मिनेसोटा शहर के सेकेन्डरी विद्यालयों पर एक अध्ययन किया। शोध द्वारा मिलकर एक साथ काम करने की प्रवृत्ति (Collaborative work culture) व उससे होने वाले लाभों का पता लगाया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों द्वारा मिलकर एक साथ काम करने की प्रवृत्ति को शिक्षकों के परिवार के वातावरण व विद्यालय की संस्कृति (School work culture) सर्वाधिक प्रभावित करती है। इस प्रवृत्ति के कारण सभी शिक्षक एक दूसरे के कार्यों में सहयोग करते हैं। उनमें मिलकर किसी भी विद्यालयी कार्य को निपटाने की प्रवृत्ति होती हैं। फलतः विद्यालय में एक सामाजिक वातावरण का निर्माण होता हैं शिक्षकों में आपस में टकराव व मनमुटाव की स्थिति नहीं आने पाती हैं।

B.G. ward (1990) ने उत्तरी कैरोलीना के ग्रीन्सबर्ग नामक शहर के 87 मिडिल विद्यालयों पर एक अध्ययन किया। इंस प्रयोगात्मक अध्ययन में मिडिल विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर उनमे कक्षा में सभी छात्रों से प्रश्न पूछना, सभी छात्रों को एक समान महत्व देना, कक्षा में नाटक, पहेली, खेल का आयोजन करने से सम्बन्धी दक्षता विकसित की। कुछ समय बाद शोधकर्ता ने देखा कि

छात्र भावनात्मक रूप से शिक्षकों के अधिक करीब आ गये व अब शिक्षक छात्रों की परेशानियों व समस्याओं को जल्दी ही जानकर निंदान करने का प्रयास करने लगे। फलस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण को अच्छा बनायें रखने के लिए शिक्षकों में छात्र संबंधी दक्षताएं होना अति आवश्यक हैं।

C.J. Weyne (1990) ने टेक्सास में एक सर्वेक्षण द्वारा यह जानने का प्रयास किया कि छात्र विद्यालय जाने से क्यों कतराते हैं। परिणाम द्वारा ज्ञात हुआ कि विद्यालयों में शिक्षक द्वारा छात्रों को अत्यधिक शारीरिक दण्ड दिये जाते हैं। जिससे छात्र विद्यालय जाने से कतराते हैं। फलतः उनकी उपलब्धि निरंतर कम हो जाती है। ऐसे विद्यालय 'बन्द वातावरण' वाले विद्यालयों की श्रेणी में आते हैं।

P.C. Morgon (1990) ने अलबामा राज्य के 480 प्राथमिक विद्यालयों पर एक अध्ययन किया। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि कक्षा के वातावरण का प्रभाव विद्यालय के वातावरण पर भी पड़ता है। अध्ययनकर्ताओं ने यह ज्ञात किया कि कक्षा का वातावरण तभी अच्छा होता है जब शिक्षण करते समय शिक्षक छात्रों से बीच–बीच में प्रश्न करते हैं, शिक्षक इतना अच्छा शिक्षण करते हैं जिसके कारण सभी छात्र शिक्षक की बात ध्यानपूर्वक सुनते हैं, छात्रों का शिक्षक लगातार मूल्यांकन करते हैं, शिक्षक कक्षा में छात्रों की सहभागिता लेते हैं, शिक्षक के शिक्षण से प्रभावित होकर छात्र कक्षा मे शान्त रहते हैं इससे छात्रों की उपलब्धि उत्तरोत्तर बढ़ती है। फलस्वरूप

विद्यालय में उत्साह व शान्ति का वातावरण बना रहता है।

S.M. Alice (1991) ने कैलीफोर्नियां के 570 प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक–अभिभावक संबंधों पर अध्ययन कार्य कियां परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि 73 प्रतिशत विद्यालयों में शिक्षक–अभिभावक दूरी बनी रहती है। इन विद्यालयों में शिक्षक व अभिभावक दोनों ही एक–दूसरे से मिलने की आवश्यकता नहीं समझते हैं, फलतः छात्रों से सम्बन्धि त कमियों का निदान शिक्षक व अभिभावक दोनों ही नहीं कर पाते हैं।

W. Leslie (1991) ने शिकागो के सेकेन्डरी विद्यालयों के प्रध ानाध्यापकों पर अध्ययन किया। अध्ययनकर्ता ने यह ज्ञात किया कि विद्यालय के वातावरण को अच्छा बनाने के लिए शिक्षकों का शिक्षकों के साथ, शिक्षकों का प्रधानाध्यापक के साथ व शिक्षकों तथा प्रध ानाध्यापक का अभिभावकों के साथ खुला सम्प्रेषण (Communicative Openness) होना बहुत जरूरी है। इससे शिक्षक व अभिभावक एक–दूसरे के बहुत करीब आते हैं, जिससे छात्रों की बहुत सी समस्याएं सुलझाई जा सकती हैं।

M. Atkinson (1992) ने तुलसा राज्य के 1,250 प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों पर शोध किया। शोधकर्ता ने अपने शोध ा में प्रधानाध्यापकों द्वारा प्रत्यक्षीकृत 3 मुख्य आयामों को ज्ञात किया जिनसे उनका विद्यालय उन्नति करता है। वे आयाम निम्नवत् हैं: प्रथम, शिक्षकों द्वारा नई–नई युक्तियों द्वारा शिक्षण करना; द्वितीय,

शिक्षकों द्वारा अनुशासन का पालन करना; तृतीय समय से शिक्षकों का अभिभावकों से मिलना, इससे विद्यालयी वातावरण पुष्ट बनता है।

R. Michael (1993) ने टेनसी राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर शोध करके शिक्षकों की दक्षता का प्रभाव विद्यालय के वातावरण पर जानने का प्रयास किया। शोध के परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि जिन विद्यालयों के शिक्षक अधिक पढ़े–लिखे हैं, प्रभावशाली शिक्षण करते हैं, विद्यालय से सम्बन्धित सभी कार्यों में सहभाग करते हैं, प्रतिदिन विद्यालय में उपस्थित रहते हैं, विद्यालय के प्रशासनिक मामलों में कुशलतापूर्वक निर्णय देते हैं। उन विद्यालयों का वातावरण अच्छा रहता है व निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

A. Eugene (1994) ने दक्षिणी कैलीफोर्नियां के प्राथमिक विद्यालयों पर एक शोध किया। यह शोध विद्यालय के वातावरण एवं छात्रों के सम्बन्धों पर था। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि छात्रों में विद्यालय से अलगाव की स्थिति का मुख्य कारण विद्यालयों में अनुशासन की कमी होना है व शिक्षकों का विद्यालय मे गुट बनाकर विभिन्न विद्यालयी कार्यों में सहयोग न देना है। क्योंकि जब शिक्षक ही आपस में मिलकर प्रेम से नहीं रहते हैं व आपस में राजनीति करते हैं एवं अनुशासन का पालन नहीं करते हैं। फलतः इसका प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। प्रतिदिन विद्यालय में औपचारिक

शिक्षण नहीं होने व शिक्षकों में सदैव तनाव बने रहने से विद्यालय का अनुशासन प्रभावित होता है। फलतः छात्रों की विद्यालय से ध गीरे–धीरे रूचि समाप्त होने लगती है।

H.B. Kaskin (1999) ने कैलीफोर्निया में एक परियोजना के तहत सर्वेक्षण किया तथा यह ज्ञात किया कि जिन विद्यालयों में शिक्षकों में कुशलताओं की कमी है वे विद्यालय अत्यधिक सहभागिता निभाते हैं क्योंकि ऐसे शिक्षक विद्यालय के मेधावी व तीव्र बुद्धि वाले छात्रों पर अतिरिक्त ध्यान देकर उनका अप्रत्यक्ष रूप से एक अलग दल बना लेते हैं। जिस कारण कमजोर छात्र अपने को उपेक्षित महसूस करते हैं व उनकी अन्य प्रतिभाएं दबी ही रह जाती हैं। अतः सर्वेक्षणकर्ता ने उपाय सुझाया कि शिक्षकों को प्रत्येक विद्यार्थी को शिक्षण करते समय सम्मिलित करना चाहिए। कुछ थोड़े से चुने हुए बच्चों को नहीं। अक्सर शिक्षक सब बच्चों को नहीं पढ़ाते हैं भले ही कक्षा में सभी विद्यार्थी बैठे हों। वे केवल उन्हें पढ़ाते है जो तुरंत उत्तर दे देते हैं। शिक्षक को उन बच्चों पर भी ध्यान देना चाहिए जो बच्चे अपनी बात स्वयं नहीं कह पाते हैं। ऐसे बच्चों को 'साइकोलॉजिकल ड्रॉप आउट' कहते हैं। ये बच्चे प्रतिक्रिया से वंचित रहते हैं एवं मनोवैज्ञानिक रूप से भी वंचित रहते हैं। ये कक्षा में रहते अवश्य है परंतु उन्हें बोलने हेतु उकसाया नहीं जाता है। किन्तु दक्ष शिक्षक इस मनोवैज्ञानिक अस्वीकृति की प्रक्रिया को तोड़ने में सक्षम हैं। इसके लिए ये शिक्षक सभी बच्चों का शिक्षण में सहयोग

लेते हैं। कक्षा में सभी छात्रों पर बराबर से ध्यान देते हैं। पढ़ाई में कमजोर बच्चों की अच्छाइयों की प्रशंसा करके कक्षा में उन्हें भागीदारी करने के लिए उकसातें है।

उपरोक्त इन विभिन्न अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि अच्छे बिद्यालयी वातावरण में इन विद्यालयों में प्रधानाध्यापक व शिक्षकों में अत्यधिक घनिष्ठता रहती है। शिक्षक प्रधानाध्यापक के कार्यों में सहयोग देते हैं। वे प्रधानाध्यापकों के साथ खुला सम्प्रेषण (Communicative Openness) रखाते हैं, शिक्षक प्रधानाध्यापकों द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करते हैं जिस कारण प्रधानाध्यापक शिक्षकों की समस्याओं को सुनकर उनका निदान करने का प्रयास करते हैं एवे शिक्षकों की आर्थिक व प्रशासनिक उन्नति के विषय में प्रयास करते हैं।

अच्छे विद्यालयी वातावरण वाले विद्यालयों में शिक्षक आपस में मिलकर सामाजिक वातावरण बनाते हैं। सभी शिक्षकं मिलकर एक समूह में विद्यालयी कार्यों को सम्पन्न करते हैं, एक–दूसरे का आदर करते हैं, ये शिक्षक आसानी से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं व कोई भी निर्णय बड़ी आसनाी से ले लेते हैं। जिस कारण इन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र भी उग्र न होकर शान्त स्वभाव के होते हैं। जबकि बन्द वातावरण वाले विद्यालयों में इसके विपरीत स्थिति रहती है। शिक्षकों में आपस में अलगाव की स्थिति बनी रहती है, उनमें आपस में मनमुटाव बना रहता है, शिक्षक साथी शिक्षकों के

कार्यों में सहयोग नहीं देते हैं, अकेले ही कार्य करने में रूचि लेते हैं, विद्यालय में शिक्षकों में आपस में गुट बने रहते हैं, आपस में राजनीति करते हैं। फलतः विद्यालय में अनुशासन खराब होता है व इसका प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों पर पड़ता है व छात्रों में विद्यालय के प्रति धीरे-धीरे रूचि समाप्त होने लगती है।

स्वस्थ विद्यालयी वातावरण वाले विद्यालयों में शिक्षक समय-समय पर अभिभावकों से मिलते रहते हैं, उनके साथ 'खुला सम्प्रेषण' बनाये रखते हैं जिससे शिक्षक व अभिभावक एक दूसरे के करीब आते हैं जिससे छात्रों से सम्बन्धित बहुत सी समस्याएं सुलझाई जाती हैं। ऐसे शिक्षक कक्षा में सभी छात्रों से प्रश्न पूछते हैं, सभी छात्रों को एक समान महत्व देते हैं, कक्षा में नाटक, पहेली, खेल का आयोजन करवाते हैं, जिससे छात्र भावनात्मक रूप से शिक्षकों के करीब आ जाते हैं, जिस कारण शिक्षक छात्रों की समस्याओं को आसानी से समझ कर निदान देते हैं, शिक्षक समय-समय पर छात्रों को अभिप्रेरित करते हैं व उन्हें पुरस्कार स्वरूप पृष्ठपोषण भी देते हैं, शिक्षण हेतु वे स्वयं द्वारा निर्मित सहायक सामग्री दिखाकर शिक्षण को जीवंत रखने का प्रयास भी करते हैं जिससे छात्रों को पाठ आसानी से अधिगम् हो जाता है। इस प्रकार के शिक्षण से छात्रों की उपलब्धि बढ़ती है व विद्यालय में उत्साह और शान्ति का वातावरण बना रहता है, इसके अतिरिक्त शिक्षक कक्षा में उपचारात्मक व निदानात्मक शिक्षण करते हैं, शिक्षण करते समय भाषा के उतार व

चढ़ाव का पूर्ण ध्यान रखते हैं व समय–समय पर छात्रों का मूल्यांकन भी करते हैं जिससे विद्यालय में छात्र उपलब्धि सर्वाधिक बढ़ती है।

विभिन्न शोधों द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि जिन विद्यालयों के शिक्षक अनुशासित नही रहते हैं, वहां के छात्र भी उग्र स्वभाव के होते हैं, वहां का वातावरण सदैव अस्वस्थ बना रहता है। इन विद्यालयों में शिक्षक छात्रों को अत्यधिक दण्ड देकर विभिन्न समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते हैं जिससे कुछ समय बाद छात्र विद्यालय जाने से घबराने लगते हैं। फलतः उनकी उपलब्धि निरंतर कम होती जाती है।

विभिन्न शोधों द्वारा यह ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यालयों का वातावरण अत्यधिक अच्छा होता है व शिक्षक अत्यधिक कुशल होते हैं। जिस कारण विद्यालय में छात्र उपस्थिति अधिक होती है। अच्छे विद्यालयी वातावरण में शिक्षकों को आवश्यकतानुसार विभिन्न सुविधाएं दी जाती हैं, अच्छा वेतन दिया जाता है, व्यवसायिक सुरक्षा दी जाती है, जिस कारण शिक्षक अपने कार्यों को दक्षतापूर्ण करते हैं साथ में अपने कार्यों के प्रति संतुष्टि का उदय होता है।

४. विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण व शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य संबंधों से सम्बन्धित अध्ययन :

'खुला वातावरण' वाले विद्यालयों के शिक्षकों हेतु सभी दैनिक सुख सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं, नई तकनीकी से शिक्षण करने हेतु

उपकरण उपलब्ध रहते हैं, आवश्यकतानुसार विद्यालय में निर्णय लेने की स्वतंत्रता रहती है व विद्यालय भी शिक्षकों की आर्थिक उन्नति हेतु प्रयासरत् रहता है तब शिक्षकों में कार्यों के प्रति संतुष्टि रहती है साथ में प्रधानाध्यापक व साथी शिक्षकों का सहयोग व मानवतापूर्ण व्यवहार शिक्षकों में कार्य–सन्तुष्टि मात्रा को बढ़ाता है जिससे शिक्षक सदैव तनाव रहित होकर विद्यालय में कार्य करते हैं व विद्यालय के वातावरण को अच्छा बनाये रखने का प्रयास करते हैं जिसे विभिन्न शोधकर्ताओं ने अपने शोधों द्वारा इस प्रकार प्रमाणीकृत किया है–

A. Samad (1986) ने चंडीगढ़ के 18 सरकारी हाई स्कूलों के 185 शिक्षकों पर अध्ययन करके विद्यालयों का वातावरण ज्ञात किया साथ में इन विद्यालयों के वातावरण का शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि 22 प्रतिशत विद्यालयों का वातावरण अच्छा है क्योंकि यहां शिक्षकों की सभी दैनिक सुख–सुविधा प्राप्त रहती है, नई तकनीक से शिक्षण करने हेतु उपकरण उपलब्ध रहते हें, विद्यालय में आवश्यकता पड़ने पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता रहती है। फलतः शिक्षक कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं। 78 प्रतिशत विद्यालयों का वातावरण अच्छा नहीं हैं क्योंकि इनमें खुला वातावरण वाले विद्यालयों के विपरीत परिस्थिति विद्यमान रहती है।

K. Ray (1987) ने विद्यालय के संगठनात्मक ढांचे (Organi-

zational Structures) के अन्तर्गत शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि को पं0 बंगाल के स्वायत्ता वाले विद्यालयों (Autonomous Schools) के 135 शिक्षकों द्वारा व अनुबन्धित विद्यालयों (Affiliated Schools) के 270 शिक्षकों द्वारा ज्ञात किया। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अनुबंधित विद्यालयों के शिक्षक अपने विद्यालयी वातावरण से संतुष्ट है क्योंकि विद्यालय से संबंधित उनके सुझावों का विद्यालय में उपयोग किया जाता है, शिक्षकों की समस्याओं का पूर्णरूपेण तो नही किन्तु कुछ सीमातक निदान करने का प्रयास किया जाता है, विद्यालय से संबंधित मामलों में शिक्षकों द्वारा निर्णय लेने की स्वतंत्रता रहती है, जिससे शिक्षक कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं। अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि अनुबंधित विद्यालयों के शिक्षकों की नौकरी स्थायी (Permanent) होने के कारण उनमें कार्य–संतुष्टि अधिक होती है जबकि स्वयत्ता वाले विद्यायों के शिक्षकों की नौकरी अस्थायी (Temporary) होती है इसलिए वह अपने कार्य के प्रति सदैव असंतुष्ट रहते हैं।

J.M. Seok (1987) ने रिपब्लिक कोरिया के 555 पब्लिक विद्यालयों पर एक शोध किया। शोधकर्ता ने शोध में प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व के व्यवहार एवं सम्प्रेषण के व्यवहार और शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करने का प्रयास किया जो कि विद्यालयी वातावरण पर अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि 47 प्रतिशत विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों का

नेतृत्व का व्यवहार ठीक है, वहां प्रधानाध्यापक शिक्षकों को सहयोग देते हैं, शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की विद्यालयी सुविधायें भी देते हैं, समय—समय पर शिक्षकों की विद्यालय संबंधी मामलों में राय भी लेते हैं। इस कारण ऐसे विद्यालयों में शिक्षक कार्य—सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। जब कि 53 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अपने शिक्षकों की विद्यालय संबंधी मामलों में राय लेना पंसद नहीं करते हैं। बल्कि सदैव उन पर अपने विचार थोपने का प्रयास करते हैं, शिक्षकों को सहयोग नहीं देते हैं, विद्यालयी सुविधायें नहीं देते हैं, प्रतिदिन शिक्षकों से नही मिलते हैं जिससे शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के बीच सम्प्रेषण होने का अवसर नहीं आने पाता। वहां शिक्षक कार्य—संतुष्टि का अनुभव नहीं करते हैं।

H. Richard (1987) ने मिशिगन के 30 सेकेन्डी विद्यालयों के 300 शिक्षकों पर शोध किया। शोध के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षण के अतिरिक्त अन्य अत्यधिक विद्यालयी कार्यों का बोझ शिक्षकों में मानसिक दबाव उत्पन्न करता है। इस कारण से शिक्षक विद्यालय में सभी कार्य लगन से न करके केवल इसको निपटाने का प्रयास करते हैं। जिस कारण शिक्षकों में कार्य कुशलता (Work effeciency) नहीं होती हैं व शिक्षक अत्यधिक असंतुष्टि का अनुभव करते हैं शिक्षको का आपस में प्रधानाध्यापकों से सम्प्रेषण कम हो पाता है। फलतः विद्यालय में अलगाव की स्थिति विद्यमान रहती है और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी नहीं होती है।

L. Nongnuang ने थाइलैण्ड के पूर्वी क्षेत्र के 29 माध्यमिक विद्यालयों के 406 शिक्षकों पर शोध करके विद्यालयो के वातावरण का पता लगाया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि 44.83 प्रतिशत विद्यालयों में 'खुला वातावरण'' है व 55.17 प्रतिशत विद्यालयों में 'बन्द वातावरण' है। 31 प्रतिशत विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों का व्यवहार प्रभावशाली है व 62.07 प्रतिशत विद्यालयों के शिक्षकों का मनोबल समुन्नत है। फलतः ये शिक्षक अपने शिक्षण से संतुष्ट हैं क्योंकि इनके द्वारा पढ़ाये गये छात्रों की उपलब्धि अच्छी रहती है किन्तु इन शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति पूर्णरूपेण संतुष्टि नहीं है।

A.W. Damas (1988) ने अमेरिका के ओकलाहोम शहर क प्राइमरी विद्यालयों के 42 शिक्षकों पर अध्ययन किया और पाया कि जब विद्यालय में शिक्षक कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं तो वह विद्यालय के वातावरण को भी सुखद बनाते हैं। शोध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि विद्यालयों की अवधि थोड़ी सी कम होने, शिक्षकों को समय–समय पर अवकाश मिलने व विद्यालय मे शिक्षण के अतिरिक्त खेलकूद, सह–शैक्षणिक क्रियाएं आदि समय– समय पर आयोजित कराने से शिक्षकों को कुछ बदलाव सा अनुभव होता है वे विद्यालय से ऊबते नहीं है। फलतः वे विद्यालय में अत्यधिक रूचि लेते हैं, कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं व छात्रों की उपलब्धि अत्यधिक बढ़ती है।

G. William (1988) ने एरीजोना के मेरीकोपा काउंटी के पब्लिक विद्यालयों के शिक्षकों पर एक शोध किया। यह शोध शिक्षकों द्वारा विद्यालयों के वातावरण से क्षुब्धा होकर विद्यालय छोड़कर जाने की प्रवृत्ति के कारणों को ज्ञात करने हेतु किया गया था। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि विद्यालयी वातावरण में शिक्षकों को अपनी दक्षताएं बढ़ाने के अवसर नहीं उपलब्धा हो रहे थे, कुछ शिक्षक शिक्षण कार्य करते हुए अपनी आगे की शिक्षा प्राप्त करने के अवसर न पाने के कारण क्षुब्धा थे, कुछ शिक्षक अधिक अनुभवी होते हुए भी विद्यालय में पदोन्नति नहीं पा रहे थे। शिक्षकों में आपस में स्पर्धा का वातावरण बना रहता है। फलतः अधिकतर शिक्षक अत्यधिक असंतुष्ट रहते हैं व विद्यालयों को छोड़कर अन्य व्यवसाय अपना रहे हैं।

C. Cynthia (1988) ने डेनवार के 20 प्राथमिक विद्यालयों के 210 शिक्षकों पर शोध किया। यह शोध प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापकों के व्यवहार व कर्मचारियों की संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करने हेतु था। परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि जब प्रधानाध्यापकों का व्यवहार सदैव विद्यालय की प्रगति हेतु होता है, शिक्षकों के साथ स्वयं भी विद्यालयी कार्यों में रूचि लेते हैं, तब शिक्षक पूर्ण संतुष्टि का अनुभव करते हैं। जिससे ऐसे विद्यालयी वातावरण को 'खुले वातावरण' की संज्ञा में आते हैं। जिन विद्यालयों में प्रधानाध्यापक विद्यालयों को अत्यधिक प्रगति दिलाने का प्रयास करते हैं,

किन्तु उस प्रगति हेतु स्वयं पर व अन्य शिक्षकों पर अत्यधिक मानसिक व शारीरिक बोझ डालते हैं। फलतः शिक्षक संतुष्ट नही दिखाई देते हैं, ऐसे विद्यालयों का वातावरण 'सामान्य' होता है।

A. Narseem (1989) ने गोरखपुर के इण्टरमीडिएट कालेजों पर प्रधानाध्यापक के नेतृत्व के व्यवहार व शिक्षकों के कार्य–संतुष्टि के संबंधों से विद्यालयी वातावरण का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि जिन विद्यालयों मे प्रधानाध्यापक शिक्षकों को स्वयं के व्यवहार से अच्छे कार्य हेतु प्रेरित करते हैं, शिक्षकों को विद्यालयी कार्यो में सहभाग करने हेतु प्रेरित करते हैं, शिक्षकों को प्रशासनिक निर्णय लेने का अधिकार देते हैं ऐसे विद्यालयों के शिक्षकों व प्रधानाध्यापकों के बीच अच्छे संबंध होते हैं व शिक्षक कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं, फलतः ये विद्यालय 'खुले वातावरण' की श्रेणी में आते हैं।

R. Diane (1990) ने न्यूयार्क शहर में चुने हुए 35 प्राथमिक विद्यालयों के 699 शिक्षकों पर एक शोध किया। यह शोध विद्यालाय के वातावरण एवं शिक्षकों के कार्य–संतुष्टि के संबंधों से संबंधित था। साथ में छात्र उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों के स्तर को भी ज्ञात किया गया। परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि जिन विद्यालयों में शिक्षक अधिक पढ़े लिखे थे, अनुसंधान में रूचि लेते थे, आत्म विश्वासी थे, वे इन प्राथमिक विद्यालयों में कार्य करने से संतुष्ट नहीं थे। ऐसे शिक्षका प्रधानाध्यापकों को अपने से कम पढ़–लिखा

जानकर उनकी प्रत्येक बात मान लेना उचित नहीं समझते, अतः प्रध ानाध्यापक शिक्षकों से ज्यादा सम्पर्क नहीं बनाते। फलतः विद्यालय का वातावरण अच्छा नहीं रहता। इससे छात्रों की उपलब्धि सर्वाधिक प्रभावित होती है।

H. Louis (1991) ने येल्स के 373 प्राथमिक विद्यालयों के 373 शिक्षकों पर विद्यालयी वातावरण व कार्य–संतुष्टि के संबंधों पर एक शोध किया। शोध द्वारा यह जानकारी प्राप्त हुई कि 270 शिक्षक संतुष्ट थे क्योंकि उन्हें अपने विद्यालयो में कार्य करने की स्वतंत्रता व स्वायत्ता प्राप्त थी। 103 शिक्षक असंतुष्ट थे क्योंकि उनके विद्यालयों में शिक्षकों को कार्य की स्वतंत्रता न देकर सदैव प्रधानाध यापक व प्रबंध उन्हें सख्त नियमों से बांधे रहते हैं। इन शिक्षकों में सदैव भय व दबाव के कारण असंतुष्टि बनी रहती है वे अपनी योग्यताओं व क्षमताओं को विद्यालय में दिखाने का अवसर नहीं पाते हैं।

R.R. Bakhsh (1993) ने एक अध्ययन मिशिगन के 27 एलीमेन्टरी पब्लिक विद्यालयों पर किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि विद्यालयी वातावरणीय संबंधी विभिन्न दशाओं जैसे सभी शिक्षकों को विद्यालयी कार्यों में रूचि लेना कार्य करने की उचित दशाएं मिलना, साथियों का सहयोग, समय–समय पर निरीक्षण होना, सभी में घनिष्ठता होना सभी को बराबर से जिम्मेदारियां मिलना व सभी को बराबर से सुरक्षा मिलना आदि के कारण शिक्षक

कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं। कुछ वातावरणीय सम्बंधी विशिष्ट दशाएं जैसे, शिक्षकों का अनुभवी होना, विद्यालय में अत्यधिक समय से कार्यरत रहना, अधिक आयु का होना आदि शिक्षकों में कार्यों के प्रति संतुष्टि उत्पन्न करते हैं।

U.J. Joyce (1996) ने कैलीफोर्नियां के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर अध्ययन करके यह पता लगाया कि जब शिक्षक व्यवसाय से संतुष्ट रहते हैं तब वे विद्यालयी वातावरण को भी अच्छा बनाते है। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि को 2 महत्वपूर्ण अवयव प्रभावित करते हैं, जिससे विद्यालयी वातावरण अच्छा बनता है। प्रथम, आन्तरिक अवयव जैसे–शिक्षकों को उनकी विशेष पहचान प्राप्त होना (Recognition), शिक्षकों द्वारा किये गये कार्यों से विद्यालय को उपलब्धि मिलना (Achievement), विद्यालय के कार्यों में सहभाग करने के अवसर मिलना (Opportunity to Participation) आदि; द्वितीय, वाह्य अवयव जैसे विद्यालय के नियम योजनायें व प्रशासन शिक्षकों की उन्नति के पक्ष में हो, (Policies, Plans, Administration for development teacherl) शिक्षकों का प्रधानाध्यापक व आपसी शिक्षकों के साथ अच्छा सहकारी संबंध आदि (Cooperative Relationship with suboordinates).

G.T. Ruark (1996) ने पूर्वी अमेरिकी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 183 शिक्षकों पर अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों सें यह ज्ञात हुआ कि कक्षा 1, 2 व 3 में पढ़ने वाले शिक्षक अत्यधि

ाक तनावयुक्त रहते हैं, व उनमें आपसी शिक्षकों में अंतरंगतापूर्ण कम है। फलतः विद्यालय का वातावरण अच्छा नहीं रहता व शिक्षकों में कार्य–सन्तुष्टि नहीं रहती है। जबकि कक्षा 4 व 5 को पढ़ाने वाले शिक्षक अधिक तनाव में नहीं रहते हैं, वे विद्यालय में शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अपने साथी शिक्षकों से मिलने के अवसर को प्राप्त करते रहते हैं, फलतः उनमें आपस में अंतरंगता रहती है व विद्यालय का वातावरण अच्छा बनाये रखने का प्रयास करते हैं, साथ में उनमें अपने कार्यों के प्रति संतुष्टि का भी बोध रहता है।

J. M. E. Brown (1997) ने जार्जिया के प्राथमिक विद्यालयों पर शोध करके यह ज्ञात किया कि शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि विद्यालयी वातावरण को समुन्नत बनाता है। जब शिक्षक कार्य–संतुष्ट होते हैं तव वे विद्यालय में मन लगाकर कार्य करते हैं, विद्यालय की प्रगति हेतु निरंतर प्रयासरत् रहते हैं। जिसका विद्यालयी वातावरण पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

इन विभिन्न अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि जिन विद्यालयों का वातावरण अच्छा होता है उन विद्यालयों के शिक्षक भी कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यालय के वातावरण को सदैव अच्छा बनायें रखने का प्रयास करते हैं, क्योंकि उनके मनोबल समुन्नत रहते हैं। शिक्षकों को प्रधानाध्यापक से मानवीय व्यवहार की अनुभूति होती है, समय–समय पर प्रधानाध्यापक शिक्षकों को पृष्ठपोषण देते है, शिक्षकों की समस्याओं को जानकर निदान देने का प्रयास

करते हैं, आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों हेतु विद्यालयी नियमों मे लचीलापन भी रखते हैं। फलतः शिक्षक कक्षा में मन लगाकर शिक्षण करते हैं जिससे इनके द्वारा पढ़ाये गये छात्रों को अच्छी उपलब्धि मिलती है और शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि बनी रहती है।

अच्छे विद्यालयी वातावरण में शिक्षकों में आपस में अंतरंगता रहती है, समय–समय पर एक–दूसरे की मदद करते रहते हैं, एक–दूसरे से कुछ नया सीखने में सदैव उद्यत रहते हैं, एक–दूसरे का आदर व सम्मान करते हैं, विद्यालय द्वारा शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अपने साथी शिक्षकों से मिलने के अवसर शिक्षकों को प्रदान किये जाते हैं, फलतः वह एक–दूसरे को अच्छी तरह समझ पाते हैं व विद्यालय का वातावरण अच्छा बनाये रखने का प्रयास करते हैं व उनमें अपने कार्यों के प्रति संतुष्टि का भी बोध रहता है।

विभिन्न शोधों द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि जिन विद्यालयों की अवधि थोड़ी सी कम होती है, शिक्षकों को समय–समय पर अवकाश मिलता है, विद्यालय में शिक्षण के अतिरिक्त खेल–कूद, सह–शैक्षणिक क्रियाएं आदि समय–समय पर आयोजित की जाती हैं, ऐसे विद्यालयों में शिक्षक विद्यालय व उसके कार्यों से ऊबते नहीं हैं, फलतः वे विद्यालय में अत्यधिक रूचि लेते हैं व कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं। कुछ विद्यालयों में शिक्षकों को कुछ प्रशासनिक निर्णय लेने जैसे–छात्र प्रवेश के कार्य, पाठ्यक्रम बनाने व बदलने के कार्य व कक्षा का रूप निर्धारण करने का कार्य आदि के अवसर दिये

जाते हैं। उन विद्यालय के शिक्षक सर्वाधिक कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते है जिन विद्यालयों में शिक्षकों हेतु दैनिक उपयोग की सभी सुख–सुविधायें उपलब्ध रहती हैं, समय–समय पर सेवारत् प्रशिक्षण दिया जाता है, नई तकनीक से शिक्षण हेतु उपकरण उपलब्ध रहते हैं, शिक्षकों को आगे उच्च शिक्षा व अनुसंधान हेतु अवसर दिये जाते हैं उन शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि रहती है। इसके अतिरिक्त जिन विंद्यालयों में शिक्षकों का अनावश्यक स्थानान्तरण नहीं किया जाता है, शिक्षक अधिक अनुभवी हैं, अधिक पढ़े लिखे हैं, अधिक आयु के हैं, विद्यालय में अधिक समय से कार्यरत् है, उन शिक्षकों में अत्यधि ाक कार्य–संतुष्टि की भावना पाई जाती है व वे शिक्षक विद्यालय के प्रति सर्वाधिक समर्पण की भावना रखते हैं। इन विद्यालयों का वातावरण अच्छा होता है व ये विद्यालय 'खुला वातावरण' वाले विद्यालयों की श्रेणी में आते हैं।

जिन विद्यालयों में शिक्षकों को विद्यालयी कार्यों में सहभाग के अवसर नहीं मिलते हैं विद्यालय के नियम व प्रशासन शिक्षकों की उन्नति के पक्ष में नहीं होते हैं, शिक्षकों का प्रधानाध्यापक व आपसी शिक्षकों के साथ अच्छा सहकारी सम्बन्ध नहीं होता है, शिक्षकों को व्यवसायिक सुरक्षा प्रदान नहीं की जाती है फलतः शिक्षक कार्य–संतुष्टि का अनुभव नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त जिन विद्यालयों में प्रध ाानाध्यापक अधिक लक्ष्य अभिविन्यसित होते हैं किन्तु लक्ष्य प्राप्ति हेतु स्वयं के साथ–साथ शिक्षकों पर अत्यधिक मानसिक व शारीरिक

दबाव बनाते हैं वहां शिक्षक कार्य के प्रति संतुष्ट नहीं रहते हैं। कुछ विद्यालयों में प्रधानाध्यापक शिक्षकों को सदैव सख्त नियमों से बांध े रहते हैं जिस कारण इनमें सदैव भय व दबाव के कारण असंतुष्टि बनी रहती है ये शिक्षक विद्यालय के कार्यक्रमों में स्वयं की रूचि के बजाय विद्यालयी दबाव के कारण भागीदारी लेते हैं व अपनी योग्यताओं व क्षमताओं को विद्यालय में दिखाने के अवसर नहीं पाते हैं। कुछ विद्यालयों में प्रधानाध्यापक शिक्षकों की विद्यालयी संबंधी मामलों में राय लेना पसंद नहीं करते हैं, शिक्षकों को सहयोग नहीं देते हैं, उन पर अपने विचार थोपने का प्रयास करते हैं, विद्यालयी सुविधायें नहीं देते हैं, प्रतिदिन शिक्षकों से नहीं मिलते हैं जिससे शिक्षकों व प्रध ानाध्यापक के बीच सम्प्रेषण का अवसर नहीं आने पाता व शिक्षक संतुष्ट नहीं रहते हैं। कुछ विद्यालयों में शिक्षक अधिक पढ़े लिखे कम आयु के व कम वेतन पाने वाले हैं वे सर्वाधिक असंतुष्ट रहते हैं। जो शिक्षक पढ़े–लिखे हैं किन्तु कम पढ़े–लिखे व कम योग्यता वाले प्रधानाध्यापक के अधीनस्थ कार्यरत् हैं वे शिक्षक भी संतुष्ट नहीं रहते हैं। इन विद्यालयों का वातावरण भी अच्छा नहीं रहता है व यह विद्यालय 'बन्द वातावरण' वाले विद्यालयों की श्रेणी में आते हैं, इन विद्यालयों की उपलब्धि भी सदैव प्रभावित रहती है।

कुछ अध्ययनों से यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि विद्यालयी वातावरण को समुन्नत बनाती है। जब शिक्षक कार्य–संतुष्ट होते हैं तब वे विद्यालय में मन लगाकर कार्य

करते हैं, विद्यालय की प्रगति हेतु प्रयासरत् रहते हैं, अपने प्रधानाध्यापक व साथी शिक्षकों को आदर देते हैं व उनसे मानवता का व्यवहार करते हैं, शिक्षक विद्यालयी कार्यों में स्वयं की रूचि से मिलजुल कर भागीदारी दिखाते हैं। फलतः सभी विद्यालयों के कार्यक्रम सफल होते हैं व विद्यालय का वातावरण सुखद बनता है। इन विद्यालयों की अच्छी उपलब्धि होती है व विद्यालय तीव्रगति से प्रगति करता है। इसके अतिरिक्त इन विद्यालयों में समय–समय पर सेवारत् प्रशिक्षण की व्यवस्था रहती है जिससे शिक्षकों का अपनी दक्षताएं बढ़ाने के सुअवसर मिलते रहते हैं व वे शिक्षक विद्यालय में अपनी कुशलताएं दिखाते हैं व अपने कार्यों के प्रति संतुष्ट भी नजर आते हैं। जब शिक्षक संतुष्ट होते है तो विद्यालय में कुशलतापूर्वक कार्य करते हैं।

९. शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि एवं उनकी दक्षता के मध्य सम्बन्धों से सम्बन्धित अध्ययन :–

जो शिक्षक दक्ष होते हैं वे कार्य–संतुष्टि का सर्वाधिक अनुभव करते हैं। क्योंकि वे जब अपने प्रधानाध्यापक व साथी शिक्षकों से अच्छा व्यवहार करते हैं तो बदले में उन्हें भी सबसे मानवतापूर्ण व्यवहार प्राप्त होता है। जिससे उनमें असीम संतुष्टि उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त जब विद्यालयी प्रशासनिक कार्यों में अपना हस्तक्षेप करने का अवसर भी पाते हैं तो उनमें संतुष्टि और अधिक बढ़ती है इसके अतिरिक्त जब शिक्षक दक्षतापूर्ण शिक्षण करते हैं तो

छात्रों की उपलब्धि सर्वाधिक बढ़ती है व योग्य उत्पाद मिलता है जिससे शिक्षकों में अभूतपूर्व संतुष्टि का बोध होता है। जिन शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि रहती है उन शिक्षकों में विद्यालय के प्रति समर्पण की भावना रहती है वे विद्यालय में पूरे मनोयोग से अपनी दक्षताओं को दिखाते हैं व विद्यालय के कार्यों को अच्छी तरह से सम्पन्न करना अपना कर्तव्य समझते हैं उनमें प्रधानाध्यापक, शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों के प्रति आस्था रहती है व उनकी प्रगति हेतु अपने व्यवहारों द्वारा सदैव प्रयासरत् रहते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि जो शिक्षक अधिक कार्य–सन्तुष्ट होते हैं वे अधिक दक्ष भी होते है जिसे विभिन्न अध्ययनकर्ताओं ने अपने अध्ययनों द्वारा इस प्रकार ज्ञात किया है–

S. Sturdiwant (1990) ने इयोवा के 35 प्राथमिक विद्यालयों के 115 शिक्षकों पर शिक्षकों की दक्षता एवं कार्य–संतुष्टि के सम्बन्धों पर एक शोध किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि जब शिक्षकों को उनकी योग्यतानुसार उचित वेतन, प्रधानाध्यापकों द्वारा व साथी शिक्षकों द्वारा सहयोग तथा सहानुभूति मिलना, प्रोन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं तब वे कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं। वे विद्यालय में साथ शिक्षकों के साथ मिलकर अच्छे सामाजिक वातावरण का निर्माण करते हैं। प्रधानाध्यापकों के कार्यों में सहयोग देते हैं व पूर्ण कुशलता से शिक्षण करते हैं।

K. Charis (1993) ने जिम्बाम्बे में 25 प्राथमिक विद्यालयों के

210 शिक्षकों पर एक शोध किया। शोधकर्ता ने ज्ञात किया कि विद्यालयों में शिक्षण की नवीन तकनीक जैसे–दृश्य श्रव्य उपकरण आदि उपलब्ध होने व इन तकनीकों की सहायता से शिक्षण करने से छात्रों की उपलब्धि अत्यधिक बढ़ती है। यह कार्य कार्य–संतुष्ट शिक्षक आसानी से कर पाते हैं।

A.V. Herman. (1994) ने परेटोरिको नामक शहर पर अध्ययन करके यह ज्ञात किया कि जिन विद्यालयों के शिक्षकों को विद्यालय सम्बन्धी मामलों में निर्णय लेने का अधिकार होता है व विद्यालय से सम्बन्धित मामलों में राय देने की स्वतंत्रता होती है वहां शिक्षक कार्य–संतुष्टि का अत्यधिक अनुभव करते हैं क्योंकि विद्यालय सम्बन्धी मामलों में निर्णय लेना व राय देना आदि को शिक्षक की सबसे बड़ी दक्षता के रूप में स्थान दिया जाता है।

N. Geraldiene (1994) ने उत्तरी कैरोलिना के प्राथमिक विद्यालयों के कुछ शिक्षकों पर शोध किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि जो शिक्षक कम पढ़े–लिखे हैं किन्तु विद्यालय में अधिक समय से कार्यरत है व अधिक शिक्षण अनुभव रखते हैं उनकी अभिवृत्तियां विद्यालय के पक्ष में होती हैं। अनुभव के आधार पर व निरंतर अभ्यास से शिक्षकों से संबंधित अधिकतर गुण व दक्षताएं इन शिक्षकों में उत्पन्न हो जाती हैं, फलतः वे शिक्षक अपने कार्यों से संतुष्ट रहते हैं।

C. Suvichakoni (1995) ने थाईलैण्ड के प्राथमिक विद्यालयों

के 201 शिक्षकों पर उनके व्यक्तित्व व कार्य–संतुष्टि के सम्बन्धों पर शोध किया। शोधकर्ता ने शोध द्वारा यह ज्ञात किया कि जो शिक्षक दूसरे शिक्षकों, प्रधानाध्यापक व अभिभावकों से हितैषी की तरह मिलते हैं, दूसरे की सदैव मदद करते हैं, दूसरे के दुख में दुखी व सुख में सुखी होते हैं, दूसरो का सम्मान करते हैं उनमें अत्यधिक कार्य–संतुष्टि रहती है।

K. Walter (1997) ने एम्सटर्डम शहर की प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर एक अध्ययन किया गया अध्ययन शिक्षाविदों के विभिन्न स्तरों को लेकर उनमें कार्य–सन्तुष्टि ज्ञात करने व व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों का पता लगाने हेतु किया। अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि ऊँचे पद पर आसीन शिक्षाविद् अधिक संतुष्ट हैं व उनकी अभिवृत्तियाँ अपने व्यवसाय की तरफ हैं। नीचे पदों पर आरूढ़ व अधिक पढ़े–लिखे शिक्षाविद् कम संतुष्ट हैं। इसलिए उनकी अभिवृत्तियां व्यवसाय के प्रति कम हैं। अधिक वेतन पाने वाले शिक्षाविद् कम वेतन पाने वाले शिक्षाविदों से अधिक संतुष्ट हैं।

W. Gloria (1995) ने शिक्षकों की कार्य क्षमता व उनकी कार्य–संतुष्टि पर न्यूयार्क के 12 प्राथमिक विद्यालयों के 233 शिक्षकों पर एक शोध किया। शोध के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की आवश्यकताएं जैसे– सुरक्षा, प्रोन्नति के अवसर, उचित कार्य दशाएं, योग्यतानुसार वेतन न मिलना आदि शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों व मूल्यों को प्रभावित करते हैं। फलस्वरूप

इससे शिक्षक दक्षता भी प्रभावित होती है। जिस कारण विद्यालय में शिक्षक कर्मचारी मात्र रह जाते हैं व उनका प्रभावीपन धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है व शिक्षकों में अपने कार्यों के प्रति संतुष्टि नहीं रहती है।

उपरोक्त विभिन्न अध्ययनों से यह पता चलता है कि जो शिक्षक अत्यधिक दक्ष होते हैं उनमें सर्वाधिक कार्य-संतुष्टि का भाव रहता है। क्योंकि जो शिक्षक अपने प्रधानाध्यापक को सहयोग देते हैं, उनके द्वारा बनाये गये नियमों व कानूनों को मानते हैं वे अत्यधिक कार्य-संतुष्टि का अनुभव करते हैं बदले में प्रधानाध्यापक भी समय-समय पर शिक्षकों की सहायता करते हैं, उनसे सहानुभूति रखते हैं व उन्हें पृष्ठपोषण देते हैं जिससे शिक्षकों का मनोबल ऊँचा होता है। कुछ विद्यालयों में शिक्षकों में आपस में एक-दूसरे का सहयोग करने की भावना होती है, एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, एक-दूसरे से कुछ सीखने में हिचकते नहीं हैं, एक-दूसरे की प्रगति हेतु प्रयासरत् रहते हैं जिससे शिक्षकों में अपूर्व कार्य-संतुष्टि का बोध रहता है। इसके अतिरिक्त जब शिक्षक अक्सर अभिभावकों से हितैषी की तरह मिलते हैं, अभिभावकों से छात्रों की समस्याओं के निदान हेतु परिचर्चा करते हैं इससे छात्रों की प्रगति में उत्पन्न बाधाओं को समाप्त करने का प्रयास शिक्षक करते हैं जिससे शिक्षक असीम कार्य-संतुष्टि का अनुभव करते हैं व उनमें आत्म-बल भी सर्वाधिक बढ़ता है।

इसके विपरीत कुछ विद्यालयों में शिक्षक दक्षतापूर्ण शिक्षण

करने के अवसर ही नहीं पाते हैं उनपर विद्यालयों की तरफ से शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यों का बोझ सर्वाधिक रहता है व उन्हें सेवारत् प्रशिक्षण की व्यवस्था भी नहीं उपलब्ध की जाती है, शिक्षक छात्र अनुपात ठीक नहीं रहता है, जिससे शिक्षकों का शिक्षण निस्तेज होकर रह जाता है। शिक्षक दक्षतापूर्ण शिक्षण नहीं कर पाते हैं एव उनमें कार्य–संतुष्टि का भाव उदय नहीं होने पाता।

जिन विद्यालयों में शिक्षकों को विद्यालयी सम्बन्धी मामलों में निर्णय लेने का अधिकार होता है व विद्यालय सम्बन्धी मामलों में राय देने की स्वतंत्रता होती है वहां शिक्षक कार्य–संतुष्टि अत्यधिक अनुभव करते हैं क्योंकि विद्यालय सम्बन्धी मामलों में निर्णय लेना व राय देना आदि को शिक्षक की सबसे बड़ी दक्षता के रूप में स्थान दिया जाता है।

वे शिक्षक अधिक कार्य–संतुष्ट होते हैं जिन विद्यालयों में शिक्षक कम पढ़े–लिखे हैं किन्तु बहुत अधिक समय से कार्यरत् हैं व अत्यधिक शिक्षण अनुभव रखते हैं व अभिवृत्तियां विद्यालय के पक्ष में होती है। अनुभव के आधार पर निरंतर अभ्यास से शिक्षकों से सम्बन्धित अधिकतर गुण व दक्षताएं शिक्षकों में उत्पन्न हो जाती हैं।

जो शिक्षक ऊंचे पद पर आसीन होते हैं वे अधिक वेतन पाते हैं वे अधिक संतुष्ट होते हैं व उनकी अभिवृत्तियां अपने व्यवसाय की तरफ होती हैं जबकि नीचें पदों पर आरूढ़ व अधिक पढ़े–लिखे शिक्षक जो कम वेतन पाते हैं कम संतुष्ट है उनकी अभिवृत्तियां

व्यवसाय के प्रति कम हैं।

वे शिक्षक अधिक कार्य–संतुष्ट है जिन विद्यालयों में शिक्षक अधिक शैक्षणिक अनुभव वाले होते हैं व अधिक समय देते हैं।

विभिन्न शोधों द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षकों की आवश्यकताऐं जैसे– सुरक्षा, प्रोन्नति के अवसर, उचित कार्य दशाएं, योग्यतानुसार वेतन मिलना आदि शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों व मूल्यों को प्रभावित करते हैं जिससे शिक्षक दक्षता प्रभावित होती है, जिस कारण विद्यालय में शिक्षक कर्मचारी मात्र रह जाते हैं व उनका प्रभावीपन धीरे–धीरे समाप्त हो जाता है व शिक्षकों में अपने कार्यों के प्रति संतुष्टि का भाव नहीं उदीप्त होने पाता हैं।

जो शिक्षक कार्य–संतुष्ट होते हैं वे विद्यालय में सर्वाधिक शिक्षक दक्षताओं का प्रदर्शन करते हैं वे प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों व अभिभावकों का सहयोग व सम्मान करते हैं एवं उनसे सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं। वे छात्रों से भी अच्छा व्यवहार करते हैं बदले में छात्र भी शिक्षकों से बिना संकोच किये प्रश्न पूछते हैं व अपनी समस्याएं बताते हैं। शिक्षक शिक्षण के समय भी अपनी दक्षताओं का प्रदर्शन करते हैं व छात्रों को पाठ अधिगम् कराना अपना कर्तव्य समझते हैं। जिससे छात्र उपलब्धि तो बढ़ती ही है व विद्यालय भी प्रगति करता है। शिक्षकों की अभिवृत्तियां भी व्यवसाय के पक्ष में होती हैं वे अपने व्यवसाय का सम्मान भी करते हैं व व्यवसाय के प्रति पूर्ण आस्था रखते हैं।

अध्याय–तृतीय
अनुसन्धान पद्धति
तथा
अनुसन्धान अभिकल्प
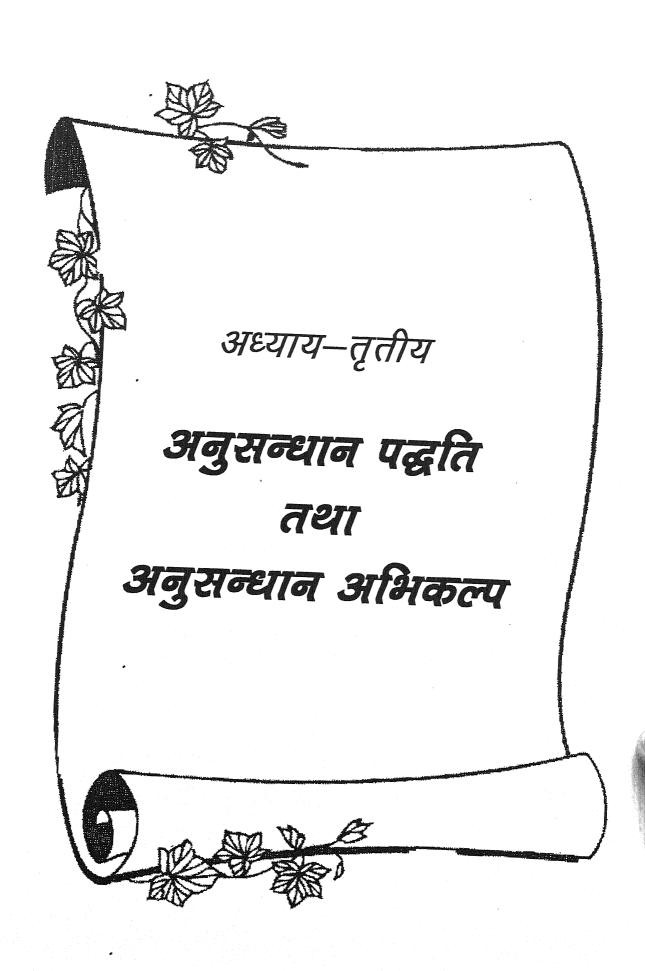
अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं का विवेचन करना अपेक्षित है–

1. जनसंख्या
2. प्रतिदर्श
3. अनुसन्धान अभिकल्प
4. प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षणों का विवरण
5. प्रशासन प्रक्रिया
6. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

१.जनसंख्या

प्रस्तुत अनुसन्धान जालौन जनपद के 30–40 आयु वर्ग के प्राथमिक शिक्षकों पर किया गया।

२. प्रतिदर्श :

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत 600 प्राथमिक शिक्षकों पर अध्ययन किया गया। जालौन जनपद के इन शिक्षकों का चयन वर्गबद्ध अनियत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। प्रतिदर्श के रूप में (300 पुरूष तथा 300 महिला) 30–40 आयु वर्ग के शिक्षकों का चयन किया गया। 300 शहरी तथा 300 ग्रामीण शिक्षकों का चयन प्रतिदर्श के रूप में इस प्रकार किया गया–

३ अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अनुसन्धान घटनोत्तर अनुसन्धान प्रकार का है। प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित परिवर्ती हैं–

स्वतन्त्र परिवर्ती – लिंग

कार्य–सन्तोष

विद्यालय वातावरण

आश्रित अथवा परतन्त्र परिवर्ती–

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

शिक्षक दक्षता
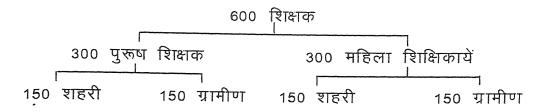
प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य स्वतन्त्र परिवर्ती के रूप में लिंग (पुरूष व महिला), कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षक दक्षता पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना है।

४. प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षणों का विवरण

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया–

क) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

ख) विद्यालय संगठनात्मक वातावरण सूचक प्रश्नावली

द्वारा डॉ0 मोतीलाल शर्मा

ग) शिक्षक दक्षता मापनी

घ) अध्यापक कृत्य–सन्तोष मापनी

द्वारा डॉ0 एस.पी. गुप्ता एवं डॉ0 जे.पी. श्रीवास्तव

उपर्युक्त मानकीकृत परीक्षणों का विस्तार पूर्वक वर्णन इस प्रकार है–

क) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी

यह मापनी डॉ0 तारेश भाटिया द्वारा निर्मित एंव मानकीकृत है। इस मापनी द्वारा प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न 5 क्षेत्रों में अभिवृत्ति का मापन किया जा सकता है। यह विभिन्न क्षेत्र इस प्रकार है–

(a) प्राथमिक शिक्षा

(b) अनिवार्य शिक्षा

(c) निःशुल्क शिक्षा

(d) आपरेशन ब्लैक बोर्ड

(e) प्राथमिक शिक्षा की समस्यायें

पद–विश्लेषण–

प्रारम्भ में मापनी के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित सकारात्मक एंव नकारात्मक पाँच बिन्दु मापनी के रूप में विभिन्न पदों को निर्मित किया गया। इस प्रकार कुल पद 120 कों पांच शिक्षाशास्त्रियों को मूल्यांकन के लिऐ प्रस्तुत किया गया। जिन पदों को सभी शिक्षाशात्रियों ने सहमति प्रदान की उन पदों को पद–विश्लेषण के उद्देश्य से 192 पदों को एकत्रित किया गया शेष 28 पदों को निरस्त कर दिया गया।

पद–विश्लेषण के उद्देश्य से अभिवृत्ति मापनी को अध्यापकों, अभिभावकों तथा समाज के जागरूक नागरिकों एवं विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। तत्पश्चात प्राप्त परिणामों के आधार पर पद–विश्लेषण के अन्तर्गत विभेदन शक्ति की गणना की गई। अधिकतम विभेदन शक्ति रखने वाले पदों का चयन किया गया तथा कमजोर पदो अथवा निम्न विभेदन शक्ति रखने वाले पदों की मापनी से निकाल दिया गया। अन्त में विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित निम्नलिखित 50 पदों (सकारात्मक एवं ऋणात्मक) का चयन किया गया–

क्षेत्र	पदसंख्या	धनात्मक पद संख्या	ऋणात्मक पद संख्या
a. प्राथमिक शिक्षा	10	9	01
b: अनिवार्य शिक्षा	10	10	–
c. निःशुल्क शिक्षा	05	03	02
d. आपरेशन ब्लैकबोर्ड	05	03	02
e. प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित समस्यायें	05	–	05
योग	35	25	10

परीक्षण की विश्वसनीयता

प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता पुनर्परीक्षण विधि (Test Retest Method) द्वारा ज्ञात की गई जो कि निम्नलिखित प्रकार से विभिन्न क्षेत्रो में प्राप्त हुई–

विभिन्न क्षेत्र	पुनर्परीक्षण विधि द्वारा प्राप्त विश्वसनीयता
a. प्राथमिक शिक्षा	0.81
b. अनिवार्य शिक्षा	0.89
c. निःशुल्क शिक्षा	0.84
d. आपरेशन ब्लैकबोर्ड	0.78
e. प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित समस्यायें	0.82
योग	0.80

परीक्षण वैधता

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता आन्तरिक संगति के आधार

पर निर्मित वैधता ज्ञात की गई।

फलांकन विधि

परीक्षण की फलांकन विधि अत्यन्त सरल है। सकारात्मक पदों में निम्नलिखित प्रकार से अंक प्रदान करेंगे–
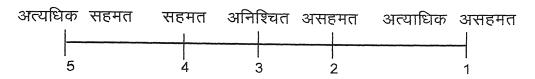
इसके विपरीत ऋणात्मक पदों में निम्नलिखित प्रकार से अंक प्रदान करेंगे।
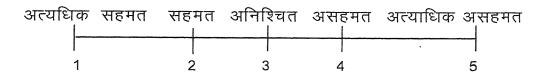
उक्त फलांकन विधि द्वारा सभी 5 क्षेत्रों के अलग–अलग कुल अंक प्राप्त करेंगे तथा कुल योग प्राप्त करेंगे। सकरात्मक तथा ऋणात्मक पदों को निम्नलिखित तालिका द्वारा अवलोकित करेंगे–

क्षेत्र	पदसंख्या	सकारात्मक पद	ऋणात्मक पद
a. प्राथमिक शिक्षा	10	1,2,3,4,5,6,,8,9,10	7
b. अनिवार्य शिक्षा	10	11,12,13,14,15,16	17,18,19,20
c. निःशुल्क शिक्षा	05	21,23,25	22,24
d. आपरेशन ब्लैकबोर्ड	05	26,27,28	29,30
e. प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित समस्यायें	05	–	31,32,33,34,35
योग	35	25	10

ख) विद्यालय संगठनात्मक वातावरण सूचक प्रश्नावली

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के लिए डा0 मोतीलाल शर्मा कृत मापनी का उपयोग किया गया जो विद्यालय के मनोवैज्ञानिक वातावरण को मापती है। विद्यालय के मनोवैज्ञानिक वातावरण को मापने के लिए मापनी में समूह के व्य़वहार से सम्बन्धित प्रथम चार आयाम एवं अंतिम चार आयाम नेता के व्यवहार से सम्बन्धित हैं।

१. *कार्यमुक्ति*

यह आयाम शिक्षकों द्वारा विद्यालय से सम्बन्धित कार्यों में रूचि न होने को दर्शाता है। ऐसे में शिक्षक विद्यालय में सक्रियता नहीं दिखाते हैं। वे प्रत्येक कार्य से दूर भागते हैं। विद्यालय में गुट बना लेते हैं। अन्य अध्यापकों पर सदैव अपना काम व अपने विचार थ़ोपने में लगे रहते हैं। विद्यालय में सुचारू रूप से चल रहे कार्यों में सदैव बाधा डालने का प्रयास करते हैं।

२. *अलगावयुक्त*

यह आयाम शिक्षकों की प्रधानाध्यापक से व स्वयं आपस में शिक्षकों के बीच की दूरी की मात्रा को बताता है। ऐसे वातावरण में प्रतिदिन शिक्षक जल्दी विद्यालय से बाहर चले जाने को इच्छुक रहते हैं। दूसरे शिक्षकों से व अपने प्रधानाध्यापकों से खाली समय में भी एक दूसरे के नजदीक नहीं आते हैं। जैसेः— अपनी बातें कहने व

उनकी बातें सुनने या किसी परिचर्चा में भाग लेने का प्रयास नहीं करते। प्रधानाध्यापक भी शिक्षक से व्यक्तिगत सम्पर्क न बनाकर व उनके दुःख–सुख में सहभाग न करके केवल उन पर नियम व कानून थोपते रहते हैं।

३. *मनोबलपूर्ण*

यह आयाम शिक्षकों के मनोबल को इंगित करता है। शिक्षक पूरे मनोयोग से विद्यालय में सहभाग करते हैं। वे विद्यालय में पूरी शक्ति व उत्साह से कार्य करते हैं। उनमें अपने विद्यालय को तरक्की दिलाने की भावना रहती है। वे एक दूसरे पर दोषों को नहीं थोपते हैं। वे सभी एकता में विश्वास करते हैं व सभी कार्य मिलजुल कर करते हैं।

४. *अंतरंगतापूर्ण*

यह आयाम शिक्षकों का आपस में एक–दूसरे से व प्रधानाध्यापक के साथ मित्रवत्, सौहार्दपूर्ण व्यवहार द्वारा घनिष्ठता को दर्शाता है। इनमें आपस में अच्छा व करीबी सामाजिक सम्बन्ध बन जाता है। ऐसे में शिक्षक अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयाँ दूसरे शिक्षकों को व प्रधानाध्यापकों को बताते है तथा वे उसकी कठिनाइयों का निदान करने का प्रयास करते हैं। एक दूसरे से व्यक्तिगत बातें करते हैं व एक दूसरे के दुख में दुखी व सुख में सुखी होते हैं।

५. *मनोशारीरिक बाधायुक्त*

यह आयाम शिक्षकों पर प्रधानाध्यापक द्वारा अत्यधिक मानसिक

व शारीरिक दबाव को दर्शाता है। प्रधानाध्यापक शिक्षकों से अत्यधिक प्रशासनिक व विद्यालय प्रबन्धन के कार्य कराते हैं जो उन्हे बोझ स्वरूप लगता है। शिक्षकों द्वारा मेहनत से किये गये कार्यों की प्रधानाध्यापक प्रशंसा नहीं करते हैं। फलतः शिक्षक सदैव तनाव की स्थिति में रहते हैं।

६. नियंत्रण

यह आयाम प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यालय के नियमों का पालन करने पर प्रकाश डालता है। जिसमें प्रधानाध्यापक समय–समय पर विद्यालय का नियमित निरीक्षण करते हैं। समय से परीक्षा आयोजित करवाते हैं। शिक्षण हेतु शिक्षकों को समय–समय पर सहायक सामग्री उपलब्ध कराते हैं। समय से शिक्षक सभायें आयोजित कराते हैं। ऐसे प्रधानाध्यापक स्वयं के साथ–साथ विद्यालय के अन्य कर्मचारियों से भी नियमों का पालन करवाते हैं। सभी शिक्षकों की विद्यालय से सम्बन्धित कार्यों में सहभागिता लेते हैं। किसी एक शिक्षक पर कार्य का अनावश्यक बोझ नही डालते हैं।

७. उत्पादनोन्मुख

यह आयाम प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यालय के उत्थान की तरफ उन्मुख होने पर प्रकाश डालता है। विद्यालय में अच्छी छात्र उपलब्धि प्राप्त करने हेतु प्रधानाध्यापक स्वयं ही विद्यालय से सम्बन्धित कठिन से कठिन निर्णय ले लेते हैं। वे स्वयं ही शिक्षकों व कक्षा हेतु कार्य निर्धारण करते हैं शिक्षकों की अध्यापन योग्यता की स्वयं ही

जांच करते हैं। शिक्षकों की गल्तियों के निवारण हेतु उन्हें दण्ड ने देकर सुझाव देते हैं, ताकि शिक्षक मनोयोग से शिक्षण कर सके। समय—समय पर प्रधानाध्यापक शिक्षकों को उनके शिक्षण व विद्यालय से सम्बन्धित कर्त्तव्यों को याद दिलाते हैं।

८. *शिष्टव्यवहारयुक्त*

आयाम प्रधानाध्यापकों के शिष्टाचारयुक्त व्यवहार को बताता हैं। साथ में शिक्षकों द्वारा शिष्ट आचरण करने के लिये वह अपने स्वयं के उदाहरण शिक्षकों के सम्मुख रखकर उन्हें प्रेरित करने का प्रयास करते हैं। शिक्षकों से वे सदैव मानवीय व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं। वे शिक्षकों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को भी हल करने का प्रयास करते हैं। विद्यालय से सम्बन्धित क्रियाकलापों हेतु शिक्षकों से भी सुझाव लेते हैं।

इन आयामों से सम्बन्धित मापनी में 64 कथन हैं जिनके प्रतिउत्तर के लिए चार विकल्प बहुत कम, कभी—कभी, प्रायः, बहुत बार क्रमशः क, ख, ग, घ के रूप में दिये हैं। प्रतिक्रिया के आधार पर इनमें से किसी एक विकल्प को गोलाकार में बंद करके प्रदर्शित करना होता है।

प्रतिउत्तर हेतु 4 विकल्प बहुतकम बार, कभी—कभी, प्रायः बहुत बार दिये गये हैं जिनके लिए क्रमशः 1, 2,3,4 अंक निर्धारित हैं। इस प्रकार शिक्षकों के प्रतिउत्तरों के अनुसार दिये गये अंकों को जोड़कर प्राप्तांक निकाल लिया। प्रत्येक आयाम के लिए अलग

प्राप्तांक प्राप्त हुआ।

ग) शिक्षक दक्षता मापनी–

परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दक्षता मापने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा निर्मित 'शिक्षक दक्षता मापनी' का प्रयोग किया गया है। इस मापनी के निर्माण हेतु सर्वप्रथम विशेषज्ञों से शिक्षक दक्षता से सम्बन्धित विभिन्न आयामों पर चर्चा की गयी। परिचर्चा से निकलकर आए शिक्षक दक्षता सम्बन्धी आयाम इस प्रकार है– शिक्षक का व्यक्तित्व, शिक्षक ज्ञान सम्बन्धी, शिक्षक छात्र सम्बन्धी कक्षा शिक्षण से सम्बन्धित, शिक्षक–शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक के आपसी सहयोग सम्बन्धी, शिक्षक–अभिभावक सम्बन्धी, मूल्यांकन सम्बन्धी, अनुशासन सम्बन्धी एवं शिक्षक की अभिवृत्ति सम्बन्धी। इन आयामों पर पद लिखे गये। प्रत्येक पद के सम्मुख प्रतिउत्तर हेतु 5 विकल्प पूर्णतया सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतया असहमत रखे गये। इस मापनी को विभिन्न विशेषज्ञों जैसे विश्वविद्यालय के शिक्षक, डी.आई.ई.टी. के शिक्षक, शिक्षक–प्रशिक्षक, उपबेसिक शिक्षा अधिकारी (एस.डी. आई.) तथा प्राथमिक विद्यालयों के अनुभवी शिक्षकों आदि को दिखाकर उनसे सुझाव मांगे। विशेषज्ञों के सुझाव के आधार पर मापनी में विभिन्न संशोधन किये गये जैसे–पदों में भाषा सम्बन्धी त्रुटियाँ ठीक की गयी, कुछ पद हटाये गये, कुछ पद जोड़े गये, कुछ पदों को उनके सही वर्ग में स्थानान्तरित किया गया। इस प्रकार से

अब संशोधित मापनी में 9 आयामों के अन्तर्गत 119 पद हो गये। तत्पश्चात संशोधित मापनी का पद विश्लेषण किया गया।

मापनी को प्राथमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों पर प्रशासित किया गया। एक मुख्य चार्ट (मास्टर चार्ट) बनाया गया। प्रत्येक पद पर सभी के प्राप्त अंको का कुल के साथ सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया। इस प्रकार 119 पद थे, जिनके 119 सहसम्बन्ध निकाले गये। जिनमें 71 पद ऋणात्मक सहसम्बन्ध वाले व 48 पद धनात्मक सहसम्बन्ध वाले प्राप्त हुए। 71 पदों का ऋणात्मक सहसम्बन्ध होने के कारण इन पदों को छोड़कर शेष 48 धनात्मक सहसम्बन्ध वाले पदों का मुख्य चार्ट बनाया। इसको शिक्षकों के कुल प्राप्तांकों के आधार पर प्राप्ताकों के उतार के क्रम में बनाया गया। तत्पश्चात् 100 शिक्षकों के कुल प्राप्तांकों में से ऊपर से अधिकतम 27 प्रतिशत व नीचे से न्यूनतम 27 प्रतिशत प्राप्तांक के दो समूह बनाये गये। प्रत्येक पद में इन दोनों समूहों के बीच सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया। सभी 48 पदों का 0.05 विश्वसनीयता स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। तत्पश्चात 15 दिनों बाद फिर से मापनी को इन्हीं 100 शिक्षकों पर प्रशासित किया गया व पहली बार व दूसरी बार प्रशासित मापनी के कुल आंकड़ों से सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया जो 0.84 आया। जिसे मापनी की विश्वसनीयता मान लिया गया। अतः अन्तिम रूप में मापनी में 48 पद रहे। इस प्रकार विभिन्न आयामों सहित पदों की संख्या निम्नलिखित प्राप्त हुई जिसमें शिक्षक व

व्यक्तित्व में 6, शिक्षकों के ज्ञान सम्बन्धी 3, शिक्षक छात्र सम्बन्धी 6, कक्षा शिक्षण सम्बन्धी 8, शिक्षक–शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक के आपसी सहयोग सम्बन्धी 4, मूल्यांकन सम्बन्धी 4, शिक्षक अभिभावक सम्बन्धी 5, अनुशासन सम्बन्धी 7, शिक्षक अभिवृत्ति सम्बन्धी 5 पद थे।

प्रतिउत्तर के रूप में 5 विकल्प पूर्णतया सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतया असहमत हैं। सकारात्मक पदों के लिए क्रमशः 5,4,3,2,1 अंक व कुछ नकारात्मक पदों को 1,2,3,4,5 अंक देना निर्धारित किया गया। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षक को अधिकतम 240 अंक व न्यूनतम 48 अंक मिल सकते हैं।

घ) अध्यापक कृत्य–संतोष मापनी

शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि को मापने के लिए उपकरण के रूप में डा० एस.पी. गुप्ता एवं जे.पी. श्रीवास्तव (1980) द्वारा निर्मित 'अध्यापक कृत्य संतोष मापनी' का प्रयोग किया गया। इस मापनी में 80 पद हैं जिसमें कुछ नकारात्मक व कुछ सकारात्मक पद हैं। प्रस्तुत मापनी में 5 विकल्प पूर्णतया असहमत, अनिश्चित, सहमत, पूर्णतया सहमत दिये हैं। प्रतिक्रिया के आधार पर विकल्पों में से प्रत्येक कथन के आगे किसी एक विकल्प में सही का चिन्ह लगाना है।

प्रतिउत्तर के रूप में विकल्प पूर्णतया असहमत, असहमत, अंनिश्चित, सहमत, पूर्णतया सहमत दिये हैं। इसमें भी कुछ कथन सकारात्मक जिनको क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 अंक व कुछ कथन

नकारात्मक थे जिनको क्रमशः 1,2,3,4,5 अंक दिये गये। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षक को अधिकतम 400 व न्यूनतम 80 अंक मिल सकते हैं।

५. प्रशासन प्रक्रिया

प्रस्तुत अनुसन्धान के प्रतिदर्श के अनुरूप चयनित शिक्षकों को अनुसन्धान का उद्देश्य समझाया गया। इससे पूर्व सम्बन्धित प्रधानाध्यापकों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर शोध सम्बन्धी कार्य की स्वीकृति प्राप्त की गई। चयनित शिक्षकों को मानकीकृत परीक्षण सम्बन्धी निर्देश भली–भांति समझा दिये गये। सभी मानकीकृत परीक्षणों को ध्यानपूर्वक भरवाया गया तथा अन्त में शिक्षकों को अनुसन्धान कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिये धन्यवाद भी ज्ञापित किया गया। इस प्रकार 300 ग्रामीण व 300 शहरी पुरूष व महिला प्राथमिक शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं को प्राप्त किया गया।

६. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अनुसधांन के उद्देष्यों के अनुरुप प्रदत्त सकंलन के पष्चात निम्नलिखत सांख्यकीय पद्धतियों को प्रयुक्त किया गया–

अ मध्यमान

ब प्रामाणिक विचलन

स क्रान्तिक अनुपात

द प्रसरण विष्लेषण

अ मध्यमान

मध्यमान को अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है। जब किसी एक समूह के आंकड़ों अथवा प्राप्त अंकों को जोड़कर समूह की संख्या से विभाजित किया जाता हैं और इस प्रकार जो मान प्राप्त होता हैं उसी मान को उस समूह के आँकडों का मध्यमान कहा जाता है। सम्बन्धित समूह के विषय मे यह ऐसा अंक होता है, जिसका सम्बन्ध समूह के प्रत्येक आँकडों से होता है। यह एक ऐसा स्थिर अंक होता है जो कि पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करता है व जिसका स्वरुप अत्यन्त सरल व बोधगम्य होता है तथा इसकी गणना भी सरल होती है।

१ अवर्गीकृत प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करना–

सरल शब्दो में औसत अथवा मध्यमान का अर्थ अलग–अलग प्राप्तांको के योगफल (ΣX) में उनकी संख्या (N) से भाग देने पर निकाले गये मूल्य से है। विशेष रुप से अवर्गीकृत प्रदत्त का मध्यमान ज्ञात करने के लिए यही सरल विधि प्रयोग में लायी जाती है। मध्यमान प्राप्त करने की उपर्युक्त विधि को सूत्र का रुप दिया जा सकता है –

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

जहां $M =$ मध्यमान

$\Sigma =$ का योग

$X =$ प्राप्तांक

$N =$ समूह में सदस्यों की संख्या

२ वर्गीकृत प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करना

यद्यपि बडे समूहों के प्रदत्त को व्यवस्थित किये बिना ही मध्यमान अथवा किसी अन्य केन्द्रवर्ती मान की संगणना की जा संकती है परन्तु यह व्यावहारिक दृष्टि से सुविधा जनक नहीं होता । ऐसे प्रदत्त को व्यवस्थित करके विभिन्न सांख्यकीय गणनायें प्राप्त करने में सुविधा होती है। वास्तव में व्यवस्थित प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करने का अर्थ आवृत्ति– वितरण से मध्यमान ज्ञात करना है।

व्यवस्थित प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करने की दो विधियाँ हैं–

1 दीर्घ विधि 2 संक्षिप्त विधि।

दीर्घ विधि में वर्गान्तर के मध्य बिन्दु को उस वर्गान्तर की सभी संख्याओं का प्रतिनिधि मानते हैं। तत्पष्चात उन मध्य बिन्दुओं को वर्गान्तर की आवृत्तियों से गुणा कर मान प्राप्त किया जाता है। सभी के योग में आवृत्तियों की संख्या का भाग देकर मध्यमान प्राप्त किया जाता है।

सूत्र रूप में $M = \frac{\Sigma fx}{N}$

जहां $M =$ मध्यमान

$\Sigma =$ का योग

$f =$ आवृत्ति वर्गान्तर की

$X =$ मध्य बिन्दु

N = आवृत्तियों का योग

संक्षिप्त विधि को कतिपय मध्यमान विधि भी कहते है। सूत्र में रूप में हम इसको इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं–

सूत्र रूप में $M = A.M + \frac{\Sigma fd}{N} i$

जहां M = मध्यमान

A.M = कल्पित मध्यमान

Σ = का योग

f = आवृत्ति

d = विचलन

N = आवृत्तियों का योग

I = वर्ग अन्तराल

ब प्रामाणिक विचलन

प्रामाणिक विचलन विचलनशीलता के मापों में सबसे अधिक विश्वसनीय और स्थिर माप समझा जाता है, इसलिए मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों में इसका बहुत अधिक उपयोग होता है। किसी विशिष्टि न्यादर्ष का मध्यमान अपने समग्र के मध्यमान से उसी प्रकार भिन्नता प्रदर्षित करता है, जिस प्रकार किसी समूह के सदस्यों की निजी योग्यतायें समूह की केन्द्रीय योग्यता से भिन्नता प्रदर्षित करती हैं।

प्रामाणिक विचलन की गणना करते समय सारी प्रक्रियायें वही होती हैं जो मध्यमान विचलन की गणना में की जाती है अन्तर केवल इतना होता है कि प्रामाणिक विचलन ज्ञात करते समय सभी

विचलनों का वर्ग कर दिया जाता है और फिर उन वर्गों के योग का औसत निकालते हैं। अन्त में उस औसत का वर्गमूल ज्ञात लिया जाता है।

१ अव्यवस्थित प्रदत्त से प्रामाणिक विचलन ज्ञात करना

अव्यवस्थित प्रद्रत्त से प्रामाणिक विचलन निकालने मे निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

$$S.D = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

जहां Σd^2 = विचलनो के वर्ग का योग

N = प्राप्तांको की संख्या

२ व्यवस्थित प्रदत्त से प्रामाणिक विचलन ज्ञात करना

व्यवस्थित प्रदत्त से प्रमाणिक विचलन ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है

$$S.D = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$$

जहां Σfd^2 = विचलनों के वर्ग और आवृत्तियों के गुणनफल का योग

N = आवृत्तियों का योग

स क्रान्तिक अनुपात –

दो बडे व स्वतन्त्र समूहों के मध्यमानों के अन्तर की जाँच क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा की जाती है। इस परीक्षण के अन्तर्गत दोंनों मध्यमानों के अन्तर को दोंनों प्रतिदर्शों की मानक त्रुटि से विभाजित करने पर जो मान प्राप्त होता है वह क्रान्तिक अनुपात कहलाता है। दो मध्यमानों की विश्वसनीयता की जाँच उनके मध्यमान अन्तर तथा उनकी सम्बन्धित अन्तर की मानक त्रुटि पर

आधारित होती है।

दो बडे स्वतन्त्र समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के निम्नलिखित चरण होते हैं–

1. प्रत्येक समूह के मध्यमान की मानक त्रुटि ज्ञात करना।

2 दोनों समूहों के अन्तर की मानक त्रुटि ज्ञात करना ।

3 दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर को अन्तर की मानक त्रुटि सें विभाजित करना तथा क्रान्तिक अनुपात के मान को ज्ञात करना ।

4 दोनों समूहों की अलग–2 संख्याओं के आधार पर उपयुक्त स्वतन्त्रता के अंषों को ज्ञात करना ।

5 ''टी'' तालिका में सम्बन्धित स्वतन्त्रता के अंशों पर तथा नविष्वास के विभिन्न स्तरों पर सार्थकता की जाँच करना।

क्रान्तिक अनुपात का सूत्र

$$\text{क्रान्तिक अनुपात (C.R)} = \frac{M_1 - M_2}{\Sigma E_D}$$

$$\Sigma E_D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

जहां M_1 = पहले समूह का मध्यमान

M_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

ΣE_D = अन्तर की मानक त्रुटि

σ_1 = प्रथम समूह का प्रामाणिक विचलन

σ_2 = द्वितीय समूह का प्रामाणिक विचलन

N_1 = प्रथम समूह की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की संख्या

द प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण– विष्लेषण के मान की अभिव्यक्ति एफ अनुपात (F-Ratio) द्वारा की जाती है। जिस प्रकार टी परीक्षण का मान दो मध्यमानों के अन्तर तथा उनके अन्तरों की मानक त्रुटि का अनुपात होता है। उसी प्रकार प्रसरण विश्लेषण मे एफ अनुपात सम्बन्धित समूहों के मध्यमानों की विचलनशीलता तथा समूहों के अन्तर्गत विभिन्न इकाइयों की विचलनशीलता के अनुपात को व्यक्त करता है।

$$\text{एफ–अनुपात} = \frac{\text{समूहों के मध्य में मध्यमान वर्ग}}{\text{स्वयं समूहों के अन्तर्गत इकाइयों मे व्याप्त मध्यमान वर्ग}}$$

इस प्रकार प्रसरण विश्लेषण विधि एक ऐसी परीक्षण विधि है, जिससे वस्तुनिष्ठ आधार पर एक ऐसा मापदण्ड उपलब्ध हो जाता है, जिसके द्वारा यह ज्ञात हो सकता है कि क्या विभिन्न समूहों में व्याप्त विचलनशीलता, समूहों के अन्तर्गत व्याप्त विचलनशीलता से इतनी अधिक मात्रा में है कि जिससे यह न्यायोचित अनुमान लगाया जा सके कि विभिन्न समूहों के मध्यमान एक समान नहीं हैं और वे अलग–अलग जनसंख्याओं से लिये गये हैं।

अध्याय—चतुर्थ
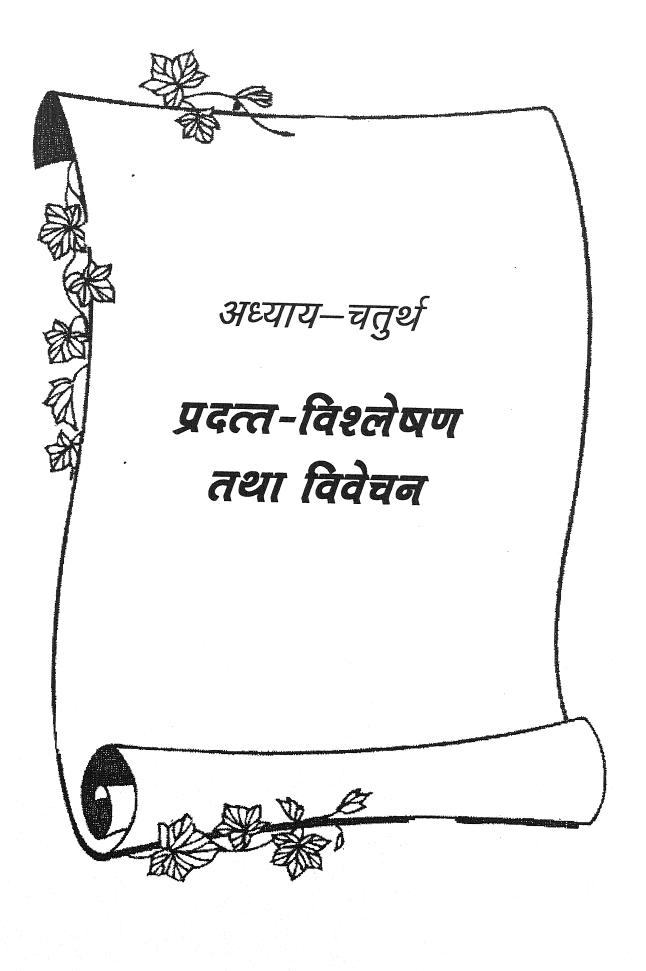
प्रदत्त-विश्लेषण तथा विवेचन

प्रदत्त–विश्लेषण तथा विवेचन

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर प्रदत्त–विश्लेषण तथा विवेचन निम्नलिखित भागों में प्रस्तुत किया गया–

भाग–1 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–2 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–3 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–4 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–5 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–6 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–7 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–8 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग—9 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग—10 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामींण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग—11 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग—12 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग—१

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 पुरूष व 300 महिला शिक्षकों पर प्राथमिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.01 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.01 पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात –

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	पुरूष N=300		महिला N=300		क्रान्तिक अनुपात	
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन		
प्राथमिक शिक्षा	39.31	4.00	37.56	3.38	5.83	<0.01
अनिवार्य शिक्षा	38.03	4.80	37.56	4.07	1.30	>0.05
निःशुल्क शिक्षा	18.16	3.02	18.82	3.50	2.44	<0.05
आपरेशन ब्लैक बोर्ड	18.27	2.53	17.47	2.34	4.00	<0.01
शिक्षा की समस्यायें	12.83	2.94	13.18	3.15	1.40	>0.05
योग	126.72	8.89	124.61	7.80	3.10	<0.01

सार्थकता स्तर 0.01 → 2.59
0.05 → 1.96

तालिका 4.01 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 126.72) रखते हैं, जबकि महिला शिक्षिकायें तुलनात्मक रूप में कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 124.61) रखती हैं। पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा (मध्यमान 39.31), अनिवार्य शिक्षा (मध्यमान 38.03), आपरेशन ब्लैड बोर्ड (मध्यमान 18.27) के प्रति महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इसके विपरीत महिला शिक्षिकायें निःशुल्क शिक्षा (मध्यमान 18.82) एवं शिक्षा की समस्याओं (मध्यमान 13.18) के प्रति पुरूषों की अपेक्षा अधिक

धनात्मक अभिवृत्ति रखती हैं। उपर्युक्त परिणाम बार चित्र–1 में भी प्रदर्शित किये गये हैं।

पुरूष तथा महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.01 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक धनात्मक रखते हैं क्रान्तिक अनुपात का मान 3.10 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा (क्रान्तिक अनुपात का मान 4.00) के प्रति सार्थक रूप से अधिक धनात्मक अभिवृत्ति 0.01 स्तर पर प्रदर्शित करते हैं। महिला शिक्षिकायें भी पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा निःशुल्क शिक्षा के प्रति सार्थक रूप से अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (क्रान्तिक अनुपात का मान 2.44) 0.05 स्तर पर रखती हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा तथा शिक्षा की समस्याओं के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षकों के प्रति कोई सार्थक अन्तर 0.05 स्तर पर प्राप्त नहीं हुआ।

उपर्युक्त परिणाम द्वारा स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन की उपकल्पना (1) ''पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों में पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्य सार्थक

अन्तर प्राप्त हुआ है।

भाग—२

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 शहरी व 300 ग्रामीण शिक्षकों पर प्राथमिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.02 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.02 शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात—

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	शहरी N=300		ग्रामीण N=300		क्रान्तिक अनुपात	
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन		
a. प्राथमिक शिक्षा	38.49	3.71	38.38	3.90	0.35	>0.05
b.अनिवार्य शिक्षा	37.79	4.06	37.79	4.82	-	>0.05
c.नि:शुल्क शिक्षा	18.04	3.21	18.95	3.29	3.50	<0.01
d.आपरेशन ब्लैक बोर्ड	17.22	2.39	18.52	2.37	6.84	<0.01
e.शिक्षा की समस्यायें	12.70	2.70	13.31	3.34	2.44	<0.05
योग	124.28	7.85	127.05	8.75	4.07	<0.01

सार्थकता स्तर 0.01 → 2.59

0.05 → 1.96

तालिका 4.02 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 127.05) अधिक धनात्मक प्रदर्शित करते हैं, जबकि शहरी शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं (मध्यमान 124.28)। ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा (मध्यमान 18.95), आपरेशन ब्लैक बोर्ड (18.52) तथा शिक्षा की समस्याओं (मध्यमान 13.31) के प्रति शहरी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों (37.79) में शहरी व ग्रामीण शिक्षकों में कोई अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है। इसी प्रकार के परिणाम बार चित्र–2 में प्रदर्शित किये गये हैं।

शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.02 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति शहरी शिक्षकों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक धनात्मक रखते हैं। क्रान्तिक अनुपात का मान 4.07 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा (क्रान्तिक अनुपात 3.50), आपरेशन ब्लैक बोर्ड (क्रान्तिक अनुपात 6.84) के प्रति 0.01 स्तर पर अधिक सार्थक अन्तर रखते हैं, जबकि शिक्षा की समस्याओं (क्रान्तिक अनुपात 2.44) के प्रति 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से अधिक

बार चित्र–2 शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांक
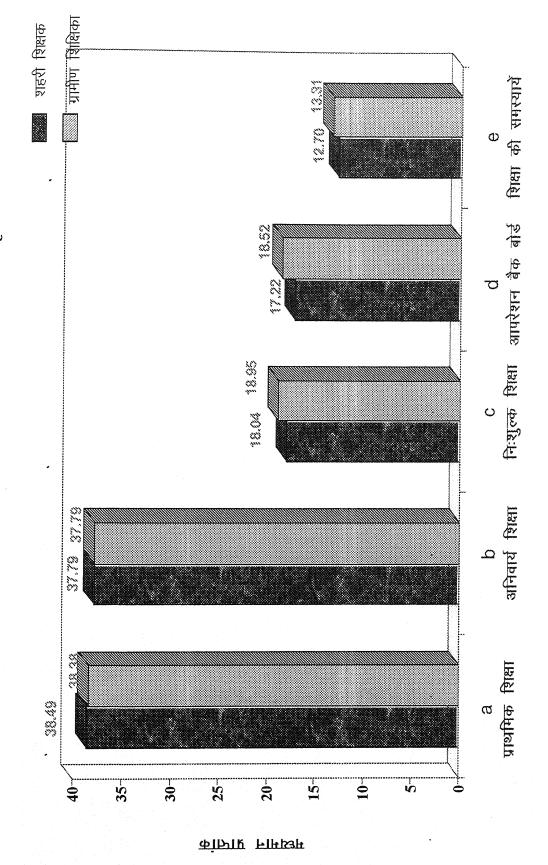
धनात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

उपर्युक्त परिणाम द्वारा स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए शहरी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। अतः शून्य उपकल्पना (2) ''शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

भाग—3

पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की कार्य दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना

300 पुरूष व 300 महिला शिक्षकों तथा 300 शहरी व 300 ग्रामीण शिक्षकों की कार्य—दक्षता का अध्ययन करने के उद्देश्य से शिक्षक दक्षता परीक्षण प्रशासित किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.03 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.03 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य—दक्षता प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात

उपसमूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
पुरूष शिक्षक	300	154.47	18.02	0.10 >005
महिला शिक्षिका	300	154.32	17.82	
शहरी शिक्षक	300	156.37	19.60	2.58 <0.01
ग्रामीण शिक्षक	300	152.42	17.90	

तालिका 4.03 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक कार्य दक्षता अधिक रखते हैं (मध्यमान 154.47) जबकि महिला शिक्षिकायें तुलनात्मक रूप से कम कार्य दक्षता (मध्यमान 154.32) रखती हैं। पुरूष व महिला शिक्षकों की कार्य दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.03 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक तथा महिला शिक्षकों की कार्य दक्षता के मध्य कोई सार्थक अन्तर 0.05 स्तर पर नहीं है। क्रान्तिक अनुपात का मान 0.10 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता है।

तालिका 4.03 का अवलोकन करने से यह भी स्पष्ट होता है कि शहरी शिक्षक अधिक कार्य दक्षता रखते हैं (मध्यमान 156.37) जबकि ग्रामीण शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम कार्य दक्षता रखते हैं (मध्यमान 152.42)। बार चित्र–3 द्वारा इसी प्रकार के परिणाम आलेखीय रूप मे प्रदर्शित हैं। शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों की कार्य दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.03 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का मान 2.58 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है। अतः स्पष्ट है कि शहरी शिक्षक सार्थक रूप से ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा अधिक कार्य–दक्षता रखते हैं। शून्य उपकल्पना (3) ''पुरूष व महिला तथा

बार चित्र–3 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की कार्य दक्षता प्राप्तांक
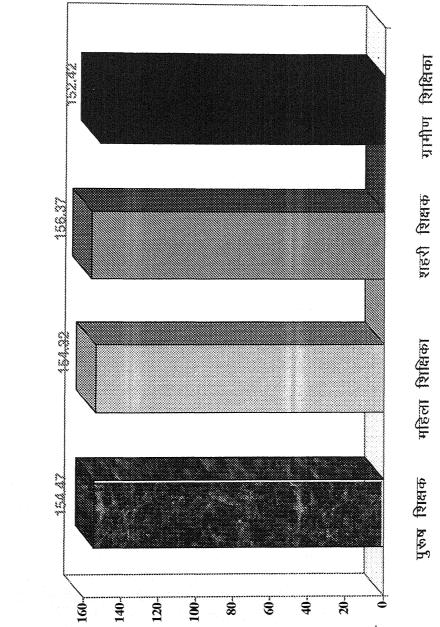
शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की कार्य–दक्षता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। यद्यपि पुरूष व महिला शिक्षकों की कार्य–दक्षता के मध्य कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है, किन्तु शहरी शिक्षक कार्य–दक्षता ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक रखते हैं।

भाग–४

पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना

300 पुरूष व 300महिला तथा 300 शहरी व 300 ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करने के उद्‌देश्य से विद्यालय वातावरण मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.40 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.04 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण प्राप्तांको का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात

उपसमूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
पुरूष शिक्षक	300	150.26	20.72	3.36 <0.01
महिला शिक्षिका	300	144.54	21.01	
शहरी शिक्षक	300	147.81	20.96	0.47 >0.05
ग्रामीण शिक्षक	300	147.00	21.15	

तालिका 4.04 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक विद्यालय वातावरण को अधिक उत्तम (मध्यमान 150.26) मानते हैं, जबकि महिला शिक्षिकायें तुलनात्मक रूप मे कम उत्तम (मध्यमान 144.54) मानती हैं। बार चित्र–4 में भी इसी प्रकार के परिणाम प्रदर्शित हैं। पुरूष शिक्षक तथा महिला शिक्षिकाओं के विद्यालय वातावरण प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.04 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा विद्यालय वातावरण को अधिक उत्तम मानते हैं। क्रान्तिक अनुपात का मान 3.36 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है।

तालिका 4.04 का निरीक्षण करने से यह भी स्पष्ट होता है कि शहरी शिक्षक विद्यालय वातावरण को (मध्यमान 147.81) अधिक उत्तम मानते हैं, जबकि ग्रामीण शिक्षक तुलनात्मक रूप से कुछ कम उत्तम मानते हैं (मध्यमान 147.00)। शहरी तथा ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.04 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि शहरी शिक्षक तथा ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण प्राप्तांकों के मध्य 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। क्रान्तिक अनुपात का मान 0.47 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है।

बार चित्र–4 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण प्राप्तांक
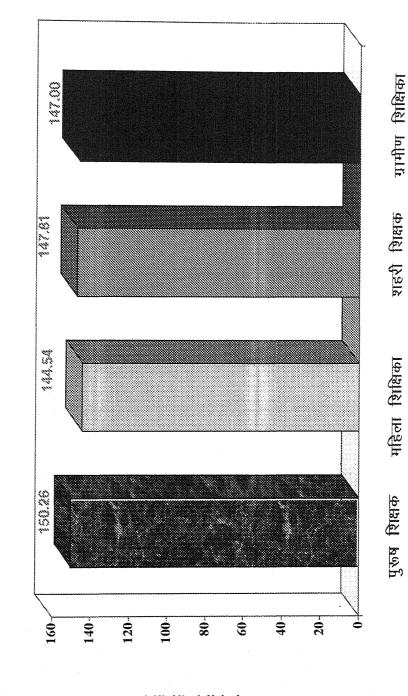
उपर्युक्त प्राप्त परिणाम के आधार पर स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना (4) ''पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' असत्य सिद्ध होती है। पुरूष व महिला शिक्षकों के विद्यालय वातावरण प्राप्तांको के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है, किन्तु शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है।

भाग—५

पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य सन्तोष के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

300 पुरूष व 300 महिला शिक्षकों तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य—सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से शिक्षक—कार्य सन्तोष परीक्षण प्रशासित किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.05 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.05 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात

उपसमूह	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
पुरूष शिक्षक	300	296.03	25.60	4.54 <0.01
महिला शिक्षिका	300	284.55	35.60	
शहरी शिक्षक	300	285.99	31.37	3.37 <0.01
ग्रामीण शिक्षक	300	294.59	31.11	

तालिका 4.05 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक अधिक कार्य–सन्तोष रखते हैं (मध्यमान 296.03) जबकि महिला शिक्षिकायें तुलनात्मक रूप से कम कार्य–सन्तोष (मध्यमान 284.55) रखती हैं। इसी प्रकार के परिणाम बार चित्र–5 में प्रदर्शित हैं। पुरूष शिक्षक तथा महिला शिक्षिकाओं के कार्य–सन्तोष प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.05 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक सार्थक रूप से महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक कार्य सन्तोष रखते हैं। क्रान्तिक अनुपात का मान 4.54 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है।

तालिका 4.05 का निरीक्षण करने से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शिक्षक अधिक कार्य–सन्तोष रखते हैं (मध्यमान 294.59) जबकि शहरी शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम कार्य सन्तोष (मध्यमान

बार चित्र–5 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष प्राप्तांक
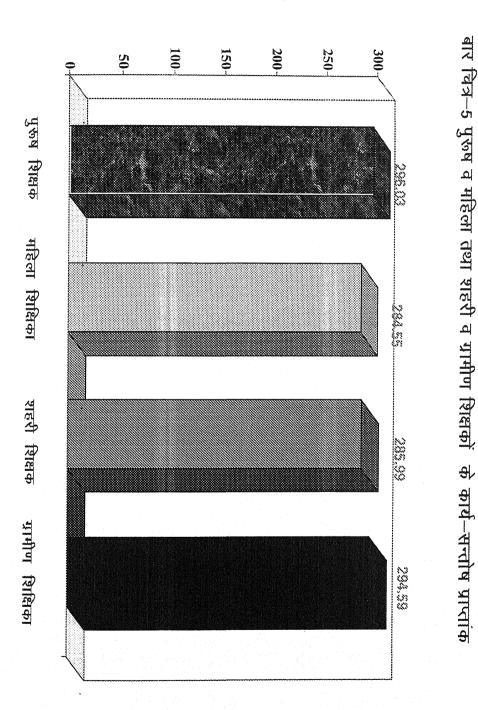
285.99) रखते हैं। इसी प्रकार के परिणाम बार चित्र–5 मे प्रदर्शित हैं। शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.05 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि ग्रामीण शिक्षक सार्थक रूप से शहरी शिक्षकों की तुलना में अधिक कार्य–सन्तोष रखते हैं। क्रान्तिक अनुपात का मान 3.37 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है।

उपुर्यक्त परिणाम द्वारा स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना (5) ''पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' असत्य सिद्ध होती है। पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है।

भाग–६

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई।

प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.06 में प्राप्त हुआ–

तालिका 4.06 शहरी व ग्रामीण पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	126.78	126.66	126.72
	प्रामाणिक विचलन	8.67	9.13	8.89
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	121.78	127.43	124.61
	प्रामाणिक विचलन	5.99	8.37	7.80
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	124.28	127.05	125.66
	प्रामाणिक विचलन	7.85	8.75	8.42

तालिका 4.06 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 124.61) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 126.72) प्राप्त हुई। इसी प्रकार ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 127.05) रखते हैं, जबकि शहरी शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं

(मध्यमान 124.28)। प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति ग्रामीण महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 127.43) प्रदर्शित करती हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति शहरी महिला शिक्षिकायें प्रदर्शित करती हैं (मध्यमान 121.78)। स्पष्ट है कि ग्रामींण महिला शिक्षिकायें प्राथमिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करती हैं, जिसके कारण उनकी सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.07 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.07 लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का 2×2 काकरीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण– विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A लिंग (पुरूष व महिला	669.93	1	669.93	10.13 <0.01
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	1148.17	1	1148.17	17.36 <0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	1249.93	1	1249.93	18.90 <0.01
समूहान्तर्गत	39417.97	596	66.14	सार्थकता स्तर
योग	42485.99	599		0.01 →6.70 0.05 →3.86

तालिका 4.07 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात 10.13 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 17.36 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 18.90 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है अतः प्रस्तुत अध्ययन की उपकल्पना (6) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग तथा क्षेत्र सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

6.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.08 में प्राप्त हुआ–

तालिका 4.08 शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	39.94	38.68	39.31
	प्रामाणिक विचलन	3.97	3.95	4.00
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	37.05	38.08	37.56
	प्रामाणिक विचलन	2.77	3.85	3.38
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	38.49	38.38	38.44
	प्रामाणिक विचलन	3.71	3.90	3.81

तालिका 4.08 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.56) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 39.31) प्राप्त हुई। इसी प्रकार शहरी शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.49) रखते हैं, जबकि ग्रामीण शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं (मध्यमान 38.38)। प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति शहरी पुरूष (मध्यमान 39.94) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति शहरी महिला शिक्षिकायें प्रदर्शित करती हैं (मध्यमान 37.05)। स्पष्ट है कि शहरी पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं, जिसके कारण उनकी सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति हैं।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.09 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.09 लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का 2×2 काकरीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A लिंग (पुरूष व महिला	457.62	1	457.62	33.99 <0.01
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	1.93	1	1.93	0.14 >0.05
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	197.23	1	197.23	14.65 <0.01
समूहान्तर्गत	8024.81	596	13.46	सार्थकता स्तर 0.01 →6.70 0.05 →3.86
योग	8681.59	599		

तालिका 4.09 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात 33.99 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसके विपरीत क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात का मान 0.14 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात

14.65 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) एवं क्षेत्र (शहरी व ग्रामींण) सार्थक रूप से प्रभावित करता है तथा लिगं एवं क्षेत्र का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.01) "प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं।

6.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवक्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.10 में प्राप्त हुआ–

तालिका 4.10 शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षिकाओ की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन—

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	37.81	38.26	38.03
	प्रामाणिक विचलन	4.16	5.37	4.80
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	37.78	37.32	37.56
	प्रामाणिक विचलन	3.96	4.17	4.07
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	37.79	37.79	37.79
	प्रामाणिक विचलन	4.06	4.82	4.45

तालिका 4.10 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.56) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.03) प्राप्त हुई। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति समान अभिवृत्ति (मध्यमान 37.79) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति ग्रामीण पुरूष (मध्यमान 38.26) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति

ग्रामीण पुरूष शिक्षिकायें प्रदर्शित करती हैं (मध्यमान 37.32)। स्पष्ट है कि ग्रामीण पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति हैं।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.11 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.11 लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का 2×2 काकरीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A लिंग (पुरूष व महिला	35.09	1	35.09	1.77 >0.05
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	1.00	1	1.00	-
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	31.13	1	31.13	1.57 >0.05
समूहान्तर्गत	11800.58	596	19.83	सार्थकता स्तर
योग	11866.91	599		0.01 →6.70 0.05 →3.86

तालिका 4.11 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 1.77 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव प्रदर्शित नहीं करता है)। इसी प्रकार क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) भी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 1.57 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है।)

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.02) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' अतः शून्य उपकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग तथा क्षेत्र सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं।

6.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.12 में प्राप्त हुआ—

तालिका 4.12 शहरी व ग्रामीण पुरूष व महिला शिक्षको की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	17.71	18.61	18.16
	प्रामाणिक विचलन	3.34	2.59	3.02
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	18.37	19.28	18.82
	प्रामाणिक विचलन	3.05	3.85	3.50
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	18.04	18.95	18.49
	प्रामाणिक विचलन	3.21	3.29	3.28

तालिका 4.12 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 18.16) की अपेक्षा महिला शिक्षिकाओं की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.82) प्राप्त हुई। इसी प्रकार ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.95) रखते हैं, जबकि शहरी शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम धनात्मक अभिवृत्ति रखते है (मध्यमान 18.04)। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति ग्रामीण महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 19.28) प्रदर्शित

करती हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति शहरी पुरूष शिक्षक प्रदर्शित करतें हैं (मध्यमान 17.71)। स्पष्ट है कि ग्रामीण महिला शिक्षिकायें प्राथमिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करती हैं, जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति हैं।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.13 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.13 लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का 2×2 काकरीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात
A लिंग (पुरूष व महिला	66.00	1	66.00	6.29 <0.05
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	124.21	1	124.21	11.83 <0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	1.66	1	1.66	-
समूहान्तर्गत	6255.74	596	10.49	सार्थकता स्तर 0.01 →6.70 0.05 →3.86
योग	6445.96	599		

तालिका 4.13 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात 6.29 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव प्रदर्शित करता है)। क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) भी प्रांथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 11.83 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है) परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.03) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग तथा क्षेत्र सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

6.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.14 में प्राप्त हुआ–

तालिका 4.14 शहरी व ग्रामीण पुरूष व महिला शिक्षको की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	18.05	18.48	18.27
	प्रामाणिक विचलन	2.30	2.73	2.53
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	16.38	18.57	17.47
	प्रामाणिक विचलन	2.18	1.95	2.34
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	17.22	18.52	17.87
	प्रामाणिक विचलन	2.39	2.37	2.46

तालिका 4.14 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 17.47) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धंनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.27) प्राप्त हुई। इसी प्रकार ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.52) रखते हैं, जबकि शहरी शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम धनात्मक अभिवृत्ति रखते है (मध्यमान 17.22)। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति ग्रामीण महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 18.57) प्रदर्शित करती हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति शंहरी महिला शिक्षिकायें प्रदर्शित करती हैं (मध्यमान 16.38)। स्पष्ट है कि ग्रामीण महिला शिक्षिकायें प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड को सर्वाधिक महत्व प्रदान करती हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति हैं।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.15 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.15 लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का 2×2 काकरीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	94.41	1	94.41	17.72	<0.01
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	256.11	1	256.11	48.07	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	116.16	1	116.16	21.80	<0.01
समूहान्तर्गत	3175.19	596	5.32	सार्थकता स्तर	
योग	3641.86	599		0.01 →6.70 0.05 →3.86	

तालिका 4.15 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 17.72 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) भी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 48.07 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर

पर सार्थक है) परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 21.80 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.04) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को लिंग तथा क्षेत्र सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

6.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला

शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.16 में प्राप्त हुआ–

तालिका 4.16 शहरी व ग्रामीण पुरूष व महिला शिक्षको की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांको का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	13.23	12.43	12.83
	प्रामाणिक विचलन	2.95	2.89	2.94
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	12.17	14.19	13.18
	प्रामाणिक विचलन	2.32	3.53	3.15
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	12.70	13.31	13.00
	प्रामाणिक विचलन	2.70	3.34	3.05

तालिका 4.16 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 12.83) की अपेक्षा महिला शिक्षिकाओं की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.18) प्राप्त हुई। इसी प्रकार ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक

शिक्षा की समस्याओं के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.31) रखते हैं, जबकि शहरी शिक्षक तुलनात्मक रूप से कम धनात्मक अभिवृत्ति रखते है (मध्यमान 12.70)। प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति ग्रामीण महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 14.19) प्रदर्शित करती हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति शहरी महिला शिक्षिकायें प्रदर्शित करती हैं (मध्यमान 12.17)। स्पष्ट है कि ग्रामीण महिला शिक्षिकायें प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं को सर्वाधिक महत्व प्रदान करती हैं। जिसके कारण उनकी सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति हैं।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.17 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.17 लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	18.03	1	18.03	2.07	>0.05
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	55.20	1	55.20	6.33	<0.05
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	299.63	1	299.63	34.33	<0.01
समूहान्तर्गत	5201.13	596	8.73	सार्थकता स्तर 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	5573.99	599			

तालिका 4.17 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात का मान 2.07 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव प्रदर्शित करता है)। इसके विपरीत क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 6.33 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है)। लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव भी प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर

पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 34.33 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं लिंग व उनका का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.05) ''प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को लिंग तथा क्षेत्र सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

भाग–७

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। शिक्षकों के प्राप्त कार्य–सन्तोष प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक एक मान (Q_1) तथा

चतुर्थांक तीन (Q_3) मान ज्ञात किया गया। चतुर्थांक मान एक (Q_1) 270 प्राप्त हुआ जबकि चतुर्थांक मान तीन (Q_3) 311 प्राप्त हुआ। इस आधार पर 27 तथा इससे कम अंक प्राप्त करने वाले शिक्षकों को निम्न कार्य सन्तोष से सम्बन्धित माना गया। इसी प्रकार 311 प्राप्तांक अथवा अधिक प्राप्तांक वाले शिक्षकों को उच्च कार्य सन्तोष से सम्बन्धित माना गया। मध्यम कार्य सन्तोष के शिक्षक 271 से 310 के मध्य के प्राप्तांक से सम्बन्धित निर्धारित किये गये। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.18 से प्राप्त हुआ।

तालिका 4.18 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		उच्च कार्य–सन्तोष	मध्यम कार्य–सन्तोष	निम्न कार्य–सन्तोष	योग
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	128.85	127.42	121.35	126.72
	प्रामाणिक विचलन	9.60	8.48	7.03	8.89
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	127.42	125.09	121.27	124.61
	प्रामाणिक विचलन	7.89	7.28	7.74	7.80
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	128.20	126.30	121.30	125.66
	प्रामाणिक विचलन	8.86	8.00	7.43	8.42

तालिका 4.18 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 126.72) प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 128.20) रखते हैं। जबकि मध्यम कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 126.30) रखते हैं; किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 121.30) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के प्रतिं सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति उच्च कार्य सन्तोष के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 128.85) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 121.27) निम्नकार्य संतोष से सम्बन्धित प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि उच्च कार्य सन्तोष से सम्बन्धित पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.19 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.19 लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	198.23	1	198.23	3.06	>0.05
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	3281.65	2	1640.82	25.30	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	117.14	2	58.57	0.90	>0.05
समूहान्तर्गत	38521.41	594	64.85	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	42485.99	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.19 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। (एफ अनुपात 3.06 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है।) परन्तु कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 25.30 प्राप्त हुआ जो कि 0. 01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 0.90 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.0) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा अन्तः क्रियात्मक सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते है किन्तु शिक्षकों का कार्य–सन्तोष प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

7.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक

विचलन इस प्रकार तालिका 4.20 से प्राप्त हुआ।

तालिका 4.20 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		उच्च कार्य–सन्तोष	मध्यम कार्य–सन्तोष	निम्न कार्य–सन्तोष	योग
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	40.00	39.05	39.21	39.31
	प्रामाणिक विचलन	4.59	3.59	4.38	4.00
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	39.82	37.15	36.59	37.56
	प्रामाणिक विचलन	2.88	3.00	3.76	3.38
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	39.92	38.13	37.66	38.44
	प्रामाणिक विचलन	3.89	3.44	4.21	3.81

तालिका 4.20 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.56) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों को अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 39.31) प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 39.92) रखते हैं, जबकि मध्यम कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.13)

रखते हैं; किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध यमान 37.66) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति उच्च कार्य सन्तोष से सम्बन्धित पुरूष शिक्षक (मध्यमान 40.00) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 36.59) निम्न कार्य संतोष से सम्बन्धित प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि उच्च कार्य सन्तोष के पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.21 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.21 लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	297.25	1	297.25	22.75	<0.01
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	366.09	2	183.04	14.01	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	107.07	2	53.53	4.10	<0.05
समूहान्तर्गत	7760.85	594	13.06	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	8681.59	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.21 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है। (एफ अनुपात 22.75 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है।) इसी प्रकार शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0. 01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर

प्रभावित करता है (एफ अनुपात 4.10 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.01) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिग (पुरूष व महिला) तथा शिंक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती हैं प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति लिंग तथा कार्य संतोष सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

7.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त

प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.22 से प्राप्त हुआ।

तालिका 4.22 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांको का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		उच्च कार्य–सन्तोष	मध्यम कार्य–सन्तोष	निम्न कार्य–सन्तोष	योग
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	39.31	38.35	35.15	38.03
	प्रामाणिक विचलन	4.53	4.76	4.24	4.80
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	37.93	38.29	35.63	37.55
	प्रामाणिक विचलन	2.84	3.51	5.31	4.07
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	38.68	38.32	35.43	37.79
	प्रामाणिक विचलन	3.90	4.19	4.88	4.45

तालिका 4.22 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.55) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों को अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.03) प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक

धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.68) रखते हैं। जबकि मध्यम कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.32) रखते हैं; किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 35.43) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति उच्च कार्य सन्तोष के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 39.31) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 35.15) निम्न कार्य–संतोष से सम्बन्धित प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि उच्च कार्य सन्तोष सम्बन्धित पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.23 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.23 लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	12.51	1	12.51	0.68	>0.05
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	895.40	2	447.70	24.38	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	61.78	2	30.89	1.68	>0.05
समूहान्तर्गत	10886.89	594	18.36	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	11866.91	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.23 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नही करता है। (एफ अनुपात का मान 0.68 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)। परन्तु शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 24.38 प्राप्त हुआ जो कि

0.01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 1.68 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति लिंग (पुरूष व महिला) तथा अन्तः क्रियात्मक का प्रभाव कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) को सार्थक रूप से प्रभावित नही करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.02) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों का कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है.। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि कार्य संतोष प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक प्रभावित करता है।

7.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 1050 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.24 मे प्राप्त हुआ।

तालिका 4.24 शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांको का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन–

उपसमूह		उच्च कार्य–सन्तोष	मध्यम कार्य–सन्तोष	निम्न कार्य–सन्तोष	योग
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	19.72	18.14	16.02	18.16
	प्रामाणिक विचलन	2.25	2.83	3.29	3.02
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	19.66	19.06	17.63	18.82
	प्रामाणिक विचलन	4.08	3.71	1.87	3.50
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	19.69	18.58	16.98	18.49
	प्रामाणिक विचलन	3.21	3.31	2.66	3.28

तालिका 4.24 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 18.16) की अपेक्षा महिला शिक्षिकाओं की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.82) प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 19.69) रखते हैं, जबकि मध्यम कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.58) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 16.98) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति उच्च कार्य सन्तोष के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 19.72) प्रदर्शित करते हैं। इसक विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षक (मध्यमान 16.02) निम्न कार्य–सन्तोष के प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि उच्च कार्य–सन्तोष के पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव अध्ययन करने के उद्देश्य से 2X3 कारकीय

अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.25 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.25 लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	83.25	1	83.25	8.52	<0.01
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	540.08	2	270.04	27.65	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	46.02	2	23.01	2.36	>0.05
समूहान्तर्गत	5801.66	594	9.77	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	6445.96	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.25 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 8.52 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर

प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 27.65 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 2.36 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित करते है। अतः अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.03) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा कार्य संतोष सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

7.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपेरशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति

अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.26 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.26 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन।

उपसमूह		उच्च कार्य–सन्तोष	मध्यम कार्य–सन्तोष	निम्न कार्य–सन्तोष	योग
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	18.86	18.19	17.65	18.27
	प्रामाणिक विचलन	1.37	2.80	2.70	2.52
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	17.42	17.86	16.68	17.47
	प्रामाणिक विचलन	2.90	2.18	1.93	2.33
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	18.21	18.03	17.08	17.87
	प्रामाणिक विचलन	2.31	2.52	2.32	2.47

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 17.41) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक ानात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.27) प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.21) रखते हैं। जबकि मध्यम कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.03) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 17.08) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षक (मध्यमान 18.86) उच्च कार्य संतोष के प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकाओं (मध्यमान 16.68) निम्न कार्य–संतोष से सम्बन्धित प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि उच्च कार्य सन्तोष के पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

• प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–संतोष (उच्च,

मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.27 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.27 लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला	101.99	1	101.99	17.67	<0.01
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	79.22	2	39.61	6.86	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	32.36	2	16.18	2.80	>0.05
समूहान्तर्गत	3428.30	594	5.77	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	3641.86	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.27 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 17.67 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर

प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 6.86 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूपसे 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 2.80 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.04) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभााव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट हे कि लिंग तथा कार्य संतोष सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

7.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व

निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.28 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.28 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन।

उपसमूह		उच्च कार्य–सन्तोष	मध्यम कार्य–सन्तोष	निम्न कार्य–सन्तोष	योग
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	10.96	13.48	13.31	12.83
	प्रामाणिक विचलन	2.59	2.77	2.90	2.94
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	12.71	12.68	14.62	13.18
	प्रामाणिक विचलन	3.44	3.07	2.60	3.15
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	11.76	13.09	14.08	13.00
	प्रामाणिक विचलन	3.12	2.94	2.79	3.05

तालिका 4.28 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान

12.83) की अपेक्षा महिला शिक्षिकाओं की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.18) प्राप्त हुई। इसी प्रकार निम्न कार्य–सन्तोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 14.08) रखते हैं, जबकि मध्यम कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.09) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत उच्च कार्य–संतोष रखने वाले शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 11.76) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 14.62) निम्न कार्य संतोष से सम्बन्धित प्रदर्शित करती हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षकों (मध्यमान 10.96) उच्च कार्य–संतोष के प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि महिला शिक्षिका प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं को सर्वाधिक महत्व प्रदान करती हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.29 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.29 लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	68.89	1	68.89	8.19	<0.01
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	299.81	2	149.90	17.81	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	203.65	2	101.82	12.10	<0.01
समूहान्तर्गत	4999.42	594	8.41	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	5573.99	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.29 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात 8.19 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभावों को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 17.81 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप

से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 12.10 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.05) ''प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति लिंग तथा कार्य संतोष सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

भाग—८

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करके उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवत्ति (कुल योग) मापनी प्रशासित की गई। शिक्षकों के विद्यालय वातावरण सम्बन्धित प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक एफ

(Q_1) तथा चतुर्थांक तीन (Q_3) की गणना की गई। चतुर्थांक मान एक (Q_1) 134 तथा (Q_3) का मान 163 प्राप्त हुआ। इस प्रकार 134 तथा कम प्राप्तांक से सम्बन्धित शिक्षकों को निम्न वातावरण जबकि 163 तथा अधिक प्राप्तांक सम्बन्धित शिक्षकों को उत्तम वातावरण का निर्धारित किया गया। 135 से 162 के मध्य प्राप्तांक के शिक्षकों को मध्यम वातावरण से सम्बन्धित निर्धारित किया गया। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.30 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.30 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन—

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	130.25	125.27	125.87	126.72
	प्रामाणिक विचलन	9.37	8.79	7.19	8.89
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	123.90	124.32	125.59	124.61
	प्रामाणिक विचलन	8.55	6.53	8.79	7.80
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	127.20	124.84	125.70	125.66
	प्रामाणिक विचलन	9.50	7.84	8.17	8.42

तालिका 4.30 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) (मध्यमान 124.61) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 126.72) प्राप्त हुई। इसी प्रकार विद्यालय का उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 127.20) पाई गई। जबकि विद्यालय के निम्न वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षक की प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 125.70) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत विद्यालय के मध्यम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उत्तम वातावरण के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 130.25) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें (विद्यालय के उत्तम वातावरण) (मध्यमान 123.90) को प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति (कुल योग) अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला तथा विद्यालय वातावरण (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव अध्ययन करन के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.31 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.31 लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	856.30	1	856.30	12.62	<0.01
B विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	526.10	2	263.05	3.88	<0.05
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	908.96	2	454.48	6.70	<0.01
समूहान्र्तगत	40305.17	594	67.85	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	42458.99	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.31 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं (एफ अनुपात 12.62 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी कारण विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 3.88 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है)। लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित

करता है (एफ अनुपात 6.70) प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति (कुलयोग) अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (8.0) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति लिंग तथा विद्यालय वातावरण सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

8.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिंकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.32 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.32 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	39.42	38.63	40.92	39.31
	प्रामाणिक विचलन	3.79	4.28	2.97	4.00
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	36.48	38.07	37.68	37.56
	प्रामाणिक विचलन	4.06	3.26	2.76	3.38
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	38.01	38.38	38.97	38.44
	प्रामाणिक विचलन	4.17	3.85	3.25	3.81

तालिका 4.32 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.56) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 39.31) प्राप्त हुई। इसी प्रकार विद्यालय का निम्न वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.97) पाई गई। जबकि विद्यालय के मध्यम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षक की प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.38) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत विद्यालय

के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.01) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के निम्न वातावरण के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 40.92) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें विद्यालय के उत्तम वातावरण (मध्यमान 36.48) को प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के निम्न वातावरण से सम्बन्धित पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव अध्ययन करन के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.33 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.31 लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	676.20	1	676.20	51.03	<0.01
B विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	145.78	2	72.89	5.50	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	236.62	2	118.31	8.93	<0.01
समूहान्र्तगत	7870.58	594	13.25	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	8681.59	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.33 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं (एफ अनुपात 51.04 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। विद्यालय वातावरण भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है है (एफ अनुपात का मान 5.50 प्राप्त हुआ)। लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 8.93 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता

हैं)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (8.01) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति लिंग तथा विद्यालय वातावरण सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

8.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करके उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.34 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.34 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	39.01	37.27	38.74	38.03
	प्रामाणिक विचलन	4.29	5.14	4.20	4.80
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	37.73	36.92	38.33	37.54
	प्रामाणिक विचलन	5.29	3.44	3.66	4.07
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	38.40	37.11	38.49	37.79
	प्रामाणिक विचलन	4.82	4.44	3.87	4.45

तालिका 4.34 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.54) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.03) प्राप्त हुई। इसी प्रकार विद्यालय का निम्न वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.49) पाई गई। जबकि विद्यालय के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

कम धनात्मक (मध्यमान 38.40) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत विद्यालय के मध्यम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 37.11) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उत्तम वातावरण के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 39.01) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति महिला शिक्षिकायें विद्यालय के मध्यम वातावरण (मध्यमान 36.92) को प्रदर्शित करती हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के उद्‌देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.35 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.35 लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश—

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	62.18	1	62.18	3.20	>0.05
B विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	273.51	2	136.76	7.04	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	23.71	2	11.85	0.61	>0.05
समूहान्तर्गत	11520.96	594	19.43	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	11866.91	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.35 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता हैं (एफ अनुपात 3.20 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)। परन्तु विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक प से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 7.04 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक

शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 0.61 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (8.02) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा अन्तःक्रियात्मक सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं। किन्तु विद्यालय का वातावरण प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

8.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व

निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करके उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.36 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.36 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन—

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुंरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	19.21	17.92	17.41	18.16
	प्रामाणिक विचलन	2.63	3.18	2.72	3.02
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	19.36	19.12	17.96	18.82
	प्रामाणिक विचलन	3.33	2.97	4.15	3.50
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	19.28	18.47	17.74	18.49
	प्रामाणिक विचलन	2.98	3.14	3.65	3.28

तालिका 4.36 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति

(मध्यमान 18.16) अभिवृत्ति की अपेक्षा महिला शिक्षिकाओं की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.82) प्राप्त हुई। इसी प्रकार विद्यालय का उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 19.28) पाई गई जबकि विद्यालय के मध्यम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कम धनात्मक (मध्यमान 18.47) रखते हैं। किन्तु इसके विपरीत विद्यालय को निम्न वातावरण से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 17.74) रखते है। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उत्तम वातावरण के महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 19.36) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षक विद्यालय के निम्न वातावरण (मध्यमान 17.41) को प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित महिला शिक्षिकायें प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के

उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.37 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.37 लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	53.87	1	53.87	5.21	<0.05
B विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	193.56	2	96.78	9.35	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	30.01	2	15.00	1.45	>0.05
समूहान्तर्गत	6145.14	594	10.34	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	6445.96	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.37 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं (एफ अनुपात 5.21 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर

प्रभावित करता है (एफ अनुपात 9.35 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 1.45 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (8.03) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा अन्तःक्रियात्मक सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं, किन्तु लिंग तथा विद्यालय का वातावरण प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

8.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति

अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करके उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.38 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.38 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुंरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	19.42	18.20	16.92	18.27
	प्रामाणिक विचलन	2.36	2.62	1.65	2.53
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	17.07	17.40	17.91	17.47
	प्रामाणिक विचलन	1.92	2.81	1.76	17.47
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	18.29	17.83	17.52	17.87
	प्रामाणिक विचलन	2.46	2.74	1.78	2.46

तालिका 4.38 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 17.47) की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.27) प्राप्त हुई। इसी प्रकार विद्यालय का उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 19.42) पाई गई जबकि विद्यालय के मध्यम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.20) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत विद्यालय को निम्न वातावरण से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 16.92) रखते है। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उत्तम वातावरण के पुरूष शिक्षक (मध्यमान 19.42) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षक विद्यालय के निम्न वातावरण (मध्यमान 16.92) को प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के

प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.39 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.39 लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	70.13	1	70.13	12.63	<0.01
B विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	52.08	2	26.04	4.69	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	211.22	2	105.61	19.02	<0.01
समूहान्तर्गत	3297.70	594	5.55	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	3641.86	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.39 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आंपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं (एफ अनुपात 12.63 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार विद्यालय

वातावरण (उत्तम, मध्यम, व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 4.69 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 19.02 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (8.04) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति लिंग तथा विद्यालय वातावरण सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

8.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग

(पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करके उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4. 40 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.40 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	13.17	13.06	11.79	12.83
	प्रामाणिक विचलन	3.20	3.03	2.02	2.94
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	13.15	12.81	13.74	13.18
	प्रामाणिक विचलन	2.02	2.82	4.14	3.15
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	13.16	12.94	12.96	13.00
	प्रामाणिक विचलन	2.69	2.93	3.58	3.05

तालिका 4.40 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष

शिक्षको की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति (मध्यमान 12.83) की अपेक्षा महिला शिक्षिकायें की अधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.18) प्राप्त हुई। इसी प्रकार विद्यालय का उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति सर्वाधिक धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.16) पाई गई जबकि विद्यालय के निम्न वातावरण से सम्बन्धित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 12.96) रखते हैं, किन्तु इसके विपरीत विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 12.94) रखते है। प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के निम्न वातावरण के महिला शिक्षिकायें (मध्यमान 13.74) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षक विद्यालय के निम्न वातावरण (मध्यमान 11.79) को प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के निम्न वातावरण से सम्बन्धित महिला शिक्षिकायें प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की

गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.41 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.41 लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	41.87	1	41.87	4.58	<0.05
B विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	12.13	2	6.07	0.66	>0.05
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	125.84	2	62.92	6.89	<0.01
समूहान्र्तगत	5424.33	594	9.13	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	5573.99	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.41 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं (एफ अनुपात 4.58 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। परन्तु विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, व निम्न) भी प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 0. 66 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है)। किन्तु लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न)

का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 6.89 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा अन्तः क्रियात्मक सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (8.05) ''प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं किन्तु लिंग तथा अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं।

भाग—९

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी

महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.42 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.42 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
विद्यालय वातावरण उत्तम	कुल संख्या	47	86	21	154
	मध्यमान	130.42	128.06	116.47	127.20
	प्रामाणिक विचलन	8.15	8.03	10.78	9.50
विद्यालय वातावरण मध्यम	कुल संख्या	58	158	77	293
	मध्यमान	127.74	124.60	123.13	124.84
	प्रामाणिक विचलन	9.35	7.92	5.63	7.84
विद्यालय वातावरण निम्न	कुल संख्या	31	92	30	153
	मध्यमान	125.68	127.56	120.00	125.70
	प्रामाणिक विचलन	8.41	7.59	7.15	8.17
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	128.20	126.30	121.30	125.66
	प्रामाणिक विचलन	8.86	8.00	7.43	8.42

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय के उंत्तम वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) (मध्यमान 127.20) अधिक धनात्मक प्राप्त हुई; जबकि विद्यालय के निम्न वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) (मध्यमान 125.70) कम धनात्मक प्राप्त हुई, किन्तु विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) (मध्यमान 124.84) सर्वाधिक ऋणात्मक प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 128.20) पाई गई; जबकि मध्यम कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 126.30) रखते है, किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 121.30) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के उंत्तम वातावरण के उच्च कार्य सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 130.42) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उत्तम वातावरण के निम्न कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 116.47) प्रदर्शित करते है। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण के उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की सर्वाधिक महत्व प्रदान

करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति (कुलयोग) अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के उद्देश्य से 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है। प्राप्त परिणाम तालिका 4.43 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.43 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	44.41	2	22.20	0.35	>0.05
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	4234.06	2	2117.03	33.87	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	1867.04	4	466.76	7.47	<0.01
समूहान्तर्गत	36936.52	591	62.50	सार्थकता स्तर (2,591) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	
योग	42485.99	599		सार्थकता स्तर (4,591) 0.01 →3.36 0.05 →2.39	

तालिका 4.43 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के

प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नही करता है। (एफ अनुपात 0.35 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)। किन्तु शिक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 33.87 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 7.47 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति (कुलयोग) अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं, परन्तु शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा अन्तः क्रियात्क प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (9.0) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण सार्थक रूप से प्रभावित नहीं

करता है, किन्तु शिक्षकों के कार्य–सन्तोष तथा अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

9.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.44 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.44 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
विद्यालय वातावरण उत्तम	कुल संख्या	47	86	21	154
	मध्यमान	41.85	39.38	38.00	39.92
	प्रामाणिक विचलन	2.30	4.66	2.93	3.89
विद्यालय वातावरण मध्यम	कुल संख्या	58	158	77	293
	मध्यमान	36.96	37.91	39.61	38.13
	प्रामाणिक विचलन	3.29	3.25	3.44	3.44
विद्यालय वातावरण निम्न	कुल संख्या	31	92	30	153
	मध्यमान	33.71	38.58	38.03	37.65
	प्रामाणिक विचलन	4.06	4.20	2.48	4.21
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	38.01	38.38	38.97	38.43
	प्रामाणिक विचलन	4.17	3.85	3.25	3.81

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 39.92) अधिक धनात्मक प्राप्त हुई; जबकि विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 38.13) कम धनात्मक प्राप्त हुई, किन्तु विद्यालय के निम्न वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति

अभिवृत्ति (मध्यमान 37.65) सर्वाधिक ऋणात्मक प्राप्त हुई। इसी प्रकार निम्न कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 38.97) पाई गई। ज़बकि मध्यम कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.38) रखते है, किन्तु इसके विपरीत उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.01) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के उत्तम वातावरण के उच्च कार्य सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 41.85) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उच्च कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 33.71) प्रदर्शित करते है। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण के उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व न्निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के उद्देश्य से 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है। प्राप्त परिणाम तालिका 4.45 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.45 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	492.99	2	246.49	20.11	<0.01
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	102.02	2	51.01	4.16	<0.05
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	922.15	4	230.54	18.80	<0.01
समूहान्र्तगत	7245.13	591	12.26	सार्थकता स्तर (2,591) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	
योग	8681.59	599		सार्थकता स्तर (4,591) 0.01 →3.36 0.05 →2.39	

तालिका 4.45 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है। (एफ अनुपात 20.11 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 4.16 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है)। विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न)

का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 18.80 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (9.01) ''प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। अतः प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के प्रति विद्यालय वातावरण तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

9.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों

तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.46 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.46 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
विद्यालय वातावरण उत्तम	कुल संख्या	47	86	21	154
	मध्यमान	38.10	39.70	33.71	38.40
	प्रामाणिक विचलन	4.76	3.33	6.94	4.82
विद्यालय वातावरण मध्यम	कुल संख्या	58	158	77	293
	मध्यमान	38.98	37.23	35.44	37.11
	प्रामाणिक विचलन	2.92	4.83	3.96	4.44
विद्यालय वातावरण निम्न	कुल संख्या	31	92	30	153
	मध्यमान	39.00	38.90	36.65	38.49
	प्रामाणिक विचलन	4.09	3.14	5.16	3.87
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	38.68	38.32	35.43	37.79
	प्रामाणिक विचलन	3.90	4.19	4.89	4.45

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय के निम्न वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 38.49) अधिक धनात्मक प्राप्त हुई; जबकि विद्यालय के उत्तम वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 38.40) कम धनात्मक प्राप्त हुई, किन्तु विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 37.11) सर्वाधिक ऋणात्मक प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 38.68) पाई गई, जबकि मध्यम कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 38.32) रखते है, किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 35.43) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के उत्तम वातावरण के मध्यम कार्य सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 39.70) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के उत्तम वातावरण के निम्न कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 33.71) प्रदर्शित करते है। स्पष्ट है कि विद्यालय के

उत्तम वातावरण के मध्यम कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–संतोष (उत्तम, मध्यम, निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करन के उद्देश्य से 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है। प्राप्त परिणाम तालिका 4.47 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.47 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश (d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	84.44	2	42.22	2.38	>0.05
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	882.75	2	441.37	24.92	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	343.41	4	85.85	4.85	<0.01
समूहान्तर्गत	10447.87	591	17.71	सार्थकता स्तर (2,591) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	
योग	11866.91	599		सार्थकता स्तर (4,591) 0.01 →3.36 0.05 →2.39	

तालिका 4.47 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। (एफ अनुपात 2.38 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)। किन्तु शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 24.92 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 4.85 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते है; परन्तु शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (9.02) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न)

तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। अतः प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति विद्यालय वातावरण सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता, किन्तु शिंक्षकों के कार्य संतोष तथा अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

9.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.48 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.48 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
विद्यालय वातावरण उत्तम	कुल संख्या	47	86	21	154
	मध्यमान	20.04	19.56	16.47	19.28
	प्रामाणिक विचलन	3.52	2.05	3.38	2.98
विद्यालय वातावरण मध्यम	कुल संख्या	58	158	77	293
	मध्यमान	20.07	18.31	17.57	18.47
	प्रामाणिक विचलन	3.50	3.17	2.24	3.14
विद्यालय वातावरण निम्न	कुल संख्या	31	92	30	153
	मध्यमान	18.45	18.13	15.80	17.74
	प्रामाणिक विचलन	1.36	4.21	2.71	3.65
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	19.69	18.58	16.98	18.49
	प्रामाणिक विचलन	3.20	3.31	2.66	3.28

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 19.28) अधिक धनात्मक प्राप्त हुई; जबकि विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

(मध्यमान 18.47) कम धनात्मक प्राप्त हुई। किन्तु विद्यालय के निम्न वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 17.74) सर्वाधिक ऋणात्मक प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 19.69) पाई गई। जबकि मध्यम कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.58) रखते है, किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्ष के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 16.98) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के मध्यम वातावरण के उच्च कार्य सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 20.07) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के निम्न वातावरण के निम्न कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 15.80) प्रदर्शित करते है। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण के उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

पर शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम, निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है। प्राप्त परिणाम तालिका 4.49 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	128.55	2	64.27	6.66	<0.01
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	481.52	2	240.76	24.94	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	105.12	4	26.28	2.72	<0.05
समूहान्र्तगत	5706.03	591	9.65	सार्थकता स्तर (2,591) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	
योग	6445.96	599		सार्थकता स्तर (4,591) 0.01 →3.36 0.05 →2.39	

तालिका 4.49 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है। (एफ अनुपात 6.66 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)। इसी प्रकार शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 24.94 प्राप्त हुआ,

जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 2.72 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (9.03) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। अतः प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

9.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षको के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत ब्लैक बोर्ड आपरेशन के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन

करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत ब्लैक बोर्ड आपरेशन के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.50 में प्राप्त हुआ

तालिका 4.50 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
विद्यालय वातावरण उत्तम	कुल संख्या	47	86	21	154
	मध्यमान	18.49	18.42	17.33	18.29
	प्रामाणिक विचलन	1.44	2.86	2.35	2.46
विद्यालय वातावरण मध्यम	कुल संख्या	58	158	77	293
	मध्यमान	17.71	18.21	17.14	17.83
	प्रामाणिक विचलन	3.11	2.58	2.63	2.74
विद्यालय वातावरण निम्न	कुल संख्या	31	92	30	153
	मध्यमान	18.71	17.37	16.73	17.51
	प्रामाणिक विचलन	1.27	1.91	1.17	1.78
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	18.21	18.03	17.08	17.87
	प्रामाणिक विचलन	2.31	2.52	2.32	2.46

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 18.29) अधिक धनात्मक प्राप्त हुई, जबकि विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 17.83) कम धनात्मक प्राप्त हुई। किन्तु विद्यालय के निम्न वातावरण से संबधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 17.51) सर्वाधिक ऋणात्मक प्राप्त हुई। इसी प्रकार उच्च कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 18.21) पाई गई, जबकि मध्यम कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 18.03) रखते हैं। किन्तु इसके विपरीत निम्न कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 17.08) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के निम्न वातावरण के उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 18.71) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के निम्न वातावरण के निम्न कार्य–संतोष से संबधित शिक्षक (मध्यमान 16.73) प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के निम्न वातावरण के उच्च कार्य–संतोष

से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.51 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.51 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	15.60	2	7.80	1.34	>0.05
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	89.75	2	44.87	7.69	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	51.71	4	12.93	2.21	>0.05
समूहान्तर्गत	3447.16	591	5.83	सार्थकता स्तर (2,591) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	
योग	3641.86	599		सार्थकता स्तर (4,591) 0.01 →3.36 0.05 →2.39	

तालिका 4.51 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 1.34 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता हैं)। किन्तु शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 7.69 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। परन्तु विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 2.21 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं। परन्तु शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (9.04) ''प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च,

मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति विद्यालय वातावरण तथा अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है, किन्तु शिक्षकों के कार्य–संतोष सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करता है।

9.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षको के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.52 में प्राप्त हुआ

तालिका 4.52 विद्यालय का वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) की प्राथमिक शिक्षा की समस्या के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
विद्यालय वातावरण उत्तम	कुल संख्या	47	86	21	154
	मध्यमान	12.11	13.23	15.24	13.16
	प्रामाणिक विचलन	2.73	2.44	2.36	2.69
विद्यालय वातावरण मध्यम	कुल संख्या	58	158	77	293
	मध्यमान	11.60	12.75	14.33	12.94
	प्रामाणिक विचलन	2.15	2.83	3.10	2.93
विद्यालय वातावरण निम्न	कुल संख्या	31	92	30	153
	मध्यमान	11.52	13.55	12.63	12.96
	प्रामाणिक विचलन	4.84	3.47	1.30	3.58
योग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	11.75	13.09	14.08	13.00
	प्रामाणिक विचलन	3.12	2.94	2.79	3.05

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 13.16) अधिक धनात्मक प्राप्त हुई। जबकि विद्यालय के निम्न वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 12.96) कम धनात्मक

प्राप्त हुई। किन्तु विद्यालय के मध्यम वातावरण से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति (मध्यमान 12.94) सर्वाधिक ऋणात्मक प्राप्त हुई। इसी प्रकार निम्न कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 14.08) पाई गई। जबकि मध्यम कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति कम धनात्मक अभिवृत्ति (मध्यमान 13.09) रखते हैं। किन्तु इसके विपरीत उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक ऋणात्मक (मध्यमान 11.75) रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक धनात्मक विद्यालय के उच्च वातावरण के निम्न कार्य–सन्तोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 15.24) प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत सर्वाधिक ऋणात्मक अभिवृत्ति विद्यालय के निम्न वातावरण के उच्च कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षक (मध्यमान 11.52) प्रदर्शित करते हैं। स्पष्ट है कि विद्यालय के उत्तम वातावरण के निम्न कार्य संतोष से संबंधित शिक्षक प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। जिसके कारण उनकी प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के

उद्देश्य से 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है। प्राप्त परिणाम तालिका 4.53 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.53 शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव 3×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम, निम्न)	54.79	2	27.39	3.20	<0.05
B कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	320.99	2	160.49	18.72	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	119.11	4	29.78	3.47	<0.01
समूहान्तर्गत	5065.54	591	8.57	सार्थकता स्तर (2,591) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	
योग	5573.99	599		सार्थकता स्तर (4,591) 0.01 →3.36 0.05 →2.39	

तालिका 4.53 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात 3.20 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार शिक्षकों के कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं

के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 18.72 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा कार्य—संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से 0.01 पर प्रभावित करता है। (एफ अनुपात का मान 3.47 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति को विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (9.5) ''प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य—संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति विद्यालय वातावरण, शिक्षकों के कार्य—सन्तोष एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों पव 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर शिक्षक दक्षता मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.54 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.54 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) की शिक्षक दक्षता का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		शहरी	ग्रामीण	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	152.76	156.18	154.47
	प्रामाणिक विचलन	19.63	16.13	18.02
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	159.98	148.65	154.32
	प्रामाणिक विचलन	18.95	14.61	17.82
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	156.37	152.42	154.39
	प्रामाणिक विचलन	19.60	15.82	17.90

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक सर्वाधिक (मध्यमान 154.47) दक्षता रखते हैं। किन्तु इसके विपरीत (मध्यमान 154.32) महिला शिक्षिकाओं में शिक्षक दक्षता कम पाई गई। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र से संबंधित शिक्षकों की दक्षता सर्वाधिक धनात्मक (मध्यमान 156.37) पायी गयी किन्तु इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित शिक्षकों की दक्षता कम (मध्यमान 154.42) पायी गई। शहरी क्षेत्र की महिलाओं में सर्वाधिक शिक्षक दक्षता (मध्यमान 159.98) पाई गई जबकि ग्रामीण महिलाओं में सर्वाधिक कम शिक्षक दक्षता पाई गई (मध्यमान 148.65)।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.55 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.55 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर **प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–**

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	3.68	1	3.68	0.01	>0.05
B क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण)	2340.37	1	2340.37	7.68	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	8162.28	1	8162.28	26.80	<0.01
समूहान्तर्गत	181523.04	596	304.80	सार्थकता स्तर 0.01 →6.70 0.05 →3.86	
योग	192029.38	599			

तालिका (4.55) का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से शिक्षक दक्षता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात का मान 0.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नहीं करता है)। किन्तु क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) शिक्षक दक्षता को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। एफ अनुपात 7.68 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है)। इसीप्रकार लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव शिक्षक दक्षता के प्रति सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता

है (एफ अनुपात 26.80 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षक दक्षता को क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (10) ''शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि शिक्षक दक्षता को क्षेत्र एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

भाग—११

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य—संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्‌देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर शिक्षक दक्षता मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.56 मे प्राप्त हुआ।

तालिका 4.56 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) की शिक्षक दक्षता का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		कार्य–सन्तोष			योग
		उच्च	मध्यम	निम्न	
पुरूष	कुल संख्या	74	174	52	300
	मध्यमान	155.07	154.18	154.60	154.47
	प्रामाणिक विचलन	20.65	16.12	20.25	18.02
महिला	कुल संख्या	62	162	76	300
	मध्यमान	149.23	157.94	150.74	154.32
	प्रामाणिक विचलन	13.14	17.12	20.82	17.82
यॆाग	कुल संख्या	136	336	128	600
	मध्यमान	152.40	155.99	152.30	154.39
	प्रामाणिक विचलन	17.81	16.69	20.59	17.90

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक सर्वाधिक (मध्यमान 154.47) दक्षता को प्रदर्शित करते हैं। किन्तु इसके विपरीत कम दक्षता (मध्यमान 154.32) महिला शिक्षिकायें प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार (मध्यमान 155.99) मध्यम कार्य–सन्तोष वाले शिक्षकों में अधिक शिक्षक दक्षता पाई गई। जबकि उच्च कार्य–सन्तोष से सबंधित शिक्षकों में शिक्षका दक्षता कम (मध्यमान 152.40) पाई गई। किन्तु निम्न कार्य–संतोष से संबंधित शिक्षकों में शिक्षक दक्षता सर्वाधिक कम (मध्यमान 152.30) पाई गई। उच्च कार्य

सन्तोष से सम्बन्धित पुरूष शिक्षकों में सर्वाधिक शिक्षक दक्षता (मध्यमान 155.07) पाई गई जबकि महिलाओं मे कम पाई गई (मध्यमान 149.23)।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य—संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से, 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.57 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.57 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य—संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) **का सार्थक प्रभाव 2×3 कारकीय अभिकल्प** के आधार पर प्रसरण **विश्लेषण परिणाम सारांश—**

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	477.21	1	477.21	1.51	>0.05
B कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न)	1982.90	2	991.45	3.14	<0.05
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	2797.49	2	1398.75	4.44	<0.05
समूहान्तर्गत	187271.37	594	315.27	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →4.70 0.05 →3.86	
योग	192029.38	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका (4.57) का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग

(पुरूष व महिला) सार्थक रूप से शिक्षक दक्षता का 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात का मान 1.51 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित नही करता है)। किन्तु शिक्षक कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) शिक्षक दक्षता को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात 3.14 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है)। इसी प्रकार लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव शिक्षक दक्षता के प्रति सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 4.44 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभााव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षक दक्षता के प्रति लिंग (पुरूष व महिला) को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। तथा शिक्षक–कार्य संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शूंन्य उपकल्पना (11) 'शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है किन्तु शिक्षक कार्य–संतोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूषा व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 150 शहरी पुरूष शिक्षकों व 150 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों तथा 150 शहरी महिला शिक्षिकाओं व 150 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं पर शिक्षक दक्षता मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन इस प्रकार तालिका 4.58 में प्राप्त हुआ।

तालिका 4.58 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) की शिक्षक दक्षता का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन–

उपसमूह		विद्यालय वातावरण			योग
		उत्तम	मध्यम	निम्न	
पुरूष	कुल संख्या	80	159	61	300
	मध्यमान	158.20	156.53	144.21	154.47
	प्रामाणिक विचलन	15.87	18.23	16.55	18.01
महिला	कुल संख्या	74	134	92	300
	मध्यमान	169.33	147.69	151.89	154.32
	प्रामाणिक विचलन	14.45	16.83	14.41	17.82
योग	कुल संख्या	154	293	153	600
	मध्यमान	163.55	152.49	148.83	154.39
	प्रामाणिक विचलन	16.15	18.12	15.71	17.90

तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षक सर्वाधिक (मध्यमान 154.47) शिक्षक दक्षता को प्रदर्शित करते हैं। किन्तु इसके विपरीत कम शिक्षक दक्षता (मध्यमान 154.32) महिला शिक्षिकायें प्रदर्शित करती हैं। उत्तम विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों में सर्वाधिक शिक्षण दक्षता (मध्यमान 163.55) प्राप्त हुआ। जबकि मध्यम विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों में कम शिक्षण दक्षता पाई गई (मध्यमान 152.49)। उत्तम विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित महिला शिक्षिकाओं में सर्वाधिक शिक्षण दक्षता (मध्यमान 169.33) प्राप्त हुई। निम्न विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित शिक्षकों में सर्वाधिक कम शिक्षण दक्षता (मध्यमान 148.83) पाई गई।

शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्छेश्य से 23 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.59 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.59 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का सार्थक प्रभाव 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम सारांश–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश(d.f.)	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (पुरूष व महिला)	1482.37	1	1482.37	5.48	<0.05
B	20892.11	2	10446.06	38.61	<0.01
A×B अन्तःक्रियात्मक प्रभाव	12594.17	2	6297.08	23.28	<0.01
समूहान्तर्गत	160688.89	594	270.52	सार्थकता स्तर (1,594) 0.01 →4.70 0.05 →3.86	
योग	192029.38	599		सार्थकता स्तर (2,594) 0.01 →4.66 0.05 →3.02	

तालिका 4.59 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरूष व महिला) सार्थक रूप से शिक्षक दक्षता को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 5.48 प्राप्त हुंआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता हैं)। इसी प्रकार विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) शिक्षक दक्षता को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। (एफ अनुपात 38.61 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है) इसी प्रकार लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम,

मध्यम व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव भी शिक्षक दक्षता को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 23.28 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव को प्रदर्शित करता है)।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षक दक्षता के प्रति लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (12) ''शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों के विवेचन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।
2. शहरी शिक्षकों की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।
3. ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में शहरी शिक्षक कार्य–दक्षाता

सार्थक रूप से अधिक रखते हैं।

4. महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक विद्यालय वातावरण को सार्थक रूप से अधिक उत्तम मानते हैं।

5. महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक तथा शहरी शिक्षकों की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षक सार्थक रूप से अधिक कार्य–सन्तोष रखते हैं।

6: प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

7. शिक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

8. शिक्षकों का विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

9. शिक्षकों का क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) सार्थक रूप से कार्य–दक्षता को प्रभावित करता हैं।

10. शिक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) भी कार्य–दक्षता को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

11. शिक्षक कार्य–दक्षता को लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग

प्राथमिक स्तर के शिक्षक अपने ज्ञान को अनुभवों से जोड़कर छात्रों के जीवन में निरंतरता एवं पूर्ण दक्षता का दर्शन कराने में दक्ष होते हैं ताकि छात्रों का ज्ञान परिपक्व हो सके। शिक्षक छात्रों में सामूहिक विकास अन्तःक्रिया विश्लेषण योग्यता, अनुशासन एवं स्वावलम्बन का गुण भी भर देते हैं। बालक से लेकर वयस्क तक बनने तथा सृजन करने का श्रेय इन्हीं प्राथमिक शिक्षकों को जाता है। बालक भविष्य में समाज का उत्तरदायी नागरिक बनकर देश के उत्थान में अपना योगदान प्रदान करता है। शिक्षक एक ऐसा यंत्र है जो संस्कृति व नागरिकता की मशाल को हमेशा प्रज्ज्वलित रखता है। निश्चित रूप से ऐसे गुरूत्तर दायित्व को वहन करने वाले शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक दक्षताओं से पूर्ण होने चाहिये। दक्ष शिक्षकों का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जो प्रधानाध्यापक, साथी; शिक्षक, छात्र, अभिभावक एवं समुदाय के साथ सामंजस्य उत्पन्न कर सके। उन सभी को अपने व्यक्तित्व के द्वारा आकर्षित कर सके।

विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार कुशलता, आत्म–संयम, आत्म–सन्तुष्टि एवं आत्म–विश्वास से जन्म लेती है जिसमें असन्तुष्टियों का ह्रास रहता है जिसे एक सूत्र के द्वारा जाना जा सकता है।

कुशलता = आत्म–संयम+आत्म–संतुष्टि+आत्म विश्वास – असन्तुष्टि

स्वयं शिक्षकों को शिक्षण दक्षताओं पर सर्वाधिक महत्व देना चाहिए जिससे उनका शिक्षण प्रभावशाली बन सके। जिसके लिये विद्यालय भवन, पुस्तकालय, शिक्षण सहायक सामग्री, विभिन्न उपकरण व अन्य व्यवस्थायें होती हैं जिनका उचित रूप से प्रयोग करके शिक्षक अपना शिक्षण प्रभावी बनाते हैं व उनकी सहायता से नई तकनीक द्वारा शिक्षण करने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत अनुसन्धान के प्राप्त परिणामो के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षकों की कार्य–दक्षता का पर्याप्त महत्व मिलना आवश्यक है तब ही प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि भी एक आवश्यक कारक है। कार्य सन्तुष्टि शिक्षक के कार्य के समान पहलुओं जैसे वेतन, पदोन्नति के अक्सर, अधिकारियों से सम्बन्धित निरीक्षकों एवं सहयोगियों के प्रति दृष्टिकोण आदि के कारण उत्पन्न मानसिक संवेगात्मक स्थिति है। शिक्षण में सन्तुष्टि एक अति आवश्यक तत्व है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से जितना अधिक सन्तुष्ट होगा उतने ही प्रभावशाली विधि से वह कार्य करेगा।

शिक्षक को विद्यालय का वातावरण भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। विद्यालय के सुन्दर भवन, कक्ष, साज–सज्जा व विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों के अतिरिक्त प्रधानाध्यापक, शिक्षक, छात्र व उपलब्ध परिस्थितियाँ भी पूर्ण सहयोगात्मक होनी आवश्यक

हैं। यदि शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्धा, सहयोग, मित्रता व सहृदयता को भावना होती है तब विद्यार्थियों पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जब विद्यालय का वातावरण सुखद होगा तो वहां के शिक्षक मन लगाकर छात्रों को पढायेंगे। छात्र भी मन लगाकर पढ़ते हैं जिससे छात्रों में शिक्षा व शिक्षकों के प्रति विश्वास जाग्रत होता है और वे अपने शिक्षकों से अत्यधिक ज्ञान पाने के लिये अत्यधिक इच्छुक रहते हैं। अतः छात्रों में शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने हेतु दक्ष शिक्षकों का होना अनिवार्य है।

शिक्षक स्वयं प्राथमिक शिक्षा के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं यह तथ्य भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। प्राथमिक शिक्षा शिक्षा व्यवस्था का प्रथम सोपान है। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिये चलाये जा रहे विभिन्न प्रयासों तथा योजनाओं की सफलता इस बात पर निर्भर है कि शिक्षक की अभिवृत्ति किस प्रकार की है।

इस प्रकार अनुसन्धान के प्राप्त परिणामों का अनुप्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रत्येक प्राथमिक शिक्षक की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक होनी आवश्यक है। शिक्षक दक्षता भी प्राथमिक शिक्षा के लिये परमावश्यक है। इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण उत्तम हो एवं शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हो इस प्रकार के प्रयास प्राथमिक शिक्षा की सफलता के लिये आवश्यक हैं।

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्य–दक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के सन्दर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य–सन्तोष का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या के अतिरिक्त अन्य निम्नलिखित प्रकार के आगामी महत्वपूर्ण अनुसन्धान किये जा सकते हैं–

1. सर्वप्रथम जनपद जालौन के अतिरिक्त अन्य जनपदों के प्राथमिक शिक्षकों पर अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राथमिक शिक्षकों के अतिरिक्त माध्यमिक शिक्षकों पर भी प्रस्तुत अनुसन्धान के समान अनुसन्धान किया जा सकता हैं
3. प्राथमिक शिक्षकों तथा माध्यमिक शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि, कार्य दक्षता व विद्यालय वातावरण के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षकों के गृह वातावरण एवं कार्य–सन्तुष्टि का भी सहसम्बन्धात्मक अध्ययन किया जाना उपयुक्त होगा।
5. शिक्षकों की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि एवं कार्य निष्पादन योग्यता का अध्ययन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।
6. प्राथमिक शिक्षकों के मूल्यों एवं प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन भी सम्भव है।
7. प्राथमिक शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य व व्यक्तित्व का अध्ययन भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

अध्याय–पंचम

संक्षिप्तीकरण

प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन

मानव के द्वारा सभ्यता के विकास की प्रक्रिया पर विचार करने से सामाजिक परिवर्तन करने में शिक्षा सशक्त व महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का मानसिक विकास होता है तथा वह अपने सम्बन्ध ा में, अपने समाज के सम्बन्ध में, अपने राष्ट्र के सम्बन्ध में और सम्पूर्ण विश्व के सम्बन्ध में चिन्तन करने योग्य बनता है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति समाज की आवश्यकताओं, परिस्थितियों तथा समस्याओं को उचित प्रकार से समझने में असफल रहता है। भारत सरकार द्वारा 1985 में जारी 'शिक्षा की चुनौती: नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य' में कहा गया है कि ''मानव के इतिहास में शिक्षा मानव समाज के विकास के लिये एक सतत् क्रिया और आधार रही है। मनोवृत्तियों, मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनों को ही क्षमताओं के विकास के माध्यम से शिक्षा लोगों की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिये उन्हें शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है, सामाजिक विकास के लिये प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।''

वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्या शैक्षिक मानकों में आ रही गिरावट है। शिक्षा शास्त्री तथा बुद्धिजीवी वर्ग तथा आम नागरिक शिक्षा के मानकों में आ रही गिरावट के प्रति चिन्तित है। शिक्षा के मानकों से तात्पर्य शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के ज्ञान, अभिव्यक्ति तथा सामाजिक वातावरण उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। विद्यालय के भवन, कक्षों, साज–सज्जा व विद्यालय में उपलब्ध उपकरण ही के द्वारा विद्यालय का वातावरण निर्धारित नहीं होता है, वरन् प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा छात्रों के

उचित व अपेक्षित व्यवहार से विद्यालय का वातावरण प्रभावित होता है। यदि शिंक्षकों व प्रधानाध्यापक के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग, मित्रता व सहृदयता की भावना होगी तब छात्रों पर भी इसका अनुकूलन प्रभाव पड़ेगा तथा उन छात्रों का व्यवहार भी उसी प्रकार का होगा।

शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि (Job-Satisfaction) विद्यालय व शिक्षा के विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। कार्य–सन्तुष्टि वह स्थिति है जो कि शिक्षक को अपने कार्य के सन्दर्भ में प्राप्त होने वाले आनन्द के मूल्यों का अनुमान देती है। कार्य–सन्तुष्टि व्यक्ति के कार्य के समान विभिन्न पहलुओं जैसे– वेतन, पदोन्नति के अवसर, अधिकारियों एवं सहयोगियों के प्रति दृष्टिकोण आदि के कारण उत्पन्न मानसिक संवेगात्मक स्थिति है। किसी व्यवसाय में सन्तुष्टि एक अति आवश्यक तत्व है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से जितना अधिक सन्तुष्ट होगा उतने ही प्रभावशाली रूप से अपने कार्य को पूरा करेगा। यही बात शिक्षक के व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सत्य है कि यदि एक शिक्षक का अपने शिक्षण व्यवसाय में सन्तुष्टि की भावना दृष्टिगत होगी तब वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह सही प्रकार से कर पायेगा।

इसके साथ ही शिक्षक का स्वयं प्राथमिक शिक्षा के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति है यह तथ्य भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। प्राथमिक–शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था का प्रथम सोपान है। प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना

तैयार की गई है। संविधान में 14 वर्ष तक की आयु के सभी बालकों के लिये निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई। सन् 1990 में सबके लिये शिक्षा विषय पर हुई विश्व सम्मेलन में सभी व्यक्तियों की मूलभूत अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करने पर विशेष ध्यान दिया गया। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिये चलाये जा रहे इन प्रयासों तथा योजनाओं के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति किस प्रकार की है, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकार शिक्षक दक्षता की प्राथमिक स्तर पर विशेष आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षक अपने ज्ञान को अनुभवों से जोड़कर छात्रों के जीवन में निरन्तरता व पूर्णता के दर्शन करने में दक्ष होते हैं, ताकि छात्रों का ज्ञान परिपक्व हो सके। साथ में इन शिक्षकों में अपने छात्रों के प्रति कोमल हृदय, दया का भाव व संवेदनशीलता भरी होनी चाहिये ताकि वे विद्यालय के छात्रों से अपने बच्चों जैसा व्यवहार करें। विद्यालय को प्रगति हेतु शिक्षकों में दक्षता का होना परमावश्यक है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अनुसन्धानकर्ता द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण अनुसन्धान समस्या का चयन किया गया–

"जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्य दक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के सन्दर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य–सन्तोष का अध्ययन।"

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं–

1. पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

2. शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

5. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

6. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल प्राप्तांको) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

   6.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

   6.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

   6.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.05 प्राथमिक शिक्षा को समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के

प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का

अध्ययन करना।

8.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

8.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व

निम्न) तथा विद्यालय के वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

9.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

10. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

11. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

12. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित उपकल्पनायें निर्मित की गई—

1. पुरूष व महिला शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

5. पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

6. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल प्राप्तांको) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

   6.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

   6.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

   6.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.05 प्राथमिक शिक्षा को समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के

प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य—सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुलयोग) पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

8.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति (कुल योग) पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.01 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.02 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.03 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय के वातावरण (उत्तम, मध्यम व

निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.04 प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आपरेशन ब्लैक बोर्ड के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

9.05 प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

10. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

11. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

12. शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व :

प्राथमिक शिक्षा के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति किस प्रकार की है यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार एक दक्ष शिंक्षक की विशेषता उसका अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहना है, क्योंकि शिक्षक अपने सभी कार्यों को सफलता पूर्वक तभी कर सकता

है जब वह अपने कार्य से सन्तुष्ट हो। कार्य सन्तुष्टि तथा विद्यालय का वातावरण शिक्षक की मानसिकता को प्रभावित करते हैं, फलतः उसका शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। शिक्षण एक ऐसी कला है, जिसमें शिक्षक की भावनायें, संवेग तथा मानसिकता छात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। अतः यदि शिक्षक अपने कार्य संतुष्ट नहीं है तो वह अपने शिक्षण कार्य के साथ पूरा न्याय नहीं कर पायेगा जो उसके द्वारा शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों के व्यक्तित्व को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा। शिक्षकों की सन्तुष्टि का विस्तार उनके कार्य, उनकी व्यक्तिगत विशेषता और सामाजिक वातावरण जिसमें वह रहता है व कार्य करता है सभी पर आधारित है। अतः प्रस्तुत अनुसन्धान अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

१.जनसंख्या

प्रस्तुत अनुसन्धान जालौन जनपद के 30–40 आयु वर्ग के प्राथमिक शिक्षकों पर किया गया।

२. प्रतिदर्श :

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत 600 प्राथमिक शिक्षकों पर अध्ययन किया गया। जालौन जनपद के इन शिक्षकों का चयन वर्गबद्ध अनियत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। प्रतिदर्श के रूप में (300 पुरूष तथा 300 महिला) 30–40 आयु वर्ग के शिक्षकों का चयन किया गया। 300 शहरी तथा 300 ग्रामीण शिक्षकों का चयन प्रतिदर्श के रूप में इस प्रकार किया गया–

३ अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अनुसन्धान घटनोत्तर अनुसन्धान प्रकार का है। प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित परिवर्ती हैं–

स्वतन्त्र परिवर्ती – लिंग

कार्य–सन्तोष

विद्यालय वातावरण

आश्रित अथवा परतन्त्र परिवर्ती–

प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

शिक्षक दक्षता

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य स्वतन्त्र परिवर्ती के रूप में लिंग (पुरूष व महिला), कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) एवं विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) का प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षक दक्षता पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन कंरना है।

प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षणों का विवरण

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया–

क) प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

ख) विद्यालय संगठनात्मक वातावरण सूचक प्रश्नावली

द्वारा डॉ0 मोतीलाल शर्मा

ग) शिक्षक दक्षता मापनी

घ) अध्यापक कृत्य—सन्तोष मापनी

द्वारा डॉ0 एस.पी. गुप्ता एवं डॉ0 जे.पी. श्रीवास्तव

प्रशासन प्रक्रिया

प्रस्तुत अनुसन्धान के प्रतिदर्श के अनुरूप चयनित शिक्षकों को अनुसन्धान का उद्देश्य समझाया गया। इससे पूर्व सम्बन्धित प्रधानाध्यापकों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर शोध सम्बन्धी कार्य की स्वीकृति प्राप्त की गई। चयनित शिक्षकों को मानकीकृत परीक्षण सम्बन्धी निर्देश भली—भांति समझा दिये गये। सभी मानकीकृत परीक्षणों को ध्यानपूर्वक भरवाया गया तथा अन्त में शिक्षकों को अनुसन्धान कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिये धन्यवाद भी ज्ञापित किया गया। इस प्रकार 300 ग्रामीण व 300 शहरी पुरूष व महिला प्राथमिक शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं को प्राप्त किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अनुसधांन के उद्देष्यों के अनुरुप प्रदत्त सकंलन के पष्चात निम्नलिखित सांख्यकीय पद्धतियों को प्रयुक्त किया गया—

अ मध्यमान

ब प्रामाणिक विचलन

स क्रान्तिक अनुपात

द प्रसरण विष्लेषण

प्रदत्त–विश्लेषण तथा विवेचन

भाग–1 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का पुरूष व महिला शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–2 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–3 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–4 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के विद्यालय वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–5 पुरूष व महिला तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के कार्य–सन्तोष के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाग–6 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–7 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षकों के कार्य सन्तोष (उच्च, मध्यम, निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–8 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला)

तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–9 प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शिक्षकों के कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–10 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामींण) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–11 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा शिक्षक कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

भाग–12 शिक्षक दक्षता पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों के विवेचन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

2. शहरी शिक्षकों की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षक प्राथमिक शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

3. ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में शहरी शिक्षक कार्य–दक्षता

सार्थक रूप से अधिक रखते हैं।

4. महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक विद्यालय वातावरण को सार्थक रूप से अधिक उत्तम मानते हैं।

5. महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक तथा शहरी शिक्षकों की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षक सार्थक रूप से अधिक कार्य–सन्तोष रखते हैं।

6. प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को लिंग (पुरूष व महिला) तथा क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

7. शिक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

8. शिक्षकों का विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) एवं इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

9. शिक्षकों का क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) सार्थक रूप से कार्य–दक्षता को प्रभावित करता हैं।

10. शिक्षकों का कार्य–सन्तोष (उच्च, मध्यम व निम्न) भी कार्य–दक्षता को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

11. शिक्षक कार्य–दक्षता को लिंग (पुरूष व महिला) तथा विद्यालय वातावरण (उत्तम, मध्यम व निम्न) तथा इनका अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग

प्राथमिक स्तर के शिक्षक अपने ज्ञान को अनुभवों से जोड़कर छात्रों के जीवन में निरंतरता एवं पूर्ण दक्षता का दर्शन कराने में दक्ष होते हैं ताकि छात्रों का ज्ञान परिपक्व हो सके। शिक्षक छात्रों में सामूहिक विकास अन्तःक्रिया विश्लेषण योग्यता, अनुशासन एवं स्वावलम्बन का गुण भी भर देते हैं। बालक से लेकर वयस्क तक बनने तथा सृजन करने का श्रेय इन्हीं प्राथमिक शिक्षकों को जाता है। बालक भविष्य में समाज का उत्तरदायी नागरिक बनकर देश के उत्थान में अपना योगदान प्रदान करता है। शिक्षक एक ऐसा यंत्र है जो संस्कृति व नागरिकता की मशाल को हमेशा प्रज्ज्वलित रखता है। निश्चित रूप से ऐसे गुरूत्तर दायित्व को वहन करने वाले शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक दक्षताओं से पूर्ण होने चाहिये। दक्ष शिक्षकों का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जो प्रधानाध्यापक, साथी; शिक्षक, छात्र, अभिभावक एवं समुदाय के साथ सामंजस्य उत्पन्न कर सके। उन सभी को अपने व्यक्तित्व के द्वारा आकर्षित कर सके।

विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार कुशलता, आत्म–संयम, आत्म–सन्तुष्टि एवं आत्म–विश्वास से जन्म लेती है जिसमें असन्तुष्टियों का ह्रास रहता है जिसे एक सूत्र के द्वारा जाना जा सकता है।

कुशलता = आत्म–संयम+आत्म–संतुष्टि+आत्म विश्वास – असन्तुष्टि

स्वयं शिक्षकों को शिक्षण दक्षताओं पर सर्वाधिक महत्व देना चाहिए जिससे उनका शिक्षण प्रभावशाली बन सके। जिसके लिये विद्यालय भवन, पुस्तकालय, शिक्षण सहायक सामग्री, विभिन्न उपकरण व अन्य व्यवस्थायें होती हैं जिनका उचित रूप से प्रयोग करके शिक्षक अपना शिक्षण प्रभावी बनाते हैं व उनकी सहायता से नई तकनीक द्वारा शिक्षण करने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत अनुसन्धान के प्राप्त परिणामो के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षकों की कार्य–दक्षता का पर्याप्त महत्व मिलना आवश्यक है तब ही प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि भी एक आवश्यक कारक है। कार्य सन्तुष्टि शिक्षक के कार्य के समान पहलुओं जैसे वेतन, पदोन्नति के अक्सर, अधिकारियों से सम्बन्धित निरीक्षकों एवं सहयोगियों के प्रति दृष्टिकोण आदि के कारण उत्पन्न मानसिक संवेगात्मक स्थिति है। शिक्षण में सन्तुष्टि एक अति आवश्यक तत्व है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से जितना अधिक सन्तुष्ट होगा उतने ही प्रभावशाली विधि से वह कार्य करेगा।

शिक्षक को विद्यालय का वातावरण भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। विद्यालय के सुन्दर भवन, कक्ष, साज–सज्जा व विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों के अतिरिक्त प्रधानाध्यापक, शिक्षक, छात्र व उपलब्ध परिस्थितियाँ भी पूर्ण सहयोगात्मक होनी आवश्यक

हैं। यदि शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्धा, सहयोग, मित्रता व सहृदयता को भावना होती है तब विद्यार्थियों पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जब विद्यालय का वातावरण सुखद होगा तो वहां के शिक्षक मन लगाकर छात्रों को पढायेंगे। छात्र भी मन लगाकर पढ़ते हैं जिससे छात्रों में शिक्षा व शिक्षकों के प्रति विश्वास जाग्रत होता है और वे अपने शिक्षकों से अत्यधिक ज्ञान पाने के लिये अत्यधिक इच्छुक रहते हैं। अतः छात्रों में शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने हेतु दक्ष शिक्षकों का होना अनिवार्य है।

शिक्षक स्वयं प्राथमिक शिक्षा के प्रति किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं यह तथ्य भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। प्राथमिक शिक्षा शिक्षा व्यवस्था का प्रथम सोपान है। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिये चलाये जा रहे विभिन्न प्रयासों तथा योजनाओं की सफलता इस बात पर निर्भर है कि शिक्षक की अभिवृत्ति किस प्रकार की है।

इस प्रकार अनुसन्धान के प्राप्त परिणामों का अनुप्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रत्येक प्राथमिक शिक्षक की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक होनी आवश्यक है। शिक्षक दक्षता भी प्राथमिक शिक्षा के लिये परमावश्यक है। इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण उत्तम हो एवं शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हो इस प्रकार के प्रयास प्राथमिक शिक्षा की सफलता के लिये आवश्यक हैं।

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत जनपद जालौन के प्राथमिक शिक्षकों की कार्य–दक्षता व प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के सन्दर्भ में विद्यालय वातावरण तथा उनके कार्य–सन्तोष का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या के अतिरिक्त अन्य निम्नलिखित प्रकार के आगामी महत्वपूर्ण अनुसन्धान किये जा सकते हैं–

1. सर्वप्रथम जनपद जालौन के अतिरिक्त अन्य जनपदों के प्राथमिक शिक्षकों पर अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राथमिक शिक्षकों के अतिरिक्त माध्यमिक शिक्षकों पर भी प्रस्तुत अनुसन्धान के समान अनुसन्धान किया जा सकता हैं
3. प्राथमिक शिक्षकों तथा माध्यमिक शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि, कार्य दक्षता व विद्यालय वातावरण के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षकों के गृह वातावरण एवं कार्य–सन्तुष्टि का भी सहसम्बन्धात्मक अध्ययन किया जाना उपयुक्त होगा।
5. शिक्षकों की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि एवं कार्य निष्पादन योग्यता का अध्ययन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।
6. प्राथमिक शिक्षकों के मूल्यों एवं प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन भी सम्भव है।
7. प्राथमिक शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य व व्यक्तित्व का अध्ययन भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

अग्रवाल; ज.कि., नई शिक्षा नीति (1986), नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 1989

अभिनव, नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी., 1994

अहलूवालिया कि; राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियां: मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया, नई दिल्ली।

उद्भवः आगरा; हरि ओम प्रकाशन, 1981

एक बेहतर स्कूल की ओर; पुणेः सेन्टर फार लर्निंग रिसोर्सेज, 1997

जैन, कि.च.; विद्यालयों का वातावरण एवं शैक्षिक प्रबंधन, राजस्थान : जयकिशन प्रकाशन, 1994

न्यूतनम अधिगम प्रशिक्षण मंजूषा; एन.सी.ई.आर.टी., 1998

न्यूनतम अधिगम स्तर शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम, एन.सी.ई.आर.टी, 1992

नवीन शिक्षानीति (1990); मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली।

बघेला, हे0सि0; पाठशाला प्रबन्ध एवं स्वास्थ्य शिक्षा, जयपुरः राजस्थान प्रकाशन, 1998

भटनागर, सु0 कोठारी कमीशन (64–66) : एक विवेचनात्मक अध्ययनः मेरठ पब्लिशिंग हाउस, 1992

माध्यमिक शिक्षा आयोग, (1952–53); मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत

सरकार, नई दिल्ली, शिक्षा विभाग।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986); मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग) नई दिल्ली।

लाल, दे0सी0; पंचवर्षीय योजनायें एवं उनका क्रियान्वित हरधौरपुर, गोविन्द प्रकाशन,

सुखिया, एस0पी0; विद्यालय प्रशासन एवं संगठन, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, 1992ण

सबके लिए शिक्षा, ग्राम शिक्षा समिति प्रशिक्षण मंजूषा; प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद, इन.सी.ई.आर.टी., 1999

सेवा पूर्वागम मंजूषा, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., 1993

शर्मा आर, शिक्षादर्शन, जयपुरः साहित्य सागर, 1999

शिक्षा प्रशिक्षण मंजूषा; नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. 1992

शिक्षा प्रशिक्षण मंजूषा, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., 1997

शिक्षा दिग्दर्शिका ; इलाहाबाद; एन.सी.ई.आर.टी., 1993

शैक्षिक मासिक सत्र; नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी, 1996

शिक्षक संदर्शिका आपरेशन ब्लैक बोर्ड; नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. 1993–94

शिक्षण की कला ; सिद्धार्थनगर; लक्ष्मी प्रकाशन, 1952

Alice, S.M.; When school goes home and families come to school, parent teacher interaction, Doctoral dissertation. California

Universityi. In Dessertation Abstracts International, 43 (7), 1123-A, 1991.

Alon. K.; Teacher's perception of their working environment in departmental and intedisciplinary teaming organization in middle level Schools. Doctoral dissertation Arizona University. In Dissertation Abastract International. 47 (5), 713-A, 1989.

Ann. W.P. : Collborative work cultures and teachers efficancy in selected Minnesotta secondary school. Doctoral Dissertation. Minnesota University in Dissertation Abstracts Internarional, 52(2), 389-A, 1990.

Anthoy. I.L. Teacher loyality to the principal in selected catholic elementry schools, Ed. dissertation, Nebraska Lincon University. In Dissertation Ab stracts International, 48(9), 2118-A, 1987.

Ariene H. : Effect of organizational structure and leadership skills on the success of schools. Ed. disseration, Fairleigh Dickinson University in Disseration Abstracts International, 50(3), 317-A, 1987.

Arther, J: Perecption of Principals and teachers in selected AAA elementary schools n the state of missouri regarding factors of school climate. Doctoral dissartation, Sant Louis University. In Disertation Abstracts International 53(i). 65-A. 1991.

Bakhs. R.R.; A study of relationship of organizational climate and teacher's and school's selected demographic characteristic to teacher job-satisfaction as perceived by the teachers in selected Michigan public secondary schools. Ed. dissertation, Michigan University. In Dissertation Abstracts International. 49 (9), 2483-A, 1993.

Barraiyah, V.; Factors effective the school climate. Doctoral dissertaiton Calcutta University. In M.B. Buch (Ed). Fourth survey of research in education. New Delhi: N.C.E.R.T., 1983-88.

Boon, B.; The relationship between teacher's perception of principal's actual supervisory behaviour and teacher's preferred supervisory behaviour in selected southern public junior high school. Ed. dissertation Mississippi University. In Disertation Abstracts International. 52(2). 327-A. 1995.

Brown, J.M.E.; A stategic planning approach to improve school climate; A case study of school restructuring. Doctoral dissertation, Georgia University. In Disseration Abstracts International, 50(4), 2004-A. 19979.

Brown, K.J.; Students perception of school climate and in school suspension as a dicipline technique in junior high school. Doctoral dissertation. Northern Arizona Universityi. In Dissertation Abstracts International. 45(5). 1255-A. 1984.

Bruster, M.C.; Elementary School Principal competencies and school

effectiveness, Instructional staff pereception. Doctoral dissertation, San Francisco University. In Dissertation Abstracts International, 47(4), 712-A. 1988.

Chyung, E.; An empirical study of the relationship between teacher's sense of alienation and their attitudes toward work. Doctoral disseration. In Dissertation Abstracts International. 49(6), 1343-A, 1988.

Cynthia, C; The moderating effect of organizational climate on leader behaviour and subordinate satisfaction. Doctoral disseration, Denvar Universityi. In Dissertation Abstracts.International, 48(10) 2987-A, 1988.

Damas, A.W.; Educator's job-satisfaction and attitudes towards School reform analyzed by position level. Ed. Dissertation, Iklahoma University. In Dissertation Abstracts International, 50(i) 30-A, 1988.

David, J.; Teacher's conflict and school climate. Ed. dissertation, Rochester University. In Dissertation Abstracts International. 24 (6). 2884-A, 1990.

Diane, R.; Organizational characteristics, principals leadership behavior and teacher job-satisfaction: An investigation of the effect on student achievement. Ed. dissertation. In Dissertation Abstracts International. 48(5) 1388-A 1990.

Earlene, J.P.; Conflict in School organizational and its relationship to school climate. Doctoral dissertation. Augburn University.

In Dissertation Abstracts International, 5(2), 366-A. 1989.

Elizabeth, H.; A study of the perceived relationships between communication styles of elemantry school principals and elementary school climate. Doctoral disseration, Okio State University. In Dissertation Abstracts International, 49(4), 217-A, 1987.

Eugene, C.; Principal feedback effectiveness and teacher feed back process satisfaction regarding school organizational climate. Doctoral dissertation. Indiana University. In Dissertation Abstracts International. 45 (10), 3038-A, 1984.

Eugene, A; Organizational climate, student alienatian and discipline problems. Ed. dissertation. Southern California University. In Dissertation Abstracts International. 45(3). 704-A. 1994.

Geraldine, N.; An investigation of the relation in teaching and job-satisfaction of recognized high quality teachers. Ed. dissertation, North Carolina University. In Dissertation Abstracts International, 49(9), 2471-A. 1994.

Gertude, B.; Clinical supervision practices and leadership behaviour of elemantary principals as reported by the principals, their superintendents and teachers. Ed. dissertàion, Temple Universitiy. In Disseratation Abstracts International, 50(2), 327-A, 1990.

Gloria, W.; A descriptive study of relationships between teacher work values and teacher effectiveness. Doctoral dissertation, New

York University. In Dissertation Abstracts International. 50(2), 327-A, 1995.

Herman, A.V.; The effects of perceived participation in the dicision making process on faculty job-satisfaction in a teaching environment in Purerto Rico. Doctoral dissertation. Nova South Easten University. In Disseration Abstracts International, 48(6), 2215-A. 1994.

James, W.; Principal succession in elementary climate. Doctoral dissertation, Oregon University. In Dissertation Abstracts International. 42(2). 1036-A. 1996.

John, F.; A study of the changes in perception of organizational climate by secondry teachers and principals during one academic year in established secondary schools. Ed. dissertation, North Texas Universitiy. In Dissertation Abstracts International, 43(3), 704-A, 1988.

Joyce, U.J.; Perception of secondary school teachers and principals concerning factors related to job-satisfaction and job discipline. Doctoral dissertation. California University. In Disseration Abstracts International , 48(7), 2488-A. 1996

Kaskin, H.B.; The project report of teacher teaching technique method and student achievement. Financed by: World bank, 1999.

Kerlinger, F.N.; Foundation of behavioral research. New Delhi: Surjeet Publication, 1964.

Laughlin, C.M.; Perceived barrieers of women who aspire to the principalship. Doctoral dissertation, Ohio State University. In Disseration Abstracts International, 52(2), 388-A, 1990.

Leslie, W.; Patterns of communicative openess among secondary school in illionis, Doctoral disseration. Fordham Universityi. In Disseration Abstracts International, 40(2), 7226-A, 1991.

Melendrez, S.C.; An investigation of open and closed school organizational climate and classroom learning environment. Doctoral dissertation, Laverne University. In Dissertation Abstracts International, 46(4), 868-A. 1985.

Michael R.; Attituded maintains by the teachers towards their teacher effectiveness. Ed. dissertation Tenessese State University.In Dissertation Abstracts International, 39(5), 126-A, 1993.

Michell, J.: Organizational health in wisconsin transitional schools. Doctoral disseration, Wisconsin University. In Disseration Abstracts International, 50(6), 9-A, 1988.

Misty, N.H.; The quality of school life as a function of organizational climate and pupil control ideology, In M.B. Buch (Ed.) fourth survey of research in education. New Delhi: NCERT, 1983-88.

Morgon, PC.; A profile of an effective teacher, A study on seventh grade social studies classroom. Doctoral dissertation. Albama University. In Dissertation Abstracts International. 47(5), 2144-A, 1990.

Nandita, K.; A survey report on primary and secondary school climate. Rajasthan: Rajashtan publishing house, 22 March 2000.

Narseem, A; To study the relationship between principals leadership behaviour and teacher's job-satisfaction. Doctoral dissertation. Ohio State Universityi. In Dissertation Abstracts International, 49(2), 127-A, 1989.

Nell. M.M. : A study of the psychological school climate. Doctoral dissertation. Albert University. In Dissertation Abstracts International. 40(6). 1273-A. 1993.

Nongnuan, L: A study of organizational climate of secondary schools of east zone of Thailand in the context of some variables. doctoral disseration, East Zonal University, 1988.

Patric, M.C.; The creation of a positive school climate through the design an implementation of selected strategies and their effect on student attendence and achievement in reading and mathematics skills: A case study, In Dissertation Abstracts International. 49 (50) 1005-A, 1988.

Prakashan, D: To study the effect of school organizational climates on teacher effectivensss. Doctoral disseration, Gujrat Universityi, 1986. In M.B. Buch (Ed.) fourth survey of research in education, New Delhi: N.C.E.R.T., 1983-88.

Putnum, J.; Organizational climate in middle levelschools. Doctoral dissertation. Michigan State University 1990 Indian Educatinal Review, New Delhi, N.C.E.R.t, 1992.

Rawat, G.S.: To study the school climate and its effect on teaching efficiency. Doctroral disseration, 1987. In M.B. Buch (Ed.), foruth survey of research in education, New Delhi: NCERT, 1983-88.

Ray, K. ; Comparision of ? Organizational sturcture and leadership behaviour between autonomous and affiliated colleges. Doctoral dissertation, West Bengal University, 1987. In M.B. Buch (Ed.) Fourth Survey of research in educational, News Delhi: NCERT 1983-88.

Richard, H. ; Effect of societal, organizational and indivisual factors on job performance, job-satisfaction and job strain; Multiple structural equation modeling in a three wave longitudinal panel study of new teachers. Doctoral disseration, Michigan University. In Dissertation Abstracts International, 49(7), 2182-A, 1987.

Ruark, G.T.; Judgement of elementry school climate and job-satisfaction high and low performing schools. Ed disseration, Estern portion of State University, In Disseration Abstracts International, 48(7), 2181-A, 1996.

Samad, A. ; Study of organizational climate of Government high school of Chandigarh and its effects on job satisfaction of teachers. Doctoral disseration Chandigarh University, 1986, In M.B. Buch (Ed.) fourth survey of research in education. New Delhi N.C.E.R.T. 1983-88.

Seok, J.M.; Principals leadership and communication and teacher job-satisfaction in Korea, Ed. disseration, Columbia University, In Dissertatino Abstracts International , 48 (12), 3020-A, 1987.

Suvichakoni, C.; The relationship between job-satisfaction and selected characteristies of teachers in international schools in Thailand. Doctoral disserationa, Illinois Universitiy. in Disseration Abstracts International, 50 (7). 219-A, 1995.

Sturdiwant S; Relationship between role of teachers and their job-satisfaction. Doctoral disseration, Massachusetts University. In Dissertation Abstracts Internarional, 48 (10), 127-A, 1990.

Suliman, A.S; The relationship between principal leader behaviour and middle school climate in Hail District, Saudi Arabia. Ed. dissertaion, New ork University.In Disseration Abstracts International, 52(2), 361-A, 1991.

Walter, K.; Relationship of teacher self concept and job-sarisfaction to student achievement in grade one and four. Ed. disseration, Mississippi Universityi. In Dissertation Abstracts International, 49(6), 1369-A, 1997.

Ward, B.G. ; Classroom cliamate and teacher questioning stategies: Realationship students cognitive development. Doctoral disseration, North Carolina University. In Disseration Abstracts International, 52(2), 405-A, 1990.

Weyne, C.J.: An impact of corporate Punishment in Maricopa County of Arizona, Ed. dissertiona, Arizona State University. In Disseration Abstracts International, 52 (2), 357-A, 1990.

William, G.; Elemantary School teachers reaction to pull-out programmes. Doctoral dissertation, Hofstra University. In Dissertation Abstracts International, 49(5), 1010-A, 1988.

परिशिष्ट
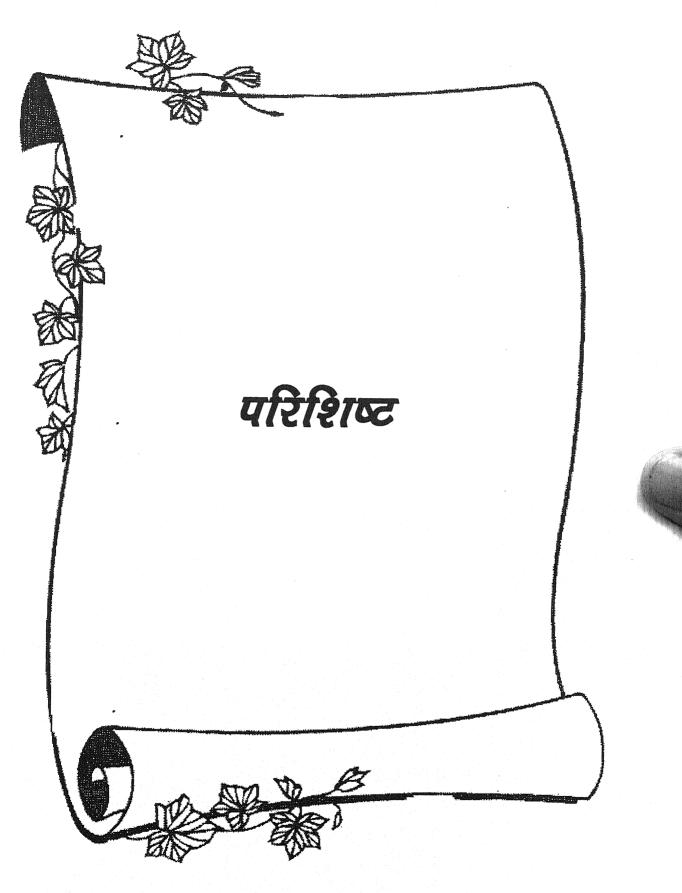
शिक्षाशास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

शिक्षक दक्षता मापनी

विवरण

1.	नाम	
2.	लिंग	
3.	जन्मतिथि	
4.	शैक्षिक स्तर	
6.	ववाहिक स्तर	
6.	मूल वेतन	
7.	पिता/पति/पत्नी का व्यवसाय	
8.	पिता/पति/पत्नी की आय	
9.	विद्यालय का नाम	
10.	वर्तमान विद्यालय का कार्यकाल	
11.	शिक्षण अवधि	
12.	परिवार की कुल आय	
13.	आय के अन्य स्रोत	
14.	परिवार के सदस्यों की संख्या	
15.	परिवार के आश्रित सदस्यों की संख्या	

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। देश का भविष्य इसके हाथों में होता है। वर्तमान समय में ऐसी बहुत सी परिस्थितियां होती है जो शिक्षक के दिन–प्रतिदिन के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत मापनी में शिक्षकों के व्यवहार से सम्बंधित कुछ कथन हैं। प्रत्येक कथन के समक्ष पांच विकल्प (पूर्णतया सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतया असहमत) दिए गए हैं। प्रत्येक कथन पढ़कर आपको अपने सम्बंध में जो सबसे सही विकल्प प्रतीत हो उसको कथन के सामने दिए गए विकल्प स्तम्भ में (✓) का चिन्ह लगाकर अंकित करें।

चूंकि कोई गलत या सही उत्तर नहीं है अतः अपनी प्रतिक्रिया निस्संकोच दीजिए। विकल्प चुनते समय ध्यान रखें कि वह बात आप पर लागू होती है। सभी कथनों के प्रति प्रतिक्रिया अवश्य दें। आपकी प्रतिक्रिया पूरी तरह गोपनीय रहेगी।

सहयोग के लिए धन्यवाद।

		पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया सहमत
1.	मैं सामाजिक क्रियाओं में/अवसरों पर सहजता से भाग लेता हूँ।					
2.	कक्षा में विषयानुकूल प्रश्न पूछने से शिक्षक व विद्यार्थी दोनों का मूल्यांकन होता है।					
3.	अपनी शिक्षण कठिनाइयों को मैं साथी शिक्षकों के समक्ष नही प्रकट करता हूँ।					
4.	उद्दण्ड बालकों को कक्षा से बाहर करके ही सुधारु शिक्षण सम्भव होगा।					
5.	कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों के प्रति सख्ती करना नितान्त आवश्यक है।					
6.	अभिभावकों को जागरूक किए बिना छात्रों को पूर्णतया शिक्षित नही किया जा सकता।					
7.	अधिकतर छात्र किन्हीं कारणों से बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते है अतः इनके साथ अत्यधिक मेहनत करना व्यर्थ है।					
8.	मुझे अपने सुविधानुसार शिक्षण पद्धति से पढ़ाना उचित लगता है।					
9.	कक्षा शिक्षण में छात्रों का अधिक सहयोग लेने से अत्यधिक समय व्यर्थ होता है।					
10.	समयान्तराल के कारण प्रशिक्षण के समय प्राप्त बाल मनोविज्ञान का ज्ञान अब कमजोर पड़ गया है।					
11.	कभी –२ छात्रों की गलतियो पर मैं उन्हें डांटता भी हूँ।					
12.	अत्यधिक अशुद्धियां करने वाले छात्रों को सुधारना असम्भव है।					
13.	कार्याधिक्य के कारण नियत कार्यो के अतिरिक्त अन्य दायित्व वहन मुझे बोझ स्वरूप लगता है।					
14.	अभिभावकों के अधिकांश सुझावों को क्रियान्वित करना व्यावहारिक नहीं है।					
15.	शिक्षण व्यवसाय अन्य व्यवसायों से श्रेष्ठतर है।					
16.	मेरे छात्र मुझसे डरते हैं।					
17.	प्रतियोगी भावना के तहत मैं अधिक कार्यभार अपने ऊपर ले लेता हूँ।					
18.	समयाभाव के कारण छात्रों की सभी अशुद्धियों को सुधारना सम्भव नहीं है।					

		पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया सहमत
19.	विद्यालय में किसी भी समस्या के सम्बंध में मेरे निर्णय को महत्व दिया जाता है।					
20.	कक्षा में वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखते हुए शिक्षण में कठिनाई होती है।					
21.	किन्हीं परेशानियों के कारण अक्सर मैं समय से विद्यालय नहीं पहुंच पाता हूँ।					
22.	पाठ के बीच में सहायक सामग्री दिखाने से सम्बंधित क्रियाकलाप छात्रों को पाठ से विरक्त करते हैं।					
23.	छात्रों की व्यक्तिगत समस्याएं सुलझाने का दायित्व केवल अभिभावकों का है।					
24.	कक्षा में छात्रों की अत्यधिक संख्या के कारण मैं स्फूर्तिवान नहीं रह पाता हूँ।					
25.	शारीरिक विकलांगता से ग्रसित बच्चों के लिए अलग विद्यालयों की व्यवस्था होनी चाहिए।					
26.	सहयोगी शिक्षकों के व्यवहार का मेरे शिक्षण कौशल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।					
27.	शिक्षण व शिक्षण पद्धति में हो रहे नवीन विकास का मुझे पता ही नहीं चल पाता है।					
28.	बच्चों में कुपोषण/बीमारी अभिभावकों की अज्ञानता व अनभिज्ञता के कारण होती है अतः मैं छात्रों के इस पक्ष पर ध्यान नहीं देता हूँ।					
29.	कक्षा में छात्रों की दैनिक उपस्थिति का कठोरता से पालन करता हूँ।					
30.	छात्रों से आवश्यक दूरी बनाए रखना मैं उचित मानता हूँ।					
31.	मैं छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर ध्यान नहीं देता क्योंकि ये अक्सर बेवजह प्रश्न करते हैं।					
32.	एक साथ विभिन्न कक्षाओं को पढ़ाना नामुमकिन है।					
33.	वर्तमान भौतिकवादी समाज में शिक्षक की कोई प्रतिष्ठा नहीं है।					
34.	बाल केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है कि जब बच्चा पढ़ने के लिए इच्छुक हो तभी उसे पढ़ाया जाय।					
35.	अनुशासन का तात्पर्य छात्रों का शान्त रहना है।					

		पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया सहमत
36.	प्रत्येक शिक्षक द्वारा निष्ठा व लगन से काम करने पर भी शिक्षा में सुधार नहीं लाया जा सकता।					
37.	मैं केवल उन्हीं कार्यों को सम्पन्न करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जो मेरे लिए निर्देशित हैं।					
38.	शिक्षक अभिभावक समितियों में मैं अधिकतर मेधावी छात्रों के माता–पिता की प्रशंसा करता हूँ।					
39.	सामग्री टूटने के भय से कक्षा में प्रयुक्त सहायक सामग्री में छात्रों को छूने नहीं देता हूँ।					
40.	पढ़ने में कमजोर बच्चे कम बुद्धिमान होते हैं।					
41.	प्रशिक्षण के दौरान बताई गई शिक्षण विधि को पूर्णतया अपनाने से पाठ्यक्रम को एक सत्र में समाप्त नहीं किया जा सकता है।					
42.	पढ़ाते समय उदाहरणों के अत्यधिक प्रयोग से पाठ को समय से समाप्त करना सम्भव नहीं हो पाता है।					
43.	मैं अपने इस व्यवसाय से पूर्णतया संतुष्ट हूँ।					
44.	सभी छात्रों के साथ मैं समान रूप से व्यवहार नहीं कर पाता हूँ।					
45.	मेरे छात्र अनुशासनहीन है क्योंकि वे सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े घरों से आते हैं।					
46.	आज छात्र इतने उद्दण्ड होते हैं कि उनको नियंत्रित करना अत्यंत कठिन है।					
47.	मैं अपने पारिवारिक दायित्वों को विद्यालीय दायित्वों से अधिक महत्व प्रदान करता हूँ।					
48.	छात्रों के कक्षा कार्य की जांच उसी समय करता हूँ।					

School Organizational Climate Discription Questionnaire.

इसे ध्यान से पढ़िये :

इस प्रश्नावली के विभिन्न प्रश्न एक विद्यालय के संगठन में घटित विभिन्न प्रकार के विशेष व्यवहारों या दशाओं का निरूपण करते है। कृपया आप बतलाइये कि इन वर्णित विशेषताओं में से कौन सी विशेषता किस सीमा तक आपको विद्यालय-व्यवहार में देखने को मिलती है। आप इन विवरणों का 'अच्छे' या 'बुरे' व्यवहार की दृष्टि से मूल्यांकन न करें अपितु प्रत्येक विवरण को सावधानी से पढ़ें तथा इस दृष्टि से उत्तर दें कि अमुक विवरण आपका विद्यालय किस रूप में प्रस्तुत करता है

उत्तर-पत्र में प्रत्येक क, ख, ग, घ खाने के शीर्ष भाग पर इन विवरणों के मूल्यांकन का वर्णनात्मक मापदण्ड (बहुत कम बार, कभी-कभी, प्राय:, बहुत बार) दिया है। कृपया इन निर्देशों को पढ़कर ही उत्तर अंकित करें। आप जिस विकल्प को चाहें, उसको चिन्हित कर सकते है।

इस प्रश्नावली का उत्तर प्राप्त करने के पश्चात् अनुसंधानकर्ता द्वारा उन व्यवहारों एवं स्थितियों की जांच की जायेगी जिनको आपके विद्यालय के अधिकांश अध्यापकों ने उल्लेखनीय बतलाया है और उस आधार पर आपके विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण की रूपरेखा तैयार की जायेगी। एक उदाहरण आपके समक्ष प्रस्तुत है:—

	बहुत कम	कभी-कभी	प्राय:	बहुत बार
	क	ख	(ग)	घ
(१) अध्यापक एक दूसरे को उनके नाम के प्रथम भाग से सम्बोधित करते हैं।				

इस उदाहरण में उत्तरदाता 'ग' वर्ग को गोलाकार में बन्द करके यह दर्शित करता है कि उस विद्यालय में यह व्यवहार "प्राय:" होता है।

आप चाहें तो किसी अन्य विकल्प को भी चिन्हित कर सकते हैं। अब आप निर्दिष्ट उदाहरण के अनुसार अपने उत्तर चिन्हित करें। अंत में कृपया जांच कर लीजिये कि आपने प्रत्येक विवरण के उत्तर को चिन्हित कर दिया है।

समय का कोई प्रतिबन्ध नहीं है, फिर भी आप शीघ्रता से उत्तर दीजिये। विश्वास कीजिये, आपके उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे, अतः बिना झिझक के स्पष्ट उत्तर दीजिये।

१- विद्यालय के अध्यापकों की आदतें विक्षुब्ध करने वाली हैं ।

२- प्रधानाध्यापक स्वयं कठिन परिश्रम करके उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

३- अध्यापकों का मनोबल (मोरल) समुन्नत है ।

४- अध्यापकों द्वारा की गयी आलोचना रचनात्मक होती है ।

५- अध्यापकों के घनिष्ठतम मित्र विद्यालय-अध्यापकों में से ही हैं ।

६- कक्षा के कार्य निर्धारण सम्बन्धी समस्त निर्णय प्रधानाध्यापक का ही होता है ।

७- विद्यालय समारोहों में बोलने के लिये प्रधानाध्यापक पूरी तैयारी करता है ।

८- यहाँ अध्यापकों का एक ऐसा अल्पमत समुदाय है जो हमेशा बहुसंख्यक समुदाय का विरोध करता है ।

९- औपचारिकताएं अध्यापन-कार्य में बाधा उपस्थित करती है ।

१०- प्रधानाध्यापक अध्यापकों को अपनी आलोचना का कारण भी बतलाता है ।

११- अध्यापक अपना कार्य पूर्ण शक्ति, उत्साह व आनन्द से सम्पन्न करते हैं ।

१२- अध्यापकगण अपने साथी अध्यापकों को घर पर मिलने हेतु आमन्त्रित करते हैं ।

१३- प्रधानाध्यापक अध्यापकों के कल्याण की दिशा में प्रयत्नशील रहता है ।

१४- प्रधानाध्यापक अध्यापकों के लिये कार्य-निर्धारण करता है ।

१५- स्टॉफ-सभाएं निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ही आयोजित की जाती हैं ।

१६- प्रधानाध्यापक अध्यापकों के आने से पहले ही विद्यालय में उपस्थित हो जाते हैं ।

१७- अध्यापक समुचित स्कूल भावना का प्रदर्शन करते हैं ।

१८- अध्यापक स्कूल के दैनिक कार्य-दिवस के बीच में ही चले जाते हैं ।

१९- प्रधानाध्यापक अध्यापकों को नवीनतम शैक्षणिक गतिविधियों से अवगत कराते रहते हैं ।

२०- प्रधानाध्यापक द्वारा निर्धारित नियमों को चुनौती नहीं दी जाती है ।

२१- अध्यापकगण अपने से भिन्न विचारों वाले अध्यापकों पर समूह के रूप में अपने विचार थोपते हैं ।

२२- प्रधानाध्यापक दबाव डालता है कि प्रत्येक कार्य उसकी इच्छानुसार ही हो ।

२३- प्रधानाध्यापक को समझना बड़ा आसान है ।

२४- सुरक्षा सम्बन्धी सेवा (कस्टोडियल सर्विस) आवश्यकता होने पर सुलभ है ।

२५- अध्यापक अपने साथियों की पारिवारिक, पृष्ठ-भूमि को जानते हैं ।

२६- अध्यापक-डायरी को पूरा करने के लिये बहुत अधिक कार्य करना पड़ता है ।

२७- अध्यापकों को विद्यालय कार्यालय की सेवायें उपलब्ध है।

२८- प्रधानाध्यापक अध्यापकों की अध्यापन-योग्यता की जाँच करता हैं।

२९- प्रधानाध्यापक अध्यापकों की निजी समस्याओं को हल करने में मदद करते है।

३०- प्रधानाध्यापक अध्यापकों के प्रत्येक व्यवहार का मूल्यांकन कानूनी आधार पर ही करते हैं।

३१- प्रधानाध्यापक अध्यापकों के प्रति व्यक्तिगत सहानुभूति रखते हैं।

३२- अध्यापकगण प्रधानाध्यापक की विशेष कृपा के लिए प्रयत्नशील रहते है।

३३- अधिकांश अध्यापक अपने दोषों को स्वीकार कर लेते है।

३४- अध्यापक व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं पर परस्पर चर्चा करते हैं।

३५- प्रधानाध्यापक अध्यापकों की गलतियों के निवारण हेतु सुझाव देते हैं।

३६- अध्यापकगण अध्यापक-सभाओं में दूसरे अध्यापकों के बोलने के अवसर पर विघ्न डालते हैं।

३७- प्रधानाध्यापक अध्यापको के कार्य को पूरा करने में मदद करते हैं।

३८- विद्यालय में उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री कक्षा में प्रयोग के लिए सरलता से सुलभ है।

३९- प्रधानाध्यापक प्रतिदिन समस्त अध्यापकों से सम्पर्क करता है।

४०- अध्यापकों को विद्यालय समयावधि में सामाजिक दृष्टि से परस्पर निकट आने के अवसर मिलते है।

४१- विद्यालय में प्रशासनिक पत्राचार के कार्य अधिक हैं।

४२- अध्यापकों को उनके उच्चाधिकारियों के निरीक्षण के परिणामों से सूचित किया जाता है।

४३- प्रधानाध्यापक तसल्ली करता है कि अध्यापक अपनी पूरी शक्ति से कार्य करते हैं।

४४- अध्यापकगण अध्यापक सभाओं में बेढंगे प्रश्न पूछते है।

४५- अध्यापक समुदाय में एक भावना है कि आओ, कार्य पूरा करें।

४६- अध्यापक प्रशासनिक अभिलेखों को मिलजुल कर तैयार करते हैं।

४७- स्टॉफ-सभाएं मुख्यतः प्रधानाध्यापक की प्रतिवेदन-सभाएं है।

४८- अध्यापकों के अतिरिक्त कर्त्तव्य स्पष्ट रूप से नियत किये जाते हैं।

४९- प्रशासकीय अभिलेखों की तैयारी के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है।

५०- प्रधानाध्यापक अध्यापक की सहायता के लिए नियमों से हटकर भी काम कर देता है।

५१- प्रधानाध्यापक स्टॉफ-सदस्यों के छोटे-मोटे आपसी मतभेदों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं।

५२- अध्यापकगण अध्यापक-सभाओं में बेतुकी बातें करते हैं।

५३- पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियों का आयोजन सब अध्यापक मिलजुल कर करते है।

५४- कार्य-दिवस के मध्यान्तर (रिसेस) का सब अध्यापक एक साथ बैठकर आनन्दमय उपयोग करते हैं।

५५- अध्यापकगण विद्यालय-समय के बाद भी अपनी स्वयं की इच्छा से रुकते हैं।

५६- प्रधानाध्यापक विद्यालयीय गतिविधियों के निर्धारण में अध्यापकों की राय लेते हैं।

५७- अध्यापक इस विद्यालय को छोड़ने, के सम्बन्ध में बातचीत करते है।

५८- विद्यालय के बाद अध्यापकगण अपने छात्रों की व्यक्तिगत समस्याएं सुलझाने के लिए समय देते है।

५९- प्रधानाध्यापक अध्यापकों को आर्थिक लाभ (हक) दिलाने के लिए प्रयत्न करता है।

६०- अनौपचारिक रूप में एकत्र होने के समय अध्यापकों में काफी हँसी-मजाक होती है।

६१- अध्यापक छोटे-छोटे समुदायों में समाजीकरण की ओर अग्रसर है।

६२- प्रधानाध्यापक स्टॉफ-सभाओं का संचालन व्यवसाय सम्मेलन की तरह करता है।

६३- शिक्षण कार्य में प्रयोग के लिए सहायक-सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

६४- प्रधानाध्यापक अध्यापकों को उनके कर्त्तव्यों के बारे में बार-बार कहते हैं।

शालीय संगठनात्मक वातावरण सूचक प्रश्नावली

उत्तर - पत्र

विद्यालय का नाम ____________________ स्थान ____________________ जिला ____________________

प्रधानाध्यापक / अध्यापक ____________________ उम्र ____________ लिंग ____________ राज्य ____________________

विद्यालय में अध्यापकों की संख्या ____________________ वर्तमान विद्यालय का कार्यकाल ____________________

विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या ____________________

विवरण संख्या	बहुत कम बार	कभी कभी	प्रायः	बहुत बार	विवरण संख्या	बहुत कम बार	कभी कभी	प्रायः	बहुत बार	विवरण संख्या	बहुत कम बार	कभी कभी	प्रायः	बहुत बार	विवरण संख्या	बहुत कम बार	कभी कभी	प्रायः	बहुत बार
1	क	ख	ग	घ	17	क	ख	ग	घ	33	क	ख	ग	घ	49	क	ख	ग	घ
2	क	ख	ग	घ	18	क	ख	ग	घ	34	क	ख	ग	घ	50	क	ख	ग	घ
3	क	ख	ग	घ	19	क	ख	ग	घ	35	क	ख	ग	घ	51	क	ख	ग	घ
4	क	ख	ग	घ	20	क	ख	ग	घ	36	क	ख	ग	घ	52	क	ख	ग	घ
5	क	ख	ग	घ	21	क	ख	ग	घ	37	क	ख	ग	घ	53	क	ख	ग	घ
6	क	ख	ग	घ	22	क	ख	ग	घ	38	क	ख	ग	घ	54	क	ख	ग	घ
7	क	ख	ग	घ	23	क	ख	ग	घ	39	क	ख	ग	घ	55	क	ख	ग	घ
8	क	ख	ग	घ	24	क	ख	ग	घ	40	क	ख	ग	घ	56	क	ख	ग	घ
9	क	ख	ग	घ	25	क	ख	ग	घ	41	क	ख	ग	घ	57	क	ख	ग	घ
10	क	ख	ग	घ	26	क	ख	ग	घ	42	क	ख	ग	घ	58	क	ख	ग	घ
11	क	ख	ग	घ	27	क	ख	ग	घ	43	क	ख	ग	घ	59	क	ख	ग	घ
12	क	ख	ग	घ	28	क	ख	ग	घ	44	क	ख	ग	घ	60	क	ख	ग	घ
13	क	ख	ग	घ	29	क	ख	ग	घ	45	क	ख	ग	घ	61	क	ख	ग	घ
14	क	ख	ग	घ	30	क	ख	ग	घ	46	क	ख	ग	घ	62	क	ख	ग	घ
15	क	ख	ग	घ	31	क	ख	ग	घ	47	क	ख	ग	घ	63	क	ख	ग	घ
16	क	ख	ग	घ	32	क	ख	ग	घ	48	क	ख	ग	घ	64	क	ख	ग	घ

गोपनीय—इस लाईन के नीचे कुछ न लिखिये

Factors	Raw Scores
I	
II	
III	
IV	
V	
VI	
VII	
VIII	

Scored by ____________

Date ____________

APPENDIX

" अध्यापक कृत्य सन्तोष मापनी "

TEACHER'S JOB SATISFACTION SCALE

निर्देश : आप एक अध्यापक हैं अतः आप अपने अध्यापन कार्य से सम्बन्धित कुछ न कुछ प्रतिक्रिया रखते होंगे । आगे अध्यापन व्यवसाय के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये जा रहे हैं । आप प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें एवं निर्णय करें कि आप उस कथन से कहाँ तक सहमत हैं । अपने निर्णय को कथन के साथ दिये गये खानों में से एक में सही (✓) का चिन्ह लगाकर व्यक्त कीजिये ।

यदि आप किसी कथन से पूर्णतः सहमत हैं तो A कालम में उस कथन के सामने सही (✓) का चिन्ह अंकित कीजिये । यदि आप कथन से सहमत तो हों किन्तु पूर्णतः सहमत न हों तो B कालम में सही (✓) का चिन्ह अंकित कीजिये । यदि आप किसी भी पक्ष में निर्णय नहीं कर पाते तो C कालम में सही (✓) का चिन्ह अंकित कीजिये । इसी प्रकार असहमत होने पर D एवं पूर्णतः असहमत होने पर E कालम में सही (✓) का चिन्ह लगाइये ।

विशेष :- कथनों का कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है । कृपया अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त कीजिये । आपके विचार पूर्णतः गोपनीय रहेंगे एवं केवल अनुसंधान कार्य हेतु ही प्रयुक्त किये जायेंगे ।

प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए संकेत :—

A—पूर्णतः सहमत
B—सहमत
C—अनिश्चित
D—असहमत
E—पूर्णतः असहमत

प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए संकेत :—

A—पूर्णतः सहमत, B—सहमत, C—अनिश्चित, D—असहमत, E—पूर्णतः असहमत ।

-: कथन :-		प्रतिक्रिया				
		A	B	C	D	E
१ मुझे विद्यालय/विश्वविद्यालय से समय पर वेतन मिल जाता है ।	१					
२ मुझे अपने साथी अध्यापकों का सहयोग प्राप्त है ।	२					
३ मैं अपने विभागाध्यक्ष/ प्राचार्य के कार्य करने के तरीके से संतुष्ट नहीं हूं ।	३					
४ अध्यापन वही करने का अवसर देता है जो मैं सर्वोत्तम कर सकता हूं ।	४					
५ अपने छात्रों के बौद्धिक स्तर से मैं सन्तुष्ट रहता हूं ।	५					
६ मुझे अपने विश्वविद्यालय/विद्यालय पर गर्व है ।	६					
७ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय में अध्यापन हेतु सहायक सामग्री की उचित व्यवस्था है ।	७					
८ विद्यालय/विश्वविद्यालय में मेरे ऊपर कार्य भार उचित है ।	८					
९ अध्यापन व्यवसाय में मेरी प्रतिभा का उपयोग सही ढंग से किया जा रहा है	९					
१० मुझे विद्यालय/विश्वविद्यालय से अपने कार्यों का उचित प्रतिफल मिलता है	१०					
११ मुझे विद्यालयों/विश्वविद्यालयों के कार्यों में अपनत्व का आभास होता है ।	११					
१२ अध्यापक होने के नाते समाज में मेरा आदर किया जाता है ।	१२					
१३ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय में निरीक्षणकर्ता कार्य को उचित ढंग से करने के लिए सुझाव देते हैं ।	१३					
१४ अध्यापन व्यवसाय मेरे जीवन को सुखी बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है ।	१४					
१५ मुझे अपनी शैक्षिक या व्यवसायिक योग्यता बढ़ाने की स्वतन्त्रता प्राप्त है ।	१५					
१६ मैं विद्यालय/विश्वविद्यालय के वर्तमान सेवा नियमों से सतुष्ट हूं ।	१६					
१७ मेरे व्यवसायिक दृष्टि से आगे बढ़ने के अवसर हैं ।	१७					
१८ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में नवीन पुस्तकें समय-२ पर आती रहती हैं ।	१८					
१९ अध्यापन व्यवसाय में किसी भी प्रकार का शारीरिक जोखिम नहीं है ।	१९					
२० मैं विद्यालय/विश्वविद्यालय में अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट हूं ।	२०					

प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए संकेत :—

A–पूर्णतः सहमत, B–सहमत, C–अनिश्चित, D–असहमत, E–पूर्णतः असहमत।

—: कथन :—		प्रतिक्रिया				
		A	B	C	D	E
२१ मैं अपनी वर्तमान आय से संतुष्ट हूँ।	२१					
२२ मेरे साथी अध्यापक मेरा आदर करते हैं।	२२					
२३ अच्छा कार्य करने पर विभागाध्यक्ष/प्राचार्य मेरी प्रशंसा करते हैं।	२३					
२४ मुझे अपने अध्यापन व्यवसाय पर गर्व है।	२४					
२५ छात्र अपनी व्यक्तिगत समस्याओं में मेरा सुझाव लेते हैं।	२५					
२६ मेरा विद्यालय/विश्वविद्यालय शिक्षण हेतु एक आदर्श संस्था है।	२६					
२७ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत ही मधुर है।	२७					
२८ मुझे विद्यालय/विश्वविद्यालय में इतना कम कार्य होता है कि मैं स्वयं को बोर महसूस करता हूँ।	२८					
२९ विद्यालय/विश्वविद्यालय में मुझे अपने कार्य के स्वप्रशासन के अवसर मिलते हैं।	२९					
३० विद्यालय/विश्वविद्यालय में मेरे पद का वर्तमान स्तर सन्तोषप्रद है।	३०					
३१ मैं विद्यालय/विश्वविद्यालय के कार्यों में रुचि का अनुभव करता हूँ।	३१					
३२ समाज में अध्यापन व्यवसाय को सम्मानित दृष्टि से नहीं देखा जाता है।	३२					
३३ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय में निरीक्षण कार्य प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण से होता है।	३३					
३४ मेरा व्यवसाय मेरे परिवार की आकांक्षाओं को पूरा करने में सफल रहा है।	३४					
३५ विद्यालय/विश्वविद्यालय में मुझे अपने विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।	३५					
३६ मेरा विद्यालय/विश्वविद्यालय शिक्षकों की समस्याएं दूर करने में रुचि लेता है।	३६					
३७ मैं अध्यापन व्यवसाय में ही [illegible] मानता हूँ।	३७					
३८ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या सन्तोषप्रद है।	३८					
३९ अध्यापन व्यवसाय में छात्रों से हाथापाई होने का डर रहता है।	३९					
४० विद्यालय/विश्वविद्यालय में मुझे महत्वपूर्ण कार्यों का उत्तरदायित्व दिया जाता है।	४०					

प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए संकेत :-

A–पूर्णतः सहमत, B–सहमत, C–अनिश्चित, D–असहमत, E–पूर्णतः असहमत।

-: कथन :-		A	B	C	D	E
४१ मैं अध्यापन में आय के अन्य साधनों (ट्यूशन, कापी जाँचना आदि) से सन्तुष्ट हूँ।	४१					
४२ समस्याएँ आने पर साथी अध्यापक मेरी सहायता करते हैं।	४२					
४३ मेरे विभागाध्यक्ष/प्राचार्य एक निष्पक्ष व्यक्ति हैं।	४३					
४४ मैं किसी अन्य व्यवसाय में जाना चाहता हूँ।	४४					
४५ छात्र विद्यालय/विश्वविद्यालय में उद्दण्डतापूर्ण व्यवहार करते हैं।	४५					
४६ मैं किसी अन्य विद्यालय/विश्वविद्यालय में जाना चाहता हूँ।	४६					
४७ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय में अध्यापक-कक्ष की व्यवस्था सन्तोषप्रद है।	४७					
४८ मुझे अन्य साथियों से अधिक कार्य करना पड़ता है।	४८					
४९ अध्यापन व्यवसाय में मेरी शैक्षिक योग्यताओं का सही ढंग से उपयोग होता है	४९					
५० मेरे छात्रों का परीक्षा परिणाम सन्तोषप्रद रहता है।	५०					
५१ मुझे अध्यापन में आत्मसन्तोष मिलता है।	५१					
५२ अध्यापन व्यवसाय समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करता है।	५२					
५३ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय में निरीक्षण केवल त्रुटियाँ ढूँढने के लिए किया जाता है।	५३					
५४ मेरा परिवार मेरे व्यवसाय को पसन्द नहीं करता है।	५४					
५५ मैं विद्यालय/विश्वविद्यालय की नीति व योजनाओं की आलोचना करने के लिए स्वतन्त्र हूँ।	५५					
५६ मैं विद्यालय/विश्वविद्यालय की सामान्य कार्य प्रणाली से सन्तुष्ट हूँ।	५६					
५७ विद्यालय/विश्वविद्यालय में मेरी उन्नति के अवसर हैं।	५७					
५८ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की पुस्तक वितरण नीति संतोषप्रद है।	५८					
५९ मेरा पद पूर्णरूपेण सुरक्षित है।	५९					
६० मेरा विद्यालय/विश्वविद्यालय में एक महत्वपूर्ण स्थान है।	६०					

प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए संकेत :—

A—पूर्णतः सहमत, B—सहमत, C—अनिश्चित, D—असहमत, E—पूर्णतः असहमत।

—: कथन :—		प्रतिक्रिया				
		A	B	C	D	E
६१ मेरी वार्षिक वेतन वृद्धि दर सन्तोषजनक है।	६१					
६२ मेरे साथी अध्यापक मेरा उत्साहवर्धन करते हैं।	६२					
६३ मेरे विभागाध्यक्ष/प्राचार्य कार्यों को अच्छी तरह करने के लिए मुझे प्रोत्साहित करते हैं।	६३					
६४ मैं स्वभाव से अध्यापन कार्य के उपयुक्त हूं।	६४					
६५ छात्र मेरी कक्षा में अनुशासनपूर्ण व्यवहार करते हैं।	६५					
६६ मेरा विद्यालय/विश्वविद्यालय एक शिक्षोन्मुख संस्था है।	६६					
६७ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय में सर्दी-गर्मी से बचाव के साधन सन्तोषप्रद हैं।	६७					
६८ अन्य किसी व्यवसाय में मेरे ऊपर अधिक कार्य भार होता।	६८					
६९ अध्यापन व्यवसाय में मेरी सृजनशीलता का उपयोग हो जाता है।	६९					
७० मुझे अध्यापन व्यवसाय में अपेक्षित उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो पाई हैं।	७०					
७१ मैं अध्यापन कार्य में लगाव का अनुभव करता हूं।	७१					
७२ सामाजिक कार्यों में मेरी राय एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।	७२					
७३ निरीक्षण कार्य से मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया में सुधार होता है।	७३					
७४ मेरे बच्चों के शैक्षिक विकास में मेरा अध्यापन व्यवसाय सहायक है।	७४					
७५ मैं किसी भी राजनैतिक या सामाजिक संस्था का सदस्य बनने के लिए स्वतन्त्र हूं।	७५					
७६ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय की अवकाश नीति सन्तोषप्रद है।	७६					
७७ मेरे व्यवसाय में उन्नति के अवसर नहीं हैं।	७७					
७८ मेरे विद्यालय/विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में अध्ययन करने की समुचित व्यवस्था नहीं है।	७८					
७९ सेवामुक्त करने पर मुझे अपील का अधिकार है।	७९					
८० विद्यालय/विश्वविद्यालय में मुझे अपेक्षित आदर नहीं मिलता है।	८०					

कृपया जांच लीजिए कि आपने प्रत्येक कथन पर अपना निर्णय दे दिया है।

प्राथमिक शिक्षक पुरूष.शहरी

क्रमांक	प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति						शिक्षक दक्षता प्राप्तंक	कार्य सन्तोष प्राप्तंक	विद्यालय वातावरण प्राप्तंक
	a	b	c	d	e	Total			
1	35	40	19	18	14	126	152	283	167
2	41	38	19	18	13	129	161	310	167
3	39	35	21	21	19	135	183	289	166
4	44	34	17	17	12	124	143	309	92
5	35	31	10	17	14	107	167	264	131
6	40	35	16	18	10	119	149	276	109
7	42	43	16	18	15	134	144	306	154
8	33	33	12	20	15	113	140	257	169
9	43	37	23	22	10	135	200	374	147
10	43	45	21	17	09	135	129	318	156
11	38	43	18	17	08	124	148	325	122
12	46	39	19	19	14	137	169	289	134
13	41	29	16	16	13	115	151	233	147
14	40	36	20	18	10	124	126	324	119
15	37	38	19	14	09	117	124	290	124
16	41	29	16	18	14	118	129	325	204
17	38	40	18	14	10	120	138	290	163
18	35	37	10	17	15	114	139	279	144
19	40	39	15	16	10	120	168	306	143
20	44	36	14	20	14	128	196	252	153
21	29	35	15	19	17	115	136	273	158
22	47	38	19	15	06	125	156	248	135
23	39	37	19	12	14	121	160	268	137
24	37	42	20	19	15	133	153	284	168
25	43	40	20	19	14	136	162	311	169
26	44	41	21	20	15	141	163	312	170
27	38	43	21	20	16	138	154	285	169

28	40	38	20	13	15	126	161	269	138
29	48	39	20	16	07	130	157	249	136
30	30	36	16	20	18	120	137	274	159
31	45	37	15	21	15	133	197	253	154
32	41	40	16	17	11	125	169	307	144
33	36	38	11	18	16	119	140	280	145
34	39	41	19	15	11	125	139	291	164
35	42	30	17	19	15	123	130	326	205
36	38	39	20	15	10	122	125	291	125
37	41	37	21	19	11	129	127	325	120
38	42	30	17	17	14	120	152	234	148
39	47	40	20	20	15	142	170	290	135
40	39	44	19	18	09	129	149	326	123
41	44	46	22	18	10	140	130	319	157
42	44	38	24	23	11	140	201	375	148
43	34	34	13	21	16	118	141	258	170
44	43	44	17	19	16	139	145	307	155
45	41	36	17	19	11	124	150	277	110
46	36	32	11	18	15	112	168	265	132
47	45	33	18	18	13	129	144	310	93
48	40	36	22	22	20	140	184	290	167
49	42	39	20	19	14	134	162	311	168
50	36	41	20	19	15	131	153	284	168
51	43	40	20	19	14	136	162	311	169
52	39	37	19	12	14	121	160	268	137
53	29	35	15	19	17	115	136	273	158
54	40	39	15	16	10	120	168	306	143
55	38	40	18	14	10	120	138	290	163
56	37	38	19	14	09	117	124	290	124
57	41	29	16	16	13	115	151	233	147
58	38	43	18	17	08	124	148	325	122
59	43	37	23	22	10	135	200	174	147

60	42	43	16	18	15	134	144	306	154
61	35	31	10	17	14	160	167	264	131
62	39	35	21	21	19	135	183	289	166
63	35	40	19	18	14	126	152	283	167
64	36	41	20	19	15	131	153	284	168
65	40	36	22	22	20	140	184	290	167
66	36	32	11	18	15	112	168	265	132
67	43	44	17	19	16	139	145	307	155
68	44	38	24	23	11	140	201	375	148
69	39	44	19	18	09	129	149	326	123
70	42	30	17	17	14	120	152	234	148
71	38	39	20	15	10	122	125	291	164
72	39	41	19	15	11	125	139	291	164
73	41	40	16	17	11	125	169	307	144
74	30	36	16	20	18	120	137	274	159
75	40	38	20	13	15	126	161	269	138
76	44	41	21	20	15	141	163	312	170
77	37	42	20	19	15	133	153	284	168
78	47	38	19	15	06	125	156	284	135
79	44	36	14	20	14	128	196	252	153
80	35	37	10	17	15	114	139	279	144
81	41	29	16	18	14	11	129	325	204
82	40	36	20	18	10	124	126	324	119
83	46	39	19	19	14	137	169	289	134
84	43	45	21	17	09	135	129	318	156
85	33	33	12	20	15	113	140	257	169
86	40	35	16	18	10	119	149	276	109
87	44	34	71	71	12	124	143	309	92
88	41	38	19	18	13	129	161	310	167
89	42	39	20	19	14	134	162	311	168
90	45	33	18	18	13	129	144	310	93
91	41	36	17	19	11	124	150	277	110

92	34	34	13	21	16	118	141	258	170
93	44	46	22	18	10	140	130	319	157
94	47	40	20	20	15	142	170	290	135
95	41	37	21	19	11	129	127	325	120
96	42	30	17	19	15	123	130	326	205
97	36	38	11	18	16	119	140	180	145
98	45	37	15	21	15	133	197	253	154
99	48	39	20	16	07	130	157	249	136
100	38	43	21	20	16	138	154	285	169
101	44	34	17	17	12	124	143	309	92
102	33	33	12	20	15	113	140	257	169
103	46	39	19	19	14	137	169	289	134
104	41	29	16	18	14	118	129	325	204
105	44	36	14	20	14	128	196	252	153
106	37	42	20	19	15	133	153	284	168
107	40	38	20	13	15	126	161	269	138
108	41	40	16	17	11	125	169	307	144
109	38	39	20	15	10	122	125	291	125
110	39	44	19	18	09	129	149	326	123
111	48	44	17	19	16	139	145	307	155
112	40	36	22	22	20	140	184	290	167
113	39	37	19	12	14	121	160	268	137
114	37	38	19	14	09	117	124	290	124
115	42	43	16	18	15	134	144	306	154
116	35	40	19	18	14	126	152	283	167
117	44	38	24	23	11	140	201	375	148
118	39	41	19	15	11	125	139	291	164
119	44	41	21	20	15	114	163	312	170
120	35	37	10	17	15	114	139	279	144
121	43	45	21	17	09	135	129	318	156
122	41	38	19	18	13	129	161	310	167
123	34	34	13	21	16	118	141	258	170

124	42	30	17	19	15	123	130	326	205
125	38	43	21	20	16	138	154	285	169
126	35	31	10	17	14	107	167	264	131
127	43	45	21	17	09	135	129	318	156
128	37	38	19	14	09	117	124	290	124
129	44	36	14	20	14	128	196	252	153
130	43	40	20	19	14	136	162	311	169
131	30	36	16	20	18	120	137	274	159
132	42	30	17	19	15	123	130	326	205
133	39	44	19	18	09	129	149	326	123
134	41	36	17	19	11	124	150	277	110
135	36	41	20	19	15	131	153	284	168
136	38	40	18	14	10	120	138	290	163
137	42	43	16	18	15	134	144	306	154
138	40	36	22	22	20	140	184	390	167
139	42	30	17	17	14	120	152	234	148
140	40	38	20	13	15	126	161	269	138
141	35	37	10	17	15	114	139	279	144
142	33	33	12	20	15	113	140	257	169
143	45	33	18	18	13	129	144	310	93
144	41	37	21	19	11	129	127	325	120
145	38	43	21	20	16	138	154	285	169
146	44	36	14	20	14	128	196	252	153
147	39	44	19	18	09	129	149	326	123
148	42	43	16	18	15	134	144	306	154
149	35	37	10	17	15	114	139	279	144
150	38	43	21	20	16	138	154	285	169

प्राथमिक शिक्षक पुरूष–ग्रामीण

क्रमांक	प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति						शिक्षक दक्षता प्राप्तांक	कार्य सन्तोष प्राप्तांक	विद्यालय वातावरण प्राप्तांक
	a	b	c	d	e	Total			
1	40	42	16	16	10	124	126	255	126
2	44	37	19	14	12	126	45	299	131
3	38	36	20	18	10	122	146	268	154
4	39	31	17	19	14	120	168	289	153
5	39	35	20	19	16	129	138	308	136
6	41	45	14	15	13	128	129	300	112
7	45	40	20	18	10	133	179	362	174
8	37	354	20	18	19	129	171	282	147
9	40	37	19	15	14	124	147	296	155
10	36	19	15	11	09	120	131	298	142
11	36	46	23	21	11	137	166	307	156
12	30	36	15	18	8	107	149	325	150
13	34	38	19	18	12	121	161	304	175
14	36	29	18	22	13	118	185	294	145
15	36	38	18	16	10	118	161	297	150
16	43	41	19	18	10	131	139	315	155
17	45	43	20	25	09	142	176	297	191
18	33	28	14	20	17	112	139	255	161
19	31	35	20	18	14	188	169	314	157
20	42	40	18	18	14	132	171	29‘1	127
21	35	32	12	17	10	106	148	307	136
22	40	45	22	20	11	106	148	307	136
23	37	39	18	18	06	118	160	311	175
24	39	38	19	19	12	127	155	300	152
25	38	39	18	18	13	126	157	302	154
26	39	40	19	19	14	131	158	303	155
27	40	39	20	20	13	132	156	301	153

28	38	40	19	19	07	123	161	312	176
29	41	46	23	21	12	143	170	318	169
30	36	33	13	18	11	111	149	308	137
31	43	41	19	19	15	137	172	292	128
32	32	36	21	19	15	123	170	315	158
33	34	29	15	21	18	117	140	256	162
34	46	44	21	26	10	147	176	298	192
35	44	42	20	19	11	136	140	316	156
36	37	39	19	17	11	123	162	298	151
37	37	30	19	23	14	123	186	295	146
38	35	39	20	19	13	126	162	305	176
39	31	37	16	19	9	112	150	326	151
40	37	47	24	22	12	142	167	308	157
41	37	50	16	12	10	125	132	299	143
42	41	37	20	16	15	129	152	297	156
43	38	36	21	19	20	134	176	283	148
44	46	41	21	19	11	138	180	363	175
45	42	46	15	16	14	133	130	301	113
46	40	36	21	20	17	134	139	309	137
47	40	32	18	20	15	125	169	290	154
48	39	37	21	19	11	127	147	269	155
49	45	38	20	15	13	131	146	300	132
50	41	43	17	17	11	129	127	156	127
51	38	39	18	18	13	126	157	302	154
52	37	39	18	18	06	118	160	311	175
53	35	32	12	17	10	106	148	307	136
54	31	35	20	18	14	118	169	314	157
55	45	43	20	25	09	142	176	297	191
56	36	38	18	16	10	118	161	297	150
57	34	38	19	18	12	121	161	304	175
58	36	46	23	21	11	137	166	307	156
59	40	36	19	15	14	124	147	296	155

60	45	40	20	18	10	133	179	362	174
61	39	35	20	19	16	129	138	308	136
62	38	36	20	18	10	122	146	268	154
63	40	42	16	16	10	124	126	255	126
64	41	43	17	17	11	129	127	256	127
65	39	37	21	19	11	127	147	269	155
66	40	36	21	20	17	134	139	309	137
67	46	41	21	19	11	138	180	363	175
68	41	37	20	16	15	129	152	297	156
69	37	47	24	22	12	142	167	308	157
70	35	39	20	19	13	126	162	305	176
71	37	39	19	17	11	123	162	298	151
72	46	44	21	26	10	147	176	298	151
73	32	36	21	19	15	123	170	315	158
74	36	33	13	18	11	111	149	308	137
75	38	40	19	19	07	123	161	312	176
76	39	38	19	19	12	127	155	300	152
77	40	45	22	20	11	138	169	317	168
78	42	40	18	18	14	132	171	291	127
79	33	28	14	20	17	112	139	255	161
80	43	41	19	18	10	131	139	315	155
81	36	29	18	22	13	118	185	294	145
82	30	36	15	18	08	107	149	325	150
83	36	49	15	11	09	120	131	298	142
84	37	35	20	18	19	129	171	282	147
85	41	45	14	15	13	128	129	300	112
86	39	31	17	19	14	120	168	289	153
87	44	37	19	14	12	126	145	299	131
88	45	38	20	15	13	131	146	300	132
89	40	32	18	20	15	125	169	290	154
90	42	46	15	16	14	133	130	301	133
91	38	36	21	19	20	134	176	283	148

92	37	16	16	12	10	121	132	299	143
93	31	37	16	19	09	112	150	326	151
94	37	30	19	23	14	123	186	295	146
95	44	42	20	19	11	136	140	316	156
96	34	29	15	21	18	117	140	256	162
97	43	41	19	19	15	137	172	292	128
98	41	46	23	21	12	143	170	292	128
99	40	39	20	20	13	132	156	301	153
100	40	32	18	20	15	125	169	290	154
101	44	37	19	14	12	126	145	299	131
102	39	17	19	14	12	120	168	289	153
103	41	45	14	15	13	128	129	300	112
104	37	35	20	18	‘19	129	171	282	147
105	36	49	15	11	09	120	131	298	142
106	30	36	15	18	08	107	149	325	150
107	36	29	18	22	13	118	185	294	145
108	43	41	19	18	10	131	139	315	155
109	33	28	14	20	17	112	139	255	16
110	42	40	18	18	14	132	171	291	127
111	40	45	22	20	11	138	169	317	168
112	39	38	19	19	12	127	155	300	152
113	39	40	19	19	14	131	158	303	155
114	38	40	19	20	08	125	161	312	176
115	36	33	13	18	11	111	149	308	137
116	32	36	21	19	15	123	170	315	158
117	46	44	21	26	10	147	176	298	192
118	37	39	19	17	11	123	162	298	151
119	35	39	20	19	13	126	162	305	176
120	37	47	24	22	12	142	167	308	157
121	41	37	20	16	15	129	152	297	156
122	46	41	21	19	11	138	180	363	175
123	40	36	21	20	17	134	139	309	137

124	39	37	21	19	11	127	147	269	155
125	41	43	17	17	11	129	127	256	127
126	37	39	18	18	06	118	160	311	175
127	31	35	20	18	14	118	169	314	157
128	36	38	18	16	12	120	161	297	150
129	36	46	23	21	11	137	166	307	156
130	45	40	20	18	10	133	179	362	174
131	38	36	20	17	11	122	146	268	154
132	41	43	17	17	11	129	127	256	127
133	40	36	21	20	17	134	139	309	137
134	41	37	20	16	15	129	152	297	156
135	35	39	20	19	13	126	162	305	176
136	46	44	21	26	10	147	176	298	192
137	36	33	13	18	11	111	149	308	137
138	39	38	19	19	12	127	155	300	152
139	42	40	18	18	14	132	171	291	127
140	43	41	19	18	10	131	139	315	155
141	30	36	15	18	08	107	149	325	150
142	37	35	20	18	19	129	171	282	147
143	39	31	17	19	14	120	168	289	153
144	45	38	20	15	13	131	146	300	132
145	42	46	15	16	14	133	130	301	113
145	42	46	15	16	14	133	130	301	133
146	37	45	16	12	10	120	132	299	143
147	37	30	19	23	14	123	186	295	146
148	34	29	15	21	18	117	140	265	162
149	41	46	23	21	12	143	170	318	169
150	40	32	18	20	15	125	169	290	154

प्राथमिक शिक्षक– महिला शहरी

क्रमांक	प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति						शिक्षक दक्षता प्राप्तांक	कार्य सन्तोष प्राप्तंक	विद्यालय वातावरण प्राप्तंक
	a	b	c	d	e	Total			
1	40	41	15	15	12	123	155	257	124
2	35	41	13	17	10	116	165	293	106
3	32	37	18	16	12	115	176	271	164
4	38	41	19	15	12	125	176	267	164
5	36	41	13	18	11	119	177	294	124
6	42	35	16	16	13	122	159	176	140
7	38	35	19	15	16	123	103	261	148
8	35	34	20	15	11	115	142	274	137
9	35	32	19	19	07	116	146	288	142
10	40	34	19	14	13	117	135	294	134
11	39	38	17	13	11	118	153	306	155
12	35	30	17	18	12	112	168	235	123
13	39	37	18	11	12	117	139	316	152
14	37	37	17	17	15	123	145	262	142
15	36	34	18	16	13	117	145	178	118
16	37	38	18	18	14	125	183	292	184
17	36	33	17	20	08	114	155	354	132
18	39	41	32	13	10	135	173	318	162
19	38	46	19	15	12	130	178	274	170
20	38	41	19	15	12	125	176	262	156
21	33	34	18	16	12	115	174	274	164
22	32	38	20	14	14	118	178	266	154
23	36	41	19	15	12	123	176	271	164
24	31	44	16	17	07	115	155	318	132
25	34	32	15	18	10	109	160	280	148
26	35	33	16	19	11	114	161	281	149
27	32	42	20	16	13	123	177	272	165

28	37	40	21	17	13	128	175	270	163
29	33	39	19	15	15	123	179	267	155
30	34	35	19	17	13	120	175	275	165
31	39	42	20	16	13	130	177	263	157
32	39	47	20	16	12	134	179	275	171
33	40	42	33	14	11	140	174	319	163
34	37	34	18	21	09	119	156	355	133
35	38	39	19	19	15	130	184	293	185
36	37	35	19	17	14	122	146	179	119
37	38	38	18	18	16	128	146	263	143
38	40	38	19	12	13	122	140	317	153
39	36	31	18	19	13	117	169	236	124
40	40	39	18	14	12	123	154	307	156
41	41	35	20	15	14	122	136	295	135
42	40	33	20	20	08	121	147	289	143
43	36	35	21	16	12	120	143	275	138
44	39	36	20	16	17	128	104	262	149
45	43	36	17	17	14	127	160	277	141
46	37	42	14	19	12	124	178	295	125
47	39	42	20	16	13	130	177	268	165
48	33	38	19	17	13	120	179	272	163
49	36	42	14	18	11	121	166	294	107
50	41	42	16	16	13	128	156	258	125
51	34	32	15	18	10	109	160	280	148
52	36	41	19	15	12	123	176	271	164
53	33	34	18	16	12	115	174	274	164
54	38	46	19	15	12	130	178	274	170
55	36	33	17	20	08	114	155	354	132
56	36	34	18	16	13	117	145	178	118
57	39	38	17	13	11	118	139	316	152
58	39	38	17	13	11	118	153	306	155
59	38	33	19	19	07	116	146	288	142

60	37	36	20	16	18	127	103	261	148
61	36	41	13	18	11	119	177	294	124
62	32	37	18	16	12	115	176	271	164
63	40	41	15	15	12	123	155	257	124
64	41	42	16	16	13	128	156	258	125
65	33	38	19	17	13	120	179	272	163
66	37	42	14	19	12	124	178	295	125
67	39	36	20	16	17	128	104	262	149
68	40	33	20	20	08	121	147	289	143
69	40	39	18	14	12	123	154	307	156
70	41	37	19	12	13	122	140	317	153
71	37	34	19	17	14	122	146	179	119
72	37	34	18	21	09	119	156	355	133
73	39	47	20	16	12	134	179	275	171
74	34	35	19	17	13	120	175	275	165
75	37	40	21	17	13	128	175	270	163
76	31	44	16	17	07	115	155	318	132
77	36	41	19	15	12	123	176	371	164
78	33	34	18	16	12	115	174	274	164
79	38	46	19	15	12	130	178	274	170
80	36	33	17	20	08	114	155	354	132
81	36	34	18	16	13	117	145	178	118
82	39	37	18	11	12	117	139	316	152
83	39	38	17	13	11	118	153	306	155
84	38	33	19	19	07	116	146	288	142
85	38	35	19	15	16	123	103	261	148
86	36	41	13	18	11	119	177	294	124
87	32	37	18	16	12	115	176	271	164
88	40	41	15	15	12	123	155	257	124
89	36	42	14	18	11	121	166	294	107
90	39	42	20	16	13	130	177	268	168
91	43	36	17	17	14	127	160	277	141

92	36	35	21	16	12	120	143	275	138
93	41	35	20	15	14	122	136	295	135
94	36	31	18	19	13	117	169	236	124
95	38	38	17	17	18	128	146	263	143
96	38	39	19	19	05	130	184	293	185
97	40	42	33	14	19	140	174	319	163
98	39	42	20	16	13	130	177	263	157
99	33	39	19	15	15	123	179	267	155
100	32	42	19	17	13	123	177	272	165
101	35	41	13	17	10	116	165	293	106
102	38	41	19	15	12	125	176	267	164
103	42	35	16	16	13	122	159	276	140
104	35	34	20	15	11	115	142	274	137
105	40	34	19	14	13	117	135	294	134
106	35	30	17	18	12	112	168	235	123
107	37	37	17	17	15	123	145	262	142
108	37	38	18	18	14	125	183	292	184
109	39	41	32	13	10	135	173	318	162
110	38	41	19	15	12	125	176	262	156
111	32	38	20	14	14	118	178	266	154
112	31	32	15	18	10	109	160	280	148
113	35	33	16	19	11	114	161	281	149
114	37	40	21	17	13	128	175	270	163
115	34	35	19	17	13	120	175	275	165
116	39	47	20	16	12	134	179	275	171
117	37	34	18	21	9	119	156	355	133
118	37	35	19	17	14	122	146	263	143
119	40	38	19	12	13	122	140	317	153
120	40	39	18	14	12	123	154	307	156
121	41	32	20	20	08	121	147	289	143
122	39	36	20	16	17	128	104	262	149
123	37	42	14	19	12	124	178	295	125

124	33	38	19	17	13	120	179	272	163
125	41	42	16	16	13	128	156	258	125
126	36	41	19	15	12	123	176	271	164
127	38	46	19	15	12	130	178	274	170
128	36	34	18	16	13	117	145	178	118
129	39	38	17	13	11	118	153	306	155
130	37	36	20	16	18	127	103	261	148
131	32	37	18	16	12	115	176	271	164
132	41	42	16	16	13	128	156	258	125
133	37	42	14	19	12	124	178	295	125
134	40	33	20	20	08	121	147	289	143
135	41	37	19	12	13	122	140	317	153
136	37	34	18	21	09	119	156	355	133
137	34	35	19	17	13	120	175	275	165
138	31	44	16	17	07	115	155	318	132
139	33	34	18	16	12	115	174	274	164
140	36	33	17	20	08	114	155	354	132
141	39	37	18	11	12	117	139	316	152
142	38	33	19	19	07	116	146	288	142
143	36	41	13	18	11	119	177	294	124
144	40	41	15	15	12	123	155	257	124
145	39	42	20	16	13	130	177	268	168
146	36	35	21	16	12	120	143	275	138
147	36	31	18	19	13	117	169	236	124
148	38	39	19	19	15	130	184	293	185
149	39	42	20	16	13	130	177	263	157
150	32	42	19	17	13	123	177	272	165

प्राथमिक शिक्षक– महिला ग्रामीण

क्रमांक	प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति						शिक्षक दक्षता प्राप्तंक	कार्य सन्तोष प्राप्तंक	विद्यालय वातावरण प्राप्तंक
	a	b	c	d	e	Total			
1	38	40	18	18	20	134	132	320	109
2	42	35	21	17	12	127	146	315	170
3	40	37	20	16	23	136	142	298	107
4	38	40	15	21	14	128	145	295	183
5	38	35	17	18	13	121	153	303	106
6	38	39	18	21	15	131	138	304	131
7	41	39	18	17	12	127	172	310	121
8	41	39	21	20	11	132	153	336	139
9	30	35	14	17	15	111	158	157	160
10	40	27	15	20	18	120	142	254	148
11	40	39	17	14	17	127	141	254	148
12	34	42	19	20	10	125	162	294	135
13	35	40	30	16	09	130	142	302	118
14	41	39	20	18	12	130	176	279	152
15	40	41	19	16	12	128	152	297	138
16	36	33	17	20	10	116	133	238	161
17	35	36	24	19	10	124	187	302	166
18	42	39	15	17	14	127	136	328	141
19	40	41	18	17	16	132	145	286	106
20	35	36	24	21	10	126	133	273	147
21	33	36	22	20	10	121	143	284	161
22	39	37	22	19	13	130	135	339	138
23	42	35	16	17	12	122	164	316	182
24	28	24	16	15	18	101	145	237	169
25	31	34	10	18	16	109	123	302	111
26	32	35	11	19	17	114	124	303	112
27	29	25	17	16	19	106	146	238	170

28	43	36	17	18	13	127	165	317	183
29	40	38	23	20	14	135	136	340	139
30	34	37	23	21	11	126	144	285	162
31	36	37	25	22	11	131	134	274	148
32	41	42	19	18	17	137	146	287	107
33	43	40	16	18	15	132	137	329	142
34	36	37	25	20	11	129	188	303	167
35	37	34	18	21	11	121	134	139	162
36	41	42	20	17	13	133	153	298	139
37	42	40	21	19	13	135	177	280	153
38	36	41	31	17	10	135	143	303	119
39	35	43	20	21	11	130	163	295	136
40	41	40	18	15	18	132	142	255	149
41	41	28	16	21	19	125	143	255	149
42	31	36	15	18	16	116	159	158	161
43	42	40	22	21	12	137	154	337	140
44	42	40	19	18	13	132	173	311	122
45	39	40	19	22	16	136	139	305	132
46	38	36	19	19	14	126	154	304	107
47	39	41	16	22	15	133	146	296	184
48	41	38	21	17	24	141	143	299	108
49	43	36	22	18	13	132	147	316	171
50	39	41	19	19	21	139	133	321	110
51	31	34	10	18	16	109	123	302	111
52	42	35	16	17	12	122	164	316	182
53	33	36	22	20	10	121	133	273	147
54	40	41	18	17	16	132	145	286	106
55	35	36	24	19	10	124	187	302	166
56	40	41	19	16	12	128	152	297	138
57	35	40	30	16	09	130	142	302	118
58	40	39	17	14	17	127	141	254	148
59	30	35	14	17	15	111	158	157	160

60	41	39	18	17	12	127	172	310	121
61	38	35	17	18	13	121	153	303	106
62	40	37	20	16	23	136	142	298	107
63	38	40	18	18	20	134	132	320	109
64	39	41	19	19	21	139	133	321	110
65	41	38	21	17	24	141	143	299	108
66	38	36	19	19	14	126	154	304	107
67	42	40	19	18	13	132	173	311	122
68	31	36	15	18	16	116	159	158	161
69	41	40	18	15	18	132	142	255	149
70	36	41	31	17	10	135	143	303	119
71	41	42	20	17	13	133	153	298	139
72	36	37	25	20	11	129	188	303	167
73	41	42	19	18	17	137	146	287	107
74	34	37	23	21	11	126	144	285	162
75	43	36	17	18	13	127	165	317	183
76	28	24	16	15	18	101	145	237	169
77	39	37	22	19	13	130	135	339	138
78	35	36	24	21	10	126	133	273	147
79	42	39	15	17	14	127	136	328	141
80	36	33	17	20	10	116	133	238	161
81	41	39	20	18	12	130	176	279	152
82	34	42	19	20	10	125	162	294	135
83	40	27	15	20	18	120	142	254	148
84	41	39	21	20	11	132	153	336	139
85	38	39	18	21	15	131	138	304	131
86	38	40	15	21	14	128	145	295	183
87	42	35	21	17	12	127	146	315	170
88	43	36	22	18	13	132	147	316	171
89	39	14	16	22	15	133	146	296	184
90	39	40	19	22	16	136	139	305	132
91	42	40	22	21	12	137	154	337	140

92	41	28	16	21	19	125	143	255	149
93	35	43	20	21	11	130	163	295	136
94	42	40	21	19	13	135	177	280	153
95	37	34	18	21	11	121	134	239	162
96	43	40	16	18	15	132	137	329	142
97	36	37	25	22	11	131	134	274	148
98	40	38	23	20	14	135	136	340	139
99	29	25	17	16	19	106	146	238	170
100	41	42	19	18	17	137	146	287	107
101	42	35	21	17	12	127	146	315	170
102	38	40	15	21	14	128	145	295	183
103	38	39	18	21	15	131	138	304	131
104	41	38	21	20	11	132	153	336	139
105	40	27	15	20	18	120	142	254	148
106	34	42	19	20	10	125	162	294	135
107	41	39	20	18	12	130	176	279	152
108	36	33	17	20	10	116	133	238	161
109	42	39	15	17	14	127	136	328	141
110	35	36	24	21	10	126	133	273	147
111	39	37	22	19	13	130	135	339	138
112	28	24	16	15	18	101	145	237	169
113	32	35	11	19	17	114	124	303	112
114	43	36	17	18	13	127	165	317	183
115	34	37	23	21	11	126	144	285	162
116	41	42	19	18	17	137	146	287	107
117	36	37	25	20	11	129	188	303	167
118	41	42	20	15	13	133	153	198	139
119	36	41	20	17	10	135	143	303	119
120	41	40	18	15	18	132	142	255	149
121	31	36	15	18	16	116	159	158	161
122	42	40	19	18	13	132	173	311	122
123	38	36	19	19	14	126	154	304	107

124	41	38	21	17	24	141	143	299	108
125	39	41	19	19	21	139	133	321	110
126	42	35	16	17	12	122	164	316	182
127	40	41	18	17	16	132	145	286	106
128	40	41	19	16	12	128	152	297	138
129	40	39	17	14	17	127	141	254	148
130	41	39	18	17	12	127	172	310	121
131	40	37	20	16	23	136	142	298	107
132	39	41	19	19	21	139	133	321	110
133	38	36	19	19	14	126	154	304	107
134	31	36	15	18	16	116	159	158	161
135	36	41	31	17	10	135	143	303	119
136	36	37	25	20	11	129	188	303	167
137	34	37	23	21	11	126	144	185	162
138	28	24	16	15	18	101	145	237	169
139	35	36	24	21	10	126	133	273	147
140	36	33	17	20	10	116	133	238	161
141	34	42	19	20	10	125	162	294	135
142	41	39	21	19	11	131	153	336	139
143	38	40	15	21	14	128	145	295	183
144	43	36	22	18	13	132	147	316	171
145	39	40	19	22	16	136	139	305	132
146	41	28	16	21	19	125	143	255	149
147	42	40	21	19	13	135	177	280	153
148	43	40	16	18	15	132	137	329	142
149	40	38	23	20	14	135	136	340	139
150	41	42	19	18	17	137	146	287	107